Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Hindustan Luta gaya

हिन्दुस्तान लूटा गया

kab, Kiyon aur kaisa

कब ! क्यों !! कैसे !!!

(मादक द्रव्य मद्यनिषेध या शराब)

★

Shandersain

लेखक

श्री चन्द्रसेन

प्रथमबार] अक्टूबर १९४० [मूल्य २।)

1940

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Hindustan Luta gaya

हिन्दुस्तान लूटा गया

kab, kiyon aur kausa

कब ! क्यों !! कैसे !!!

(मादक द्रव्य मद्यनिषेध या शराब)

★

shundersain

लेखक

श्री चन्द्रसेन

प्रथमबार] अक्टूबर १९४० [मूल्य २।)

1940

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Hindustan Luta gaya

हिन्दुस्तान लूटा गया

Kab, Kiyon aur kaisa

कब ! क्यों !! कैसे !!!

(मादक द्रव्य मद्यनिषेध या शराब)

★

Shundersain

लेखक

श्री चन्द्रसेन

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

★

प्रथमबार] अक्टूबर १९४० [मूल्य २।)

1940

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलने का पता—
अश्विनीकुमार दत्त,
प्रो०—हिन्दी साहित्य भण्डार,
७, चितपुरस्पर, कलकत्ता।

Acc: no: 12176
Rs 2-8-0

All rights reserved by the Author.
(Only Hindi version reserved by the Publisher)
(*Publisher*—Sahitya Prakashak Mandal, Chawari Bazar, Delhi.)
Pub:-

Printed by Pt. Khubchand Sharma, at Delhi Commercial Press, Delhi.
सिर्फ टाइटिल पेज फैडरल ट्रेड प्रेस, नया बाजार, देहली में छपा।
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विषय-सूची

अध्याय पहला

मद्य वर्णन

प्रकरण — पृष्ठ

१. मद्य कथा — १९
२. प्राचीन भारत में मद्यनिषेध — २३
३. बुद्ध की अहिंसा और मद्य — २६
४. मुस्लिम राज्यों में मद्यनिषेध — २९
५. ईस्ट इण्डिया कम्पनी और मद्य — ३३
६. डिस्टीलेरी सिस्टम से बढ़ती ३८
७. भारत सरकार की मद्यनीति — ४७
दुकानों की संख्या ४७

अध्याय दूसरा

मद्य दोष

प्रकरण — पृष्ठ

मद्य दोष — ५१
१. अल्कोहल का परीक्षण — ५५
२. जौ की शराब — ५८
माल्ट विधि ५८;
एक जौ में पदार्थ ६७
३. शराब बनाना — ६२
फेन का फारमूला ६३
४. शराब और डबलरोटी — ६४
रोटी और बीयर का भेद ६६;
कौन लोग कैसी शराब किससे बनाते हैं ६७
५. सड़न — ६८
६. अंगूरी शराब — ७०
अंगूर और वाइन के भेद ७०
अंगूरों के रस को बहुत दिन तक रखना ७१;
दूध को बहुत दिन तक रखना ७३
७. चुआना — ७५
८. अल्कोहल और पानी — ७८
९. अल्कोहल एक विष है — ८३
१०. अल्कोहल का प्रयोग — ८९
अल्कोहल और पानी के भेद ८९;

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण पृष्ठ

अल्कोहल के तीन फॉरमूले ९१; भोजन और अल्कोहल ९२

११. पानी भोजन है ९४

भोजन में पानी का अंश ९५

१२. प्यास ९९

१३. पचन पर अल्कोहल का प्रभाव १०२

पाचक रसों में पानी का अंश १०३; कौन भोजन कितने समय में पचकर रस बनता है १०५; किस शराब में कितना मादक द्रव्य है ११०;

१४. शरीर की गरमी पर अल्कोहल का प्रभाव १११

शक्कर और अल्कोहल ११२

१५. मस्तिष्क पर अल्कोहल का प्रभाव ११४

१६. माँस पेशियों पर अल्कोहल का प्रभाव ११७

१७. अल्कोहल और जीवन ११९

अध्याय तीसरा

भारत सरकार को शराब बेचने से लाभ

प्रकरण पृष्ठ

१. आय के ज़रिये १२०

२. शराब की खपत १२३

देशी शराब की खपत १२४; सन् १९०१ से १९१० तक का टैक्स १२५; समस्त भारत में आबकारी दुकानों की संख्या १२६;

३. आबकारी से आय १२७

आबकारी आय १८८५ से १९१९ तक १२८; आबकारी आय प्रतिवर्ष कितनी बढ़ी १३१; बीयर तथा अन्य शराबों से आय १३१;

अध्याय चौथा

अफीम

प्रकरण पृष्ठ

१. भारत में अफीम १३५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण पृष्ठ

उड़ीसा प्रान्त में
जागीरी ठिकानों में
अफीम की खपत
सन् १९२२-२३
१५२;
बिहार
और उड़ीसा प्रान्त
की खपत १५४
२. मालवी अफीम १६०
३. बरमा १६५
४. मलाया १६८
५. जावा १७५
६. चीन १७७
७. भारत में चेष्टा १७९
८. अफीम कर १८१
खपत सेरों में १८३
९. कोकीन १८४

अध्याय पांचवां

भांग, चरस, गांजा

प्रकरण पृष्ठ

१. भांग की पौद १८७
२. भांग आदि से आयकर १९०
३. भांग, गांजा, चरस
आदि की खपत १९२
४. शराब और अफीम,
भांग, गांजा, चरस की
दुकानों की संख्या १९४

अध्याय छठा

तम्बाखू

प्रकरण पृष्ठ

१. तम्बाखू वर्णन १९९

अध्याय सातवाँ

मांस

प्रकरण पृष्ठ

१. मांस निषेध २३०

अध्याय आठवां

चाय, कोको, कहवा, कॉफी

प्रकरण पृष्ठ

१. चाय २४५
२. कोको, कहवा, कॉफी २४७

अध्याय नवाँ

कांग्रेसी सरकारें और मद्यनिषेध कार्य

प्रकरण पृष्ठ

१. कांग्रेस कार्य २४८
२. शराबबन्दी के औद्योगिक
व आर्थिक पहलू २५३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Honourable F. M. Hubbard, District Judge of the Eighth Judicial District of Iowa, in passing sentence upon some liquor dealers for violation of the prohibitory laws of the State, said:

"While there are crimes known to the law which are punishable with greater severity, there are none which involve more of those qualities known as despicable meanness and audacity than the selling of intoxicating liquors. You who stand before the Court for sentence are in every moral sense murderers, and you are within the spirit, if not the letter, guilty of man-slaughter; for the law is that whosoever accelerates the death of a human being unlawfully is guilty of the crime. Your bloated victims upon the witness stand, who undoubtedly committed perjury to screen you from the law, not only abundantly testified that you are accelerating death, but that you are inducing men to commit still greater crimes than your own. You still maintain the appearance of respectability, but how morally leprous you are inwardly. The ruin, poverty, and idleness which you are inflicting upon this community declare as from the house-tops, that you are living in idleness and eating the bread of orphans watered with widows' tears; you are stealthily killing your victims and murdering the peace and industry of the community, and thereby converting happy, industrious homes into misery, poverty, and rags. Anxious wives and mothers watch and pray in tears nightly with desolate hearts for the coming home of your victims, whom you are luring with the wiles and smiles of the devil into midnight debauchery. You are persistent, defiant law-breakers, and shamelessly boast that in defiance of the law and moral sense of the community, you will continue in your wicked and criminal practices. It has, therefore, now become the imperative duty of this Court to let fall upon you so heavily the arm of the law that you shall either be driven from your nefarious traffic or ruined in your fortunes or wicked prosperity. You have become a stench to the nostrils of the community, and all good men are praying that you be speedly reformed or summarily destroyed. By the providence of God and the favour of this Court these prayers shall be speedily answered by signal and exact justice for your crimes."

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

FOREWARD

Prohibition Suits the genius of Indian Society, India will demand a true and complete account from all those who would venture to depart from the programme of Social purity.

I have faith, an undying faith in the ultimate triumph of Prohibition, and so have many, who are assosiated with this movement. And faith, after all, is the only worker of miracles.

—K. M. Munshi.

"मद्यनिषेध भारतीय समाज का आभूषण है, भारत उन सब व्यक्तियों को सही तौर पर परखेगा जो समाज की इस पवित्रता से स्वयं पृथक रहने का बहाना ढूंढ़ेंगे।

मुझे अटल विश्वास है कि मद्यनिषेध पूर्ण सफल होकर विजय प्राप्त करेगा, और ऐसी ही प्रत्येक सहयोगी की भी अभिलाषा है।"

—के० एम० मुन्शी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वक्तव्य

'मादकद्रव्य' उन पुण्य पुरुषों को सादर समर्पित है जिन्होंने महात्मा गांधी की इस चिर प्रतीक्षित योजना को कार्यरूप में परिणत करके अपनी मिनिस्टरी को अमर यश प्रदान किया। इस यश को केवल हम ही नहीं दे रहे हैं बल्कि वे असंख्य बच्चे और स्त्रियां दे रही हैं जिन्हें उनके पुरुषों ने उन्हें भुलाकर अब फिर अपनाया है और नशे के पैसे बचा कर घर का सामान खरीदा है। उस भयानक स्थिति की कल्पना तो करिये, जब शराबी नशे की खोज में अपनी पत्नी से जेवर छीन कर और गोद में आने को लालयित सुकुमार बच्चे को ठोकर में रौंद कर बदहवाश कल्लाल की दुकान में पहुँचता है और फिर वहां से साक्षात् क्रूर और हिंसक वन पशु बन कर घर में आ पड़ता है। हाय, उस घरमें कहां से चिराग जले, कहां से चूल्हा गरम हो, कहां से तन ढका जाय?

बम्बई में मद्य निषेध आरम्भ होने के बाद अधिकारियों ने वार्ली, नैगाँव, पोल, लालबाग इलाकों में जब बच्चों से पूछा कि अब तुम कैसे हो, तब बच्चों ने आनन्दविभोर होकर उत्तर दिया, "बहुत अच्छे, दूध मिलने लगा है, रोटी चुपड़ी जाने लगी हैं, स्कूल में पढ़ने जाने भी लगे हैं, क्योंकि इस महीने स्कूल की फीस पिता ने दे दी है।"

मद्य निषेध की सच्ची भावना से कोई इन्कार नहीं कर सकता। भारत के अतिरिक्त अमेरिका और जरमनी में भी इसके विरुद्ध आज्ञायें प्रचलित की गईं। भारत की मद्यनिषेध योजना को पूर्ण बनाने के लिये कई अँग्रेज मित्रों ने भी अथक परिश्रम किया है।

इस पुस्तक के लिखने का अभिप्राय मादकद्रव्यों के भयानक परिणामों को वैज्ञानिक ढंग पर प्रकट करना है। और मुझे आशा है कि देश के अब भी सुषुप्त शिकार इसे पढ़कर अपने जीवन को बचायेंगे।

आयुर्वेद मंदिर
देहली

—चन्द्रसेन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शराबबन्दी का अर्थ

बम्बई के आर्चविशप ने एक पत्र तथा अपने उस भाषण की प्रति मेरे पास भेजने की कृपा की है, जो उन्होंने शराबबन्दी के विरुद्ध रोटरी क्लब में दिया था। मैंने उन दोनों को उस आदर और ध्यान से पढ़ा है, जिसके कि आर्चविशप साहब अधिकारी हैं।

आर्चविशप का पत्र और भाषण पढ़ने से मुझे अपनी एक भूल मालूम हो गई। इसके लिये मैं ही मुख्य रूप से जिम्मेवार हूं। शराब के व्यापार के सम्बन्ध में बम्बई सरकार या अन्य प्रान्तीय कांग्रेसी सरकारें जो कदम उठा रही हैं, उसे शराबबन्दी का नाम देना गलत है। दर असल प्रान्तीय सरकारें जो कुछ कर रही हैं, वह शराब पीने पर रोक नहीं है। वे तो सिर्फ शराब की उन दूकानों को बन्द कर रही हैं, जो पूर्णतः उनके नियन्त्रण में हैं।

शराब के दूकानदारों को जो कानूनी संरक्षण प्राप्त है,वह सिर्फ एक साल के लिये है, जो उन्हें हर साल ठेके की बोली के समय दिया जाता है। इसके अलावा, उन्हें और कोई संरक्षण नहीं मिलता। हरेक ठेकेदार जानता है कि बहुत मुमकिन है कि अगले साल उसे ठेका न मिले। अगर उसके पास देशी शराब या ताड़ी है, तब भी बहुत मुमकिन है कि हर साल होने वाली ठेके की नीलामी में कोई उससे ज्यादा बोली बोल कर ठेका लेले। इसलिये शराब के ठेकेदारों का यह कहना कि उनके स्वार्थ नष्ट किये जा रहे हैं; गलत है। ठेकेदार लाइसैंस में सिर्फ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक साल के लिये बँधा हुआ है, इसके बाद के लिये नहीं, क्योंकि बहुत सम्भव है कि ठेका किसी दूसरे के पास चला जाये। और एक साल का स्वार्थ भी उन सख्त शर्तों के पालन पर निर्भर करता है, जिनमें कानून द्वारा वे बंधे हुये हैं। इसलिये मेरा दावा है कि योग्य अधिकारियों द्वारा बनाया गया शराब के ठेके बन्द करने का कानून सार्वजनिक हित के लिये एक सामान्य सहज उपाय है। सरकार जो कुछ करती है, वह महज इतना ही कि वह शराबी के उस प्रलोभन और सुविधा को हटा लेती है, जो उसकी राय में, सिवा औषधि-प्रयोग के हानिकर है।

विशप साहब कहते हैं कि "जो कानून शरीर, मन और हृदय पर दबाव डालकर इन तीनों की आस्था चाहता है, वह ज़रूर उचित व न्याययुक्त होना चाहिये अर्थात् लाखों आदमी उसे उचित कहें।"

मैं इस शर्त को लागू करने में कोई कठिनाई नहीं देखता, यद्यपि जिस दृष्टिकोण से मैं इस प्रश्न पर विचार करता हूं, उससे सरकार के लिये लाखों आदमियों के हृदय देखने की जरूरत नहीं। लेकिन मैं मानता हूँ कि संसार में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां शराब व अन्य मादक पदार्थों के सरकारी व्यापार पर पाबन्दी लगाने का करोड़ों आदमी समर्थन करेंगे। इसके लिये मत लेने की जरूरत ही नहीं है। इस कानून के समर्थकों का धारासभाओं में भारी बहुमत ही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। मैं आर्चविशप को इस महान सुधार के विगत इतिहास की याद दिलाना चाहता हूं। वृद्ध पितामह दादाभाई नौरोजी ने इसे शुरू किया था। १९२० में यह कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम का अङ्ग बन गया। राजनीतिक शक्ति के प्रभाव में कांग्रेस ने शराब तथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफीम की दूकानों पर धरना देने का कार्यक्रम बनाया। इस कार्यक्रम में हजारों स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। सभी समुदायों ने, जिनमें पारसी भी शामिल थे, धरने के कार्यक्रम में भाग लिया। असहयोग आन्दोलन के दिनों में भी अधिकारियों को प्रेरित कर शराबबन्दी का कानून बनवाने की कोशिश की गई। बिना किसी अपवाद के सब अधिकारियों ने इस कानून के न बनाने के लिये आर्थिक कठिनता की दलील दी। किसी ने यह नहीं कहा कि सरकार द्वारा जनता को शराब मिलने के व्यक्तिगत अधिकार में हस्तक्षेप करना अनुचित है। एक मंत्री ने तो यहां तक कहा था कि यदि आप शराबबन्दी से होने वाली आर्थिक हानि को पूरा करने में मुझे सहायता करें, तो मैं एकदम शराबबन्दी जारी कर दूंगा। यह तो आज सब जानते हैं कि आर्थिक दृष्टि के कारण ही इस सुधार को नहीं किया गया। दूसरे शब्दों में, सरकारी आमदनी बढ़ाने के लिये लोगों को शराब पीने का लालच दिया गया है। अफीम के व्यापार का काला इतिहास भी इसकी सत्यता का साक्षी है।

जो लोग व्यक्तिगत स्वाधीनता के नाम पर बातें करते हैं, वे हिन्दुस्तान को नहीं जानते। एक व्यक्ति को अपनी विषय-वासना तृप्त करने के लिए राज्य से वेश्या मुहय्या करने की सहूलियतें मांगने का जितना अधिकार है, उससे अधिक अधिकार किसी को शराब पीने की सहूलियतें मांगने का नहीं है। मुझे उम्मीद है कि जो लोग अपने शराब के मितपान पर गर्व करते हैं, वे इस उदाहरण पर बुरा नहीं मानेंगे। इस देश में हम बुराई को नियंत्रण में रखने के लिए कानून के अभ्यस्त नहीं हैं, जर्मनी जैसे देश में सतीत्व बेचने वाली वेश्याओं के मकानों के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाइसेंस लेना पड़ता है। मैं नहीं जानता कि उन देशों में किस बात पर अधिक नाराजगी प्रकट की जायगी—बदनाम औरतों के मकानों के लाइसेंस बन्द करने पर, या शराबखानों के लाइसेंस बन्द करने पर ? जब वहाँ की महिला अपने गौरव को समझने लगेगी, वह अपने सतीत्व को बेचने से इन्कार कर देगी। वे महिलाएं जिन्हें कि स्त्री जाति के सम्मान का ख़याल है, कानून-सम्मत व्यभिचार को उड़ा देने के लिए ज़मीन-आस्मान को हिला देंगी। तब क्या यह कहा जायगा कि वेश्यागृहों का लाइसेंस बन्द करने से वेश्याओं को हानि पहुँचेगी, क्योंकि उनके तथा उनके परिवार के गुज़ारे का एकमात्र साधन यही था ?

मेरी दलील यह है कि समाज-सुधारक तब तक अपने प्रचार में सफल नहीं हो सकते, जब तक कि लाइसेंसशुदा शराबखाने उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करते रहेंगे। यह भी एक विचित्र बात है कि तमाम हिन्दुस्तान में शराबबन्दी के बरखिलाफ़ सिर्फ पारसियों ने ही आवाज़ उठाई है। वे अपने संयम पर अभिमान करते हैं और जिसे वे अपने व्यक्तिगत स्वातन्त्रय पर आक्रमण कहते हैं, उस पर रोष प्रकट करते हैं। उनकी एक यह भी शिकायत है कि यूरोपियनों को शराब पीने की सहूलियतें दी गई हैं और इस तरह एशियावासियों के साथ भेदभाव का प्रतिबन्ध लगाया जाता है। मैं पहले ही पारसियों से अपील कर चुका हूँ कि वे अपने स्वभाव को कुछ ऊँचा उठायें और अमली सहयोग से इस महान् सुधार को आगे बढ़ायें। भेदभाव के प्रतिबन्ध के बारे में मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि ऐसा प्रतिबन्ध बाहर से लगाया जाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। इस मामले में तो हम एशियावासी अपनी इच्छा से ही यूरोपियनों की मर्यादा स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन उन्हें भी छूट का परवाना लेना पड़ेगा और नियमों का पाबन्द रहना पड़ेगा। पारसी मित्र यदि कहते हैं, तो उनके लिए उचित मार्ग यह है कि वे भेदभाव हटाने के लिए आन्दोलन करें,न कि खुद भी वैसी ही छूट पाने की कोशिश करें।

आर्चबिशप ने एक और दलील दी है। शराबबन्दी से जिस फायदे की कोशिश की जा रही है, क्या उससे शराबी के आगे से प्रलोभन हटाने का मूल्य ज्यादा तो नहीं देना पड़ता? अगर ज्यादा मूल्य देना पड़ता है, तो वह सुधार हानिकर है। उनकी यह दलील वज़न रखती है। लेकिन यह तो अपनी-अपनी राय का सवाल है कि फायदे से मूल्य अधिक है या कम? मैंने यह दिखाने की कोशिश की है कि तमाम आबकारी नीति का आधार आमदनी बढ़ाना है, न कि कोई भारी ज़रूरत पूरी करना।

मैं आर्चबिशप से आबकारी के प्रबन्ध का इतिहास पढ़ने की प्रार्थना करूँगा। वे यह देखेंगे कि असेम्बली व कौंसिल के सभी प्रगतिशील सदस्यों ने इस नीति की कठोर से कठोर निन्दा की है। अगर हम इस इतिहास को अपने सामने रखें, तो हमें मालूम होगा कि जिस महान् लाभ की हम कोशिश कर रहे हैं, उसके मुकाबले हम बहुत थोड़ा मूल्य दे रहे हैं। और यह साधारण-सा मूल्य भी न देना पड़े, अगर आर्चबिशप तथा दूसरे प्रभावशाली पादरी मित्र फौज पर होने वाले भारी खर्चे को, जिसे किसी भी तरह उचित नहीं ठहराया जा सकता, कम करने का व्यापक आन्दोलन करें, ताकि समस्त देश में शराबबन्दी जारी करने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए रुपया बचा सकें। यह एक ऐसा सुधार है, जो बहुत दिन पहले हो जाना चाहिए था। उन्हें बम्बई के मन्त्रियों को बधाई देनी चाहिए कि उन्होंने ऐसा टैक्स लगाया है कि जिसे आसानी से बरदाश्त किया जा सकता है। लेकिन मुझे इस बात में भी कोई शक नहीं है कि मंत्रिमंडल इस टैक्स को छोड़ देगा, अगर केन्द्रीय सरकार उसकी मदद करे। मन्त्रिमण्डल सुधार में भी देरी नहीं कर सकता, जबकि वह अकेला ही केन्द्रीय सरकार से टक्कर ले रहा है। सब दल सुधार की जरूरत को समझें और केन्द्रीय सरकार से न्याय की माँग करें, तब आर्चविशप साहब ने जो कठिनता बताई है, वह जरा भी न रहेगी।

डाक्टर गिल्डर से एक विचित्र प्रश्न किया गया है। आर्चविशप के साथ न्याय करने के लिये उनका सवाल उन्हीं के शब्दों में दे रहा हूं—"क्या वे (डा० गिल्डर) यह जानते हैं कि बहुत से ऐसे नशे भी हैं, जिनका पीने से कोई सम्बन्ध नहीं है? पियक्कड़पन बुद्धि को हर लेता है और घरों को नष्ट कर देता है। लेकिन झूठे आदर्शों का नशा सारी जातियों और संसार को तबाह कर रहा है। फिर क्या डा० गिल्डर यह भी मानते हैं कि ऐसा नशा ज्यादा नुकसानदेह और छुतहे रोगों की तरह ज्यादा फैलने वाला है? वे राष्ट्रों का आधुनिक इतिहास जानते हैं और इसलिये इससे इन्कार शायद ही करें। तब क्या वे यह बतायेंगे कि क्या भारतवर्ष झूठे आदर्शों के नशे की छूत से सर्वथा मुक्त है?"

इसका अर्थ यह हुआ कि सरकार अगर शराब की दूकानों के लाइसेंस को खत्म कर देने के अपने असंदिग्ध अधिकार का प्रयोग करती है, तो यह भी एक झूठा आदर्श है। इससे भी आदमी मदोन्मत्त हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाता है और डा० गिल्डर भी इस नशे के शिकार हैं ! यह ठीक है कि संसार में सब कुछ सम्भव है, लेकिन मैं यह कहने का साहस करता हूं कि पिछली आधी सदी से राष्ट्र शराबबन्दी की जो पुकार कर रहा है, उसका आधार झूठा, मादक और छूत की बीमारियों की तरह फैलने वाला आदर्श नहीं हो सकता। जो आदर्श झूठा, मादक और छूतहा है, वह कभी अस्थायी नहीं हो सकता, वह हमेशा स्थायी ही होगा।

भाषण के अन्तिम अंश में मुझे सम्बोधन करके एक सवाल पूछा गया है। करीब छः पंक्तियों में ऐसे सुझाव पेश किये हैं, जो असली सवालों को छूते ही नहीं हैं। दूसरे सुझावों के साथ आर्चबिशप ने एक यह भी सुझाव पेश किया है कि शराबबन्दी के समर्थक इसे एक सम्भव मार्ग न कहकर "एकमात्र सम्भव धर्म मानते हैं।" किसी ने भी शराब-बन्दी को धर्म नहीं कहा। यह प्रस्तावना बांधकर आप कहते हैं कि—"मुझे आशा है कि धर्म और सत्य के ध्येय के प्रवर्तक इस प्रश्न पर बुरा न मानेंगे। क्या अब भी उन्हें यह निश्चय है कि सब धर्म सच्चे हैं ?" अगर किसी और शख्स ने यह सवाल किया होता तो मैं उसे माफ न करता और जवाब देने की जरूरत भी न समझता। लेकिन बम्बई के लाटपादरी जैसे कार्य-व्यस्त प्रबन्धकर्त्ता से मैं यह उम्मीद नहीं कर सकता कि वे मुझ जैसे व्यक्ति जो कुछ कहते हैं, वह सब अच्छी तरह पढ़ेंगे या किसी उद्धरण की सत्यता जानने की कोशिश करेंगे। मैंने जो कुछ कहा है, उससे मेल खाते हुये उनको यह सवाल करना चाहिये था कि—"क्या गांधी को अब भी विश्वास है कि इस दुनियां के तमाम बड़े धर्म एक समान सच्चे हैं ?" इस संशोधित प्रश्न का मेरा उत्तर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यही होता कि "हां, निश्चय रूप से।" आर्चबिशप के लेख के समस्त विषय के साथ अकेला यह सवाल बिलकुल मेल नहीं खाता।

उनके पत्र में एक वाक्य है, जिसने मुझे कुछ चिन्ता में डाल दिया है। "पिछले कुछ महीनों ने मुझे क़ायल कर दिया है कि बम्बई में पुण्य कार्यों को एक जबर्दस्त धक्का पहुँचने वाला है।"

लाटपादरी की ये सब धारणायें भी, मेरा खयाल है, जैसा कि मैं सिद्ध कर चुका हूं, असिद्ध कल्पनाओं पर आश्रित हैं। मैं उनके इस आरोप का प्रमाण चाहता हूं। यदि पुण्यकर्मों को दरअसल धक्का पहुंचाये जाने की बात है, जैसाकि कहा गया है, तो मैं उनसे निवेदन करूंगा कि वे मंत्रियों के सामने इसके प्रमाण पेश करें। मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि वे जल्दी ही गलतियों को सुधार लेंगे।

आर्चबिशप के पत्र का आखिरी पैराग्राफ उनके उच्च पद के बिलकुल योग्य है। सिर्फ उसमें एक कमी है कि उन्होंने अपने सहयोग को शर्तों के साथ बाँध दिया है। वे अपने साथियों और शिष्यों के साथ बगैर किसी शर्त के पूर्ण शराबबन्दी के समर्थक हो जायें और शराबबंदी के इस पुण्यकर्म में हमारी सहायता करें। इस तरह वे कानून बनाने वालों के काम को हलका कर देंगे और इस देश में, जहां लाखों मूक भारतीयों का अन्तःकरण शराबबन्दी के पक्ष में है और जो देश दरअसल शराबबन्दी का अधिकारी है, शराब के व्यापार को नष्ट करने में सहायता देंगे।

२४ जून १९३९
हरिजन से,

—मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहला खण्ड

3.10.67

7/12/2006

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय पहला

मद्य वर्णन

प्रकरण १

मद्य कथा

बौद्ध ग्रन्थों में एक मद्य कथा इस प्रकार वर्णित है:—

एक दिन प्रभु संसार के सब जीवों पर दृष्टिपात कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक राजा जिसका नाम सर्वमित्र है खूब मद्य सेवन कर रहा है। उसके साथ उसके मन्त्रिगण और प्रजाजन भी मद्य के प्याले कण्ठ से उतार रहे हैं और महा पापाचार हो रहा है। प्रभु ने कहा, हाय! हाय!! इन मनुष्यों पर यह कैसा अभिशाप है! मद्य पीने में तो मधुर है परन्तु इसका परिणाम कैसा भयानक है! इन सब का विवेक नष्ट हो गया है, मुझे यह अनाचार क्यों दीखा! यदि यह राजा सुधर जाय तो शेष प्रजाजन भी सुधर जायेंगे।

ऐसा विचार कर प्रभु ने ब्राह्मण का रूप धारण किया। उनका रंग स्वर्ण की भांति दीप उठा, उन्होंने वल्कल वसन और मृगछाला शरीर पर परिधान किये और एक सुराही में मद्य भर कर अपने कंधे पर लटका ली। इस भेष में वे सर्वमित्र के सम्मुख दृष्टिगोचर हुए। उस समय राजा अपने दरबारियों के साथ मद्य चर्चा में लीन था, उन सबने प्रभु के तेज को देख कर उन्हें नतजानु हो करबद्ध प्रणाम किया। प्रभु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ने जलद गंभीर स्वर में कहा, "देखो, पुष्पों से आच्छादित इस सुराही में ऊपर तक सुगन्धित मधुर मद्य भरी हुई है, तुम में से कौन इसका ख़रीदार है? यह सुराही कण्ठहार की भाँति सुसज्जित है, देखो तो, कैसी प्रिय है। तुममें से बताओ कौन इसका मूल्य दे सकता है?"

राजा के नेत्र उस सुराही पर अटक गये, उसने करबद्ध हो प्रभु से कहा, 'आप प्रभात् के सूर्य की नाईं प्रतीत हो रहे हैं, पूर्ण चन्द्रमा की नाईं आपकी शोभा है, और आपका दिव्य वेश मुनियों जैसा है। आपको हम किस नाम से सम्बोधित करें?'

प्रभु ने उत्तर दिया, 'थोड़ी देर बाद तुम मुझे जान जाओगे कि मैं कौन हूं, परन्तु पहले मुझसे इस सुराही के खरीदने का सौदा करो। कम से कम तुम तो परलोक की व्याधियों और कष्टों से नहीं डरते होगे।'

राजा ने निवेदन किया, "श्रीमान् की सभी बातें अद्भुत हैं, मैंने आज से पहले ऐसा व्यवहार कभी नहीं देखा। अपनी वस्तु के दोषों को कोई प्रकट नहीं करता। हे देव, कहिये इस सुराही में क्या पदार्थ है और आप इसे बेचने का नाट्य क्यों कर रहे हैं?"

प्रभु बोले, 'सुनो, राजन्! इसमें न जल है, न मेघों की अमृत बूंदें हैं, न यह किसी पवित्र स्रोत की पुनीत धारा है, न इसमें सुगन्धित पुष्पों का सार मधु है, न पारदर्शी घृत है, और न ही दूध है जो शरद चन्द्र किरणों की मधुरिमा से युक्त हो। नहीं, नहीं इस सुराही में पिशाचिनी मद्य है। इस मद्य के गुण सुनो: जो इसका पान करेगा उसे अपनी सुध-बुध न रहेगी, वह नशे में मतवाला होकर भोजन के बदले विष्ठा भी खा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकेगा। ऐसी यह मद्य है, इसे खरीद लो, इतनी निकृष्ट यह सुराही बिक्री ही के लिये है।

इस पदार्थ में तुम्हारा समस्त ज्ञान और विवेक नष्ट कर देने की शक्ति है, जिससे तुम अपनी विचारधारा पर अधिकार न रख कर एक वनपशु की भाँति व्यवहार कर सको। तुम्हारे शत्रु तुम्हारी दशा की हसी उड़ायेंगे। तुम इसे पीकर खूब नाच भी सकते हो, गा भी सकते हो। यह मद्य अवश्य तुम्हारे खरीदने योग्य है। इसमें एक भी अच्छे गुण नहीं हैं।

इसके पीने से तुम्हारी लाज भावना जाती रहेगी। तुम नंगे भी रह सकते हो। लोगों का समुदाय तुम पर थूके भी तब भी तुम्हें प्रतीत न होगा। वे तुम पर गोबर, कीचड़, कंकर पत्थर उछालें तब भी तुम न जान सकोगे। ऐसी मद्य को मैं तुम्हारे पास बेचने के लिये लाया हूँ।

जो स्त्री इसका सेवन करेगी, वह मदान्ध होकर अपने माता पिता को रस्सियों से बांध कर और कुवेर सदृश पति को भी ठुकरा कर पतन के गढ़े में प्रसन्नता से जा गिरेगी। ऐसी यह मद्य है।

इसने अनेक सम्पन्न परिवारों को नष्ट किया है, सुन्दर स्वर्ण शरीरों को चिताओं पर जला कर भस्म किया है, राजमहल और सम्राटों को धूल में मिलाकर श्वान समान पददलित किया है फिर भी इसकी तृष्णा नहीं बुझती। ऐसी प्रलयकारी यह मद्य है।

इसे जिह्वा पर रखते ही मन मलिन हो जाता है, जीभ ऐंठ जाती है। खूब हंसो, खूब बको, कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। उसमें असत्य भाषण करने का साहस आ जाता है, वह सत्य को असत्य और असत्य को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्य समझने लगता है। इस मदान्ध करने वाली वस्तु के स्पर्श मात्र से ही पाप लगता है, बुद्धि मलिन होती है, कष्ट और व्याधि बढ़ती हैं। जो समस्त अपराधों की जननी है, जो उज्ज्वल मन का भयानक अंधकार हैं, जिसकी तीक्ष्ण ज्वाला शीतल हृदय पर सदैव धधक धधक कर दहकती रहती है। जो इसके प्रभाव में होकर अपने माता पिता, स्त्री, भगिनी, भ्राता और बच्चों का हंसते २ वध कर सकता है, ऐसी यह मद्य है। हे प्रजा के राजा, यह पेय तुम्हारे प्रतापी कण्ठ से नीचे उतरने योग्य हैं तुम इसे खरीद कर पान करो।

इस मद्य को ज़रा देखो तो, इसका माणिक की भाँति हल्का लाल रंग है। सुन्दरियों की उंगलियों का स्पर्श पाते ही इसकी मादकता और भी तीव्र हो उठती है। इसे पीकर मनुष्य पशु बन जाता है, यही नर्क है।"

प्रभु ने मद्य का यह बखान करके चारों ओर देखा। सब स्तब्ध थे। उस नीरव दरबार में एकाएक गर्जन हुआ, राजा ने उठकर अपने मद्य पात्रों को बड़े वेग से दीवार से टकरा कर चूर चूर कर डाला। और 'हाय ! पिशाचनी, मायावयी, मद्य, तू जा। जा। मुझे छोड़।' कह कर प्रभु के चरणों में गिर पड़े।

12176

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण २

प्राचीन भारत में मद्यनिषेध

शुक्राचार्य पहिले व्यक्ति थे जिन्होंने मद्यनिषेध की आवाज़ उठाई थी। मनु ने मद्यनिषेध के लिये अत्यन्त कठोर नियम बनाये थे। उनका कहना था कि किसी भी राजा के राज्य में शराबी होना भयंकर कलंक है। जो शराब पीते थे उन्हें उसका त्याग करना पड़ता था। उनके सिर पर एक तिकोनी टोपी रहती थी जिससे उन्हें पहचाना जा सकता था। वे जब तक प्रायश्चित नहीं कर लेते थे उन्हें समाज और मित्रों से बहिष्कृत रखा जाता था। वे कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं कर सकते थे। मनु को इतनी ही दण्ड व्यवस्था से सन्तोष न था। जो स्त्री शराब पीती थी वह गृहस्थी के पद से च्युत कर दी जाती थी, उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका एक भी मृतकर्म नहीं किया जा सकता था। मृत्यु समय ब्राह्मण उसे श्राप देते थे कि तू अगले जन्म में गीदड़ अथवा अन्य किसी नीच पशु योनि में जन्म ले। जन्म न ले तो नर्क में पड़ी सड़ती रहे। मनु ने इन नियमों को कागज पर लिख कर और विधान बना कर ही नहीं छोड़ दिया बल्कि तत्परता से पालन कराया। यदि किसी विद्यार्थी को शराबी अपने हाथ से छूकर भोजन की भिक्षा दे देता था तो विद्यार्थी को वह भोजन खाना वर्जित था, उसके खा लेने पर उसे दण्डित किया जाता है। यदि किसी कल्लाल से ऋण धन लेना होता था तो उससे शराब की बिक्री का रुपया नहीं लिया जाता था, उस रुपये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को छू लेने पर भी दण्ड मिलता था। मनु देव पूजा में सोमरस आदि मद्य-पदार्थों के अर्चन को भी अपराध समझते थे। इसलिये सोमरस का बेचने वाला नीची श्रेणी में (शूद्रों में) गिना जाने लगा।

मनु के बाद अपस्तम्ब और गौतम ने भी मद्यनिषेध के लिये कठोर से कठोर नियम बनाये थे। अपस्तम्ब ने तो यह घोषणा कर दी थी कि तमाम मादक द्रव्यों का पीना वर्जित है। और जो कोई भी शराब पियेगा उसका एकमात्र प्रायश्चित यही है कि वह इतनी अधिक गरमागरम शराब पिये कि पीते पीते उसका प्राणान्त हो जाय। गौतम का सिद्धान्त था कि एक शराबी ब्राह्मण शराब पीने के पाप से केवल मृत्यु के बाद ही मुक्त हो सकता है। शराबी को शराब का त्याग करके प्रायश्चित करना पड़ता था जिसमें उसे पहले तीन दिन तक गरम गरम दूध, गरम घी और गरम पानी पीना पड़ता था। उसे साँस भी गरम हवा में लेना पड़ता था।

मनु ने लोगों के इस अन्धविश्वास को कि मद्य अर्चन से देवता प्रसन्न होते हैं अथवा हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थ मादक द्रव्यों के पीने का निषेध नहीं करते हैं दूर करने की बहुत चेष्टा की थी। उन्होंने दृढ़ता-पूर्वक मद्य व्यसन को बुरा कहा।

प्राचीन काल में दस प्रकार की शराबों का वर्णन है जो इन पदार्थों से बनाई जाती थीं:—(१) खाँड (२) महुआ के खिले हुये फूल (३) आटा (४) राब, शीरा (५) टंका वृक्ष के फल (६) जुजुबे वृक्ष के फल (७) कारागुरा वृक्ष के फल (८) रोटफल वृक्ष के फल (९) अंगूर (१०) नारियल वृक्ष का दूध।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुलस्त्य ऋषि इन नामों से पृथक बारह नाम और गिनाते हैं। (१) पनस मद्य। इसके बनाने की बिधि मत्स्यसुक तन्त्र में लिखी है, कच्चे पनासा को एक पात्र में रख कर नित्य कच्चे दूध की धार उस पर डालो, उसमें थोड़ा कच्चा माँस बारीक करके प्रति तीसरे दिन मिलाते जाओ। इसमें भांग की हरी पत्तियां भी डालो। खाने का चूना बुरको। और जब यह भली भांति सड़ जाय तब छान कर सुराहियों में भर कर रक्खो। (२) मधुका। शहद से बनती थी। (३) तला। ताड़ से बनती थी। (४) ऐत्वा (५) सैरा। काली मिर्च से बनती थी। (६) आरिष्ठ (७) सुरा, वरूणी, पैष्टी आदि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ३

बुद्ध की अहिंसा और मद्य

बौद्ध काल से पथम ब्राह्मणों का सर्वत्र मान था। वे जैसा कहते थे राजा रंक सभी उसे मानते थे। वे यज्ञों में पशु बलि और मद्य का भी उपयोग करते थे। बुद्ध ने हिंसावृत्ति को बुरा बताया। उसने मद्यपान को दोष कहा। उसके असंख्य शिष्यों ने इन आज्ञाओं को शिरोधार्य कर के उनका प्रचार किया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासन में मांस खाना, मद्य पीना, बुरे आचरण करना, असत्य बोलना अपराध घोषित कर दिये थे।

कौटिल्य ने मद्यपान की दुकानों पर उत्तम स्वादिष्ट भोजन रखवा दिये। जब कोई व्यक्ति मदिरालय में पहुंचता था तो उसे पहले सुगन्धित फूलों के बीच में सजा कर भोजन पात्र पेश किया जाता था। ये भोजन प्रत्येक ऋतु के अनुसार अलग २ भांति के होते थे, और इनका मूल्य बहुत ही सस्ता होता था। वह व्यक्ति इस पात्र को ही ग्रहण करता था और शराब का व्यसन उससे छूटता जाता था। ब्राह्मणों को तो मद्य छूने में भी दण्ड दिया जाता था। जो धनिक व्यक्ति शराब की दुकान पर आता था, उसकी सम्पत्ति, उसके कण्ठहार, कुण्डल, अंगूठी आदि आभूषणों की जांच की जाती थी। यदि वह चोरी की सिद्ध होती तो दुकानदार को भी उस आभूषण के मूल्य के बराबर अर्थ दण्ड दिया जाता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्राट अशोक ने चन्द्रगुप्त के कार्य को पूर्ण रूप से पूरा किया। वह स्वयं भी मद्य पीने वालों की निगरानी रखता था। उसने अपनी राजसत्ता का प्रयोग बौद्ध धर्म के नियमों को पालन कराने में किया। उसने अपने शासन के तीस वर्षों में मद्य और मांस का बहुत कठोरता से दमन किया। आज हिन्दुओं में जो इतनी शुद्धता और पवित्रता देखने में आती है यह उसी का परिणाम है। यह सुधार इतनी दृढ़ता से किया गया था कि अशोक के बाद सैकड़ों वर्ष तक भी मद्य और मांस व्यापक नहीं हो सके। जब सन ३९९ ईस्वी में प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान भारत में आया तब उसने बहुत प्रसन्न होकर अपनी यात्रा में यह लिखा है कि इस देश के निवासी न जीव हत्या करते हैं न मद्य अथवा मादक पदार्थ का सेवन करते हैं। वे मृत जीवों का व्यवसाय भी नहीं करते। मद्य की कोई दुकान मुझे नहीं दीखी। दूसरा प्रसिद्ध चीनी यात्री हुआनस्याँग भारत में सन् ६३० में आया था और १६ वर्ष तक यहां रहा, अपनी यात्रा में लिखता है कि मैंने राजा हर्ष से लेकर साधारण किसान तक के जीवन का समीप से अध्ययन किया है, मैंने सबको शुद्ध पवित्र और मितव्ययी पाया। यह सब बुद्ध के अहिंसा धर्म का प्रताप था।

बुद्ध ने कहा कि वेश्या और सुरापान दोनों ही अप्रिय हैं, दोनों ही त्याज्य हैं। वेश्या धन का और सुरा परिवार का हरण करके मनुष्य को ऐसा बना देती है कि उसका मूल्य शून्य जितना भी नहीं रह जाता। मनुष्य समाज के कल्याण के लिये नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से इस अभिशाप का अन्त करना ही चाहिये। संसार में यह मनुष्य मात्र का प्रसिद्ध शत्रु है जो प्रलोभन का हेतु है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनुष्यों तुम, सिंह के सम्मुख जाते भयभीत न होता—वह पराक्रम की परीक्षा है, तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना—वह बलिदान की कसौटी है, तुम पर्वत शिखर से पाताल में कूद पड़ने से भयभीत न होना—वह तप की साधना है, तुम दहकती ज्वालाओं से विचलित न होना—वह स्वर्ण परीक्षा है; पर सुरा देवी से सदैव भयभीत रहना, क्योंकि यह पाप और अनाचारों की जननी है।

जिस राजा के राज्य में सुरा देवी आदर प्राप्त करेगी वह राज्य काल वेदि पर नष्ट होगा। वहां न औषधि उपजेंगी, न अनाज होगा, न वृष्टि होगी। यह महा हिंसा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ४

मुस्लिम राज्यों में मद्यनिषेध

अब से हज़ार वर्ष प्रथम नवीं शताब्दी में अरब का प्रख्यात सौदागर सुलेमान जब भारत में आया तो उसने देखा कि भारत में कहीं भी शराब की दुकान नहीं है। उसने यह बात बड़े आश्चर्य से अपने यात्रा विवरण में लिखी है। मुग़ल सम्राट औरंगजेब के समय में प्रसिद्ध फ्रांसीसी डाक्टर बर्नियर ने, जो औरंगज़ेब के दरबार में बहुत दिन रहा था, स्पष्ट लिखा है कि दिल्ली में शराब की एक भी दुकान नहीं थी।

बादशाह जहांगीर ने शराब के विरुद्ध घोषणाऐं प्रकटित की थीं। पहला योरोपियन यात्री वास्कोडिगामा जब भारतीय तट पर जहाज से उतरा तब उसने भी भारत को शराब से रहित पाया।

अलाउद्दीन ख़िलजी को एक दिन अपने पापों, दुष्कर्मों और क्रूरता पर इतना पश्चाताप हुआ कि उसने इन सब की जड़ को शराब समझा। वह बहुत शराब पीता था। उसने तुरन्त ही सेवकों को आज्ञा दी कि मेरी शराब की सुराही लाओ। सुराही सामने आने पर उसने बड़े क्रोध से उसे ज़मीन पर दे मारा। इसके बाद उसने महल के तमाम क़ीमती प्याले और सुराहियों को मंगवाकर अपने सामने तोड़ डालने की आज्ञा दी। इतिहासकार लिखता है कि बदायूं दरवाज़े पर कीमती और लज़ीज़ शराब को बहा दिया गया और बर्तनों को तोड़ फोड़कर नष्ट कर दिया गया। उस स्थान में ऐसी कीचड़ हो गई जैसे कि मेंह बरसने के बाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो जाती है। वहीं पर बड़े २ गड्ढे खोदे गये और शराब पीने वालों को उनमें गाड़ दिया गया। उन पर ऐसी क्रूरता की गई कि बहुत से तो तुरन्त मर गये। इस घटना से लोगों ने शराब पीनी छोड़ दी।

अकबर ने शराब के विरुद्ध आदेश कर दिये थे। कुरान में शराब पीने की आज्ञा नहीं है हिन्दू, पारसी, ईसाई सभी की धर्म पुस्तकों में शराब की निन्दा लिखी है। जिस प्रकार शराबी मनुष्य हिन्दु धर्म में द्विज नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार शराबी मुसलमान शरअ की रू से मुसलमान नहीं कहा जा सकता। मुग़ल सम्राट औरंगजेब के समय में, प्रसिद्ध फ्रांसीसी डाक्टर वर्नियर ने जो औरंगजेब के दरबार में बहुत दिन रहा था, स्पष्ट लिखा है कि दिल्ली में शराब की एक भी दुकान न थी। वह लिखता है, 'मदिरा' जो हमारे यहाँ भोजन का प्रधान अंग है, दिल्ली की किसी भी दुकान में नहीं मिलती। जो मदिरा यहाँ देसी अंगूर की बन सकती है, वह भी नहीं मिलती; क्योंकि मुसलमानों की कुरान और हिन्दुओं के शास्त्रों में उसका पीना वर्जित है। मुग़ल राज्य में भी जो मदिरा शीराज़ वा कनारी टापू से आती है, अच्छी होती है। शीराज़ी मदिरा ईरान से खुश्की के रास्ते—'बन्दर अब्बास' और वहाँ से जहाज द्वारा सूरत में पहुंचती और फिर वहां से दिल्ली आती है। शीराज से दिल्ली तक मदिरा आने में कई दिन लगते हैं। कनारी टापू से मदिरा सूरत होती हुई दिल्ली आती है। पर यह दोनों मदिरायें इतनी मंहगी होती हैं कि इनका मूल्य ही इन्हें बदमज़ा कर देता है। एक शीशी पन्द्रह या अठारह रुपये में आती है। जो मदिरा इस देश में बनती है, जिसे ये लोग 'अर्क' कहते हैं वह बहुत ही तेज़ होती है। यह भभके से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खींचकर गुड़ से बनाई जाती है और बाज़ार में नहीं बिकने पाती। धर्म के विरुद्ध होने के कारण अंग्रेजों व ईसाइयों के अतिरिक्त इसे कोई नहीं पी सकता। यह अर्क ठीक वैसा ही है जैसा कि पोलैण्ड के लोग अनाज से बनाते हैं और जिसे परिमाण से ज़रा भी अधिक पी जाने से मनुष्य बीमार पड़ जाता है। समझदार आदमी तो यहां सादा पानी पियेगा, या नीबू का शरबत, जो यहां सहज़ ही मिल जाता है और जो हानिकारक नहीं होता। इस गर्म देश में लोगों को मदिरा की आवश्यकता नहीं होती। मदिरा न पीने और बराबर पसीने आते रहने के कारण यहां के लोग सर्दी, बुखार, पीठ का दर्द आदि अनेक रोगों से बचे रहते हैं।

मुग़लों के राज्य का पतन कुछ बादशाहों की बढ़ती शराबपरस्ती ही थी! इतिहास में इसकी एक झलक मिलती है:—बहादुरशाह के पोते मुहम्मदशाह दिल्ली के तख़्त पर राज्य करते थे। यह वह समय था जबकि नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया, वह पश्चिम के मार्ग से भारत के प्रान्तों को लूटता हुआ दिल्ली तक आ धमका। उसने दिल्ली के निकट पहुंच कर बादशाह को लिखा, 'दो करोड़ रुपये दो वरना दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दूंगा।'

जब यह दूत दरबार में पहुंचा तो बादशाह शराब पी रहे थे और शेरें तथा गजलें गाई जा रही थीं। बादशाह स्वयं अपनी कवितायें सुना रहे थे, और अमीर उमरा उन्हें 'कलामुल्मुलूक लूकुलकलाह' कह कर झुक-झुक कर सलामें झुका रहे थे। दूत ने खत दिया तो बादशाह ने वज़ीर से कहा, 'पढ़ो क्या है?' वजीर ने पढ़ा और कहा, 'हुजूर ऐसे गुस्ताख़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के अल्फ़ाज़ हैं कि जहांपनाह के सुनने क़ाबिल नहीं।' बादशाह ने कहा, 'ताहम पढ़ो'। खत सुनकर कहा, 'क्या यह मुमकिन है कि यह शख्स दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दे?' खुशामदी दरबारियों ने कहा, 'हुजूर कतई नामुमकिन है।' तब बादशाह ने हुक्म दिया, 'यह खत शराब की सुराही में डुबो दिया जाय और इसके नाम पर एक एक दौर चले।' जब दौर खतम हुआ तो दूत ने कहा, हुजूर बन्दे को क्या इरशाद है?' बादशाह ने हुक्म दिया, 'पांच सौ अशर्फी और एक दुशाला इसे इनाम में दिया जाय।'

दूत चला गया और नादिरशाह तूफान की भांति दिल्ली में घुस आया। उसने तीन दिन तक कत्लेआम किया और असंख्य हीरे जवाहरात लूट ले गया। वह तख्तेताऊस भी लूट ले गया। इस लूट में उसे तख्त के अलावा दस करोड़ का माल मिला था !!!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ५

ईस्ट इण्डिया कम्पनी और मद्य

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल में शराब को अधिक प्रोत्साहन मिला। एक तो कम्पनी के कर्मचारी ही स्वयं खूब शराब पीते थे, दूसरे इससे आयकर की बड़ी भारी आमदनी थी। आमदनी के लालच में कम्पनी ने शराब को प्रचारित करने के लिये नये २ उपाय किये, जनता को उत्साहित किया और इसके प्रचार को रोकने में तनिक भी नियन्त्रण करने की चेष्टा नहीं दिखाई। तबसे अब तक ईस्ट इण्डिया का शासन उठ जाने के बाद भी भारत सरकार ने काँग्रेसी मिनिस्टरी से प्रथम शराब के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाई।

भारत के किसी भी स्वतन्त्र या उच्छृङ्खल राजा के मन में शराब की दुकान खोलकर अपने ख़जाने को भरने की सूझ नहीं हुई थी। इस अनोखी विचार सृष्टि का श्रेय केवल अंग्रेज सरकार को ही है, जो बिना संकोच कह सकती है कि उसकी बड़ी आमदनी के ख़्याल ही से उसकी बिक्री कम नहीं की जायगी।

अब से सौ सवा सौ वर्ष पहले जब सरकार को पता लगा कि ताड़ी का व्यवहार नीच जातियों में ज्यादा बढ़ रहा है, तब उसने ताड़ी के प्रत्येक पेड़ पर टैक्स लगा दिया, धीरे धीरे इस आमदनी पर उसका जी ललचाया। उसने ज़िले में आबकारियां खोलीं और उनकी मालिक बन बैठी। बिशप जॉन हर्स्ट ने इस विषय पर लिखा है—'सरकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आबकारियों की पूंजीपति बनी, उसने शराबख़ाने बनवाए। शराब बनाने के लिये आवश्यक बर्तनों की व्यवस्था की। ख़ास शराब के लिये ही पुलिस तैनात की। शराब का काम देशी ठेकेदारों को दिया गया।'

पर इतना होने भर भी सरकार को सन्तोष नहीं हुआ। वह इस धंधे से अधिक रुपया कमाना चाहती थी। इसी समय मिस्टर सी० टी० बकलैंड ने अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाया। उन्होंने आबकारियां बन्द करदी, अब शराब बनाने बेचने का काम ठेके पर नीलाम किया जाने लगा। ज़िला मजिस्ट्रेट उस अधिकार का नीलाम करने लगे, सबसे अधिक रुपया देने वाले को इच्छानुसार शराब बनाने और बेचने का अधिकार मिलने लगा।

अब सरकार को कुछ सन्तोष हुआ, क्योंकि सरकारी ख़जाने में धुंआधार रुपया आने लगा था। यह व्यवस्था सन् १८७८ में की गई। सन् १८७३ और ७४ में आबकारी विभाग की वार्षिक आय ३ करोड़ ७४ लाख रुपया थी, सन् १८७८-७९ में एक ही वर्ष में ४ करोड़ हो गई। सन् १८८७ में यह आय ६ करोड़ ३९ लाख ९ हज़ार हो गई। और १९०८ में ९ करोड़ ५८॥ लाख थी।

किन्तु प्रजा पर इसका क्या प्रभाव हुआ? आबकारियों की संख्या में भयंकर वृद्धि हुई, उनमें अपरिमित शराब तैयार होने लगी। मुंगेर के ज़िले में पुरानी व्यवस्था के अनुसार प्रति दिन ५०० गैलन शराब बनती थी; अब १५०० गैलन नित्य बनने लगी। शराब की इस प्रचुरता ने भारत की क्या दशा की है उसका वर्णन हृदय को हिला देने वाला है। ब्राह्मण से लेकर भंगी तक और बड़े ओहदेदारों से लेकर कुली तक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभी शराबी बन गये हैं। स्वर्गीय केशवचन्द्रसेन ने एक बार कहा था कि १० शिक्षित बंगालियों में ९ छिप कर शराब पीते हैं। बिना शराब का प्याला ढाले मित्रों की सोसायटी में मज़ा नहीं आता। मुसल्मानों की श्रद्धा कुरान से उठ गई है, अब उच्च श्रेणी के मुसल्मानों में बिना शराब के कोई दावत पूरी ही नहीं होती। बाज़ारों और सड़कों के किनारे खोले गये शराबख़ानों में आज असंख्य अभागों की भीड़ नज़र आती है। इनके बच्चे भूखे मरते हैं, स्त्रियों के पास लज्जा निवारण को चिथड़ा नहीं है, किन्तु ये अभागे अपने दिन भर की कमाई की शराब पीकर पशु बनकर घर में आते और रात भर पड़े रहते हैं। पहले ये लोग अपनी आमदनी बचा कर पीते हैं, पर दिन पर दिन मात्रा बढ़ती और फिर सारी आमदनी स्वाहा होती है। मतवाले होकर स्त्री बच्चों को पीटना, फूहड़ गाली बकना या किसी गन्दी जगह में पड़ा रहना यही इनका जीवन हो जाता है। शीघ्र ही वह किसी काम के भी नहीं रहते, मजूरी भी नहीं कर सकते। घर के ज़ेवर बर्तनों पर हाथ साफ़ होता है, फिर चोरी भी करते हैं, जेल जाते हैं। अनाथ स्त्री बच्चे भीख माँग कर, व्यभिचार करके, मजूरी करके पापी पेट को भरते हैं। बहुत सी स्त्रियाँ विष खाकर मरती हैं।

मध्यम श्रेणी के लोग प्रथम दवा की तरह एकाध बार शराब पीते हैं, पीछे उसका मज़ा लेते हैं। धीरे धीरे वे अपनी श्रीमतियों के पवित्र होठों पर भी उसका आचमन करा देते हैं। वे यह कभी नहीं विचारते कि इसका भविष्य सन्तति पर क्या असर पड़ता है। जिन्हें काफ़ी अन्न और वस्त्र भी नहीं मिलते, वे भी बराबर शराब पीते हैं। इसका परिणाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह होता है कि उनके शरीर भयंकर रूप में जर्जरित हो जाते है। खांसी, दमा, क्षय, उन्माद ये भयंकर रोग जो बड़ी तेज़ी से बढ़ रहे हैं, निस्सन्देह शराबख़ोरी के परिणाम हैं।

प्रजा को अच्छी तरह हलाल करके, उसकी जातीयता, धर्म और पवित्रता का नाश करके, उसके सीधे सरल गृहजीवन में आग लगाकर केवल रुपयों के ढेर के लालच में सरकार बराबर शराब को उत्तेजन देती है !!!

सन् १८८८ में हाउस आफ़ कामन्स में, भारत में शराब के प्रचार के विषय में बहस हुई थी। अँग्रेजों ने भारत सरकार की शराब प्रचार नीति के पक्ष में बोलकर वाक्चातुर्य दिखाया था। परन्तु मिस्टर केनी ने भारतवासियों का पक्ष लेते हुए सरकारी नीति का तीव्र विरोध किया और उन्होंने शराब प्रचार के सम्बन्ध में भारत सरकार की कुटिल और दूषित नीति को प्रमाण द्वारा सिद्ध करते हुए कहा था, "यदि सरकार अपनी आय को प्रति दसवें वर्ष दुगनी करने की वर्तमान नीति को क़ायम रखेगी तो भारत ३० वर्ष में पृथ्वी तल पर एक पक्का शराबी और पतित देश हो जायगा।" क्या ये शब्द हमें भयभीत करने के लिये यथेष्ठ नहीं हैं ?

ईस्ट इण्डिया कम्पनी आबकारी वस्तुओं का ठेका नीलाम कर दिया करती थी। जो सबसे अधिक बोली बोलता था, उसे ही सर्वाधिकार दे दिया जाता था। बनाने, बेचने और खपत करने का सब काम वही करता था, सरकार को किसी भी झंझट में पड़ने की परेशानी उठानी नहीं पड़ती थी, वह तो ठेका देकर रक़म ख़ज़ाने में रख लेती थी। ये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ठेकेदार खपत और बिक्री के बढ़ाने का विशेष प्रयत्न नहीं करते थे क्योंकि ये परस्पर में प्रतिस्पर्धा करके माल को अच्छा और मंहगा बेचने के इच्छुक न थे। जैसी बनी बेचदी। परन्तु धीरे २ सरकार ने इसमें सुधार किये। अनेक स्थानों पर बनने और ऊँची बोली के ठेकों से सरकार को प्रबन्ध और निगरानी करने में बहुत कठिनाई और परिश्रम करना पड़ता था। सरकार ने निश्चय किया कि एक ही स्थान पर शराब बने और वहां से सर्वत्र जाय। उसने सब स्थानों की इधर उधर फैली हुई भट्टियों को एक बड़े सरकारी केन्द्र में एकत्रित किया, जहां से शराब बाहर जाते समय नियन्त्रण में रहे और चुंगी लेने में भी भूल न हो। इसे डिस्टीलेरी सिस्टम कहते हैं।

आजकल अनेक जिलों में 'कन्ट्रेक्ट डिस्टीलेरी सिस्टम' प्रचलित है। इसके द्वारा समस्त भट्टी का ठेका एक ठेकेदार को देदिया जाता है, वह निश्चित मात्रा में शराब बनाकर निश्चित मूल्य पर कल्लालों को देता है, सरकार की इस पर पूरी देखरेख और जांच रहती है। इस डिस्टीलेरी सिस्टम से शराब कितनी बढ़ गई इसका पता इस तालिका से लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

DISTILLERY SYSTEM से बढ़ती

प्रान्त	क्षेत्रफल (हज़ारों स्क्वायर मील में)		बढ़ने का प्रतिशत	खपत (हज़ारों गैलन में)		बढ़ने का प्रतिशत	जनसंख्या लाखोंमें		बढ़ने का प्रतिशत
	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	१९०५ १९०६	१९१०-११		१९०५ १९०६	१९१०-११		१९०५ १९०६	१९१०-११	
मद्रास	१२२	१२३	१ %	१२२२	१५३८	२५.५ %	३६७	४००	९ %
बम्बई	७५	७५	......	२३९२	२६०६	१३ %	१५३	१६०	५ %
सिंध	४७	४७	......	१८३	२१०	१५ %	३२	३५	९ %
बंगाल	४३	६३	४६ %	४५२	७७६	७१ %	२७८	४०१	४४ %
विहार उड़ीसा	१७	५१	२०० %	३०८	९३५	२०४६ %	७८	२७२	२४७ %
यू० पी०	६८	८५	२५ %	११४९	१३२९	१७ %	३९२	४३८	१७ %
पंजाब	९५	९७	२ %	४७१	४८०	२ %	१९९	२०३	२ %
मध्यप्रान्त	३१	५४	७५ %	४५०	६५१	४४ %	४७	७५	६१ %

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १८५८ तक जब भारत का शासन इङ्गलैंड के ताज के नीचे गया तब मद्य-व्यापार का कानून (खेद है कि इसके द्वारा इस व्यापार को उत्साहपूर्ण प्रोत्साहन दिया गया) लागू करने और इसको नियमित करने के लिए एक बड़े विभाग की स्थापना की गई, क्योंकि सरकारी आय के दृष्टिकोण से इसने संतोषजनक फल दिए, लेकिन इसके परिणाम जनता के लिये अत्यन्त भीषण और घातक सिद्ध हुए।

बहुत से भारतीय सुधारक इसके भावी रूप को देखकर आशंकित हो गये और उन्होंने इसपर प्रतिबंध डालने के लिये दबाव दिया। और उस समय उनकी प्रार्थनाओं के प्रति सरकार का सहानुभूतिप्रद तथा प्रोत्साहन पूर्ण रुख न देखकर कुछ ने भारत सरकार को भारत के नैतिक विनाश का कारण करार दिया। केशवचंद्र जैसे प्रसिद्ध नेताओं ने बंगाल में दारू के अभिशाप के विरुद्ध निर्भीक आवाज उठाई और अपने प्रान्तवासियों से इसे बिदा कर देने की मार्मिक प्रार्थना की। जिस समय वे योग्य राष्ट्रकर्मी गत शताब्दी के अंत में इंगलैण्ड गए तो उन्होंने अंग्रेज जनता को, सरकारी नीति द्वारा भारतीय जनता को जो भयानक हानि हो रही थी, मनवाने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी। उनके इस प्रयत्न में यूरोपियन मिशनरियों ने भी योग दिया, जब कि वे यह मालूम करके भयभीत हुये कि जन साधारण के दिमाग में शराब और ईसाईयत में अभिन्नता का भाव बैठ चुका था। किसी का शराबखोरी के प्रभाव में आना इस बात का प्रमाण समझा जाता था कि या तो वह मनुष्य ईसाई है या ईसाई होने वाला है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरकार से बार-बार अपील किये जाने तथा दबाव दिये जाने पर सन् १८८३ में बंगाल में शराब व्यापार की जाँच करने के लिए एक कमीशन नियुक्त हुआ। कमीशन की रिपोर्ट ने यह स्पष्ट खोल दिया कि चुंगी की रसीदों की वृद्धि में कम से कम ५० फी सदी सरकार या सरकारी कर्मचारियों द्वारा जनता के स्वास्थ्य और सामाजिक तथा नैतिक उच्चता का बलिदान कराकर, शराब खोरी की आमदनी बढ़ाने के प्रयत्नों का फल है। जो बात बंगाल के विषय में है वही सारे भारत के विषय में निःशंक होकर कही जा सकती है।

श्री विलियम स्प्रोस्टन केन, जो हाउस ऑफ कॉमन्स के सदस्य थे, पहले अंग्रेज थे जिन्होंने सरकार की चुंगी पॉलिसी के लिए सरकार को गम्भीर चैलेंज किया। उन्होंने १८८७, ८८ की शरद में भारत का पहला दौरा किया। उनका इस विषय की ओर हिन्दू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सभी जातियों के प्रमुख व्यक्तियों के डेपूटेशन ने ध्यान आकर्षित किया। उनसे डेपूटेशन ने, पार्लमैण्टरी कार्रवाई की जा सके इस दृष्टिकोण से इंग्लैंड में एक संगठन करने, शराब व्यापार की रोक के लिये भारतव्यापी आंदोलन को प्रोत्साहन देने और मार्ग सुझाने के लिये अनुरोध किया। भारतीय नेशनल काँग्रेस ने शराब के प्रति संयम और पूर्ण बहिष्कार को हाथ में ले लिया।

अपनी जांच के फलस्वरूप श्री केन को इस बात को मानने के लिये बाध्य होना पड़ा कि भारत को उस व्यापार—जिससे कि केवल पश्चिमी संसार ही परिचित है—की बुराइयों से खतरा है, और उन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुराइयों की भारत की देश-व्यापी गरीबी के कारण उसकी घनी संख्या में उग्ररूप से प्रचलित हो जाने की आशंका है।

श्री केन के इंग्लैंड लौट जाने पर श्री सेम्युअल स्मिथ के निवास-स्थान पर पार्लमेंट के मेम्बरों तथा सुधारकों की एक मीटिंग बुलाई गई। इस मीटिंग में एक 'ऐंग्लो-इण्डियन टैम्परेंस ऐसोसियेशन' बनाई गई, जिसके स्पष्ट उद्देश्य भारत के अन्दर शराबखोरी की सहूलियतों के प्रचार को रोकना, जनता में इसके प्रति पूर्ण निषेध की भावना फैलाना और शराब के व्यापार का विनाश करना था। श्री स्मिथ इस ऐसोसियेशन के प्रैसीडैण्ट बनाये गये। श्री स्मिथ की बाद में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में मृत्यु हुई, और श्री केन ने ऑनरेरी सेक्रेट्री का भार अपने कंधों पर लिया जिसको उन्होंने अपने मृत्यु समय १९१० तक निबाहा।

१८८९ में श्री केन ने दुबारा भारतवर्ष की 'चुङ्गी व्यवस्था' का गम्भीर अध्ययन करने के लिये दौरा किया। उन्हें ज्ञात हुआ कि भिन्न-भिन्न प्रान्तों में इस विभाग के तरीके अलग २ थे। लेकिन शराब की पैदावार और बिक्री का आधार एक ही था—और वह था 'फार्मिङ्ग-सिस्टम'। इस सिस्टम में जो व्यक्ति ज्यादा बोली लगाता था उसको शराब खीचने और विशेष क्षेत्र में दुकान खोल कर बेचने का लाइसेन्स मंजूर किया जाता था। किन्हीं प्रान्तों में तो शराब सरकारी ठेके के बतौर खींची जाती थी, और उसको बेचने का अधिकार खींचने वालों को ही था। सरकार की यह दलील थी कि यह नीति इसलिये चालू की गई कि शराब की कम से कम खपत से ज्यादा से ज्यादा आमदनी हो। इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिद्धान्त के पक्ष में सरकारी शब्द ये हैं—"इस प्रकार जहां तक सम्भव हो, जनता पर बिना तंगी किये उसे नाजायज तौर से शराब खींचने से रोकने के लिये शराब पर टैक्स लगाया जाना और उसका प्रयोग रोका जाना चाहिये।"

सरकार ने यह कहकर तसल्ली करली कि वह अपनी नीति में पूर्ण सफल हुई है और महसूल की आय में वृद्धि पहले वर्षों की अपेक्षा शराब के कानून के अन्दर कम इस्तेमाल होने का द्योतक है। भारतीय दृष्टिकोण सरकार के कथन के विपरीत था और वह यह था कि नाजायज शराब की पैदावार रोकने के थोथे बहाने की आड़ में सरकार ने जनमत को ठुकराकर आमदनी के लिये बहुत सी ऐसी-ऐसी जगहों पर लाइसेन्स दे दे कर दुकानें खुलवाईं जहाँपर कि शराब को कोई जानता तक नहीं था।

इङ्गलैंड लौट जाने पर केन और उनके साथियों ने पार्लमेंट में इस विषय को छेड़ा और इस पर उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर सरकार के विरुद्ध पेश किये गये निन्दा प्रस्ताव पर खूब वाद-विवाद हुआ। प्रस्ताव में इस नीति के द्वारा इसकी ओट में भारक के मजदूरों के अन्दर बढ़ती हुई बुराइयों पर जोर दिया गया और उनको मिटाने के लिये तात्कालिक कार्यवाही के लिये मांग पेश की गई थी। घोर सरकारी विरोध और उस समय पार्लमेंट में टोरी (अनुदार) सरकार का बहुमत होते हुये भी कॉमन्स सभा ने १०३ के विरोध ११३ से निन्दा का प्रस्ताव पास कर दिया।

इसका फल यह हुआ कि सरकार के चुङ्गी विभाग के शासन और उसकी नीति की गहरी जांच की गई और एक मोटी रिपोर्ट प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की गई जिसमें सरकारी व्यवस्था और नीति का जोरों से पक्ष समर्थन किया गया। अन्त में भारत सरकार को श्री केन की दलीलों के ठोसपन को मानना पड़ा और फलस्वरूप सरकार को सुधार करने पड़े जिससे स्थिति में कुछ सुधार हुआ।

उस समय भारत की जनता में शराब बन्दी आँदोलन जोर पकड़ता जा रहा था। और उधर अपने बार-बार के दौरे में श्री केन ने अनेक संस्थाओं का निर्माण किया जिनकी कुल संख्या लगभग ३०० थी। 'महिला मद्य-संयम सभाओं' की शाखाओं ने भी अपना काम आरम्भ किया। लेकिन एक ओर तो अकालों की पुनरावृत्ति और दूसरी ओर मद्य-संयम आंदोलन के होते हुए भी मादक पेयों की खपत बढ़ती ही गई। सन् १८५७ में सारे भारत की शराब से आमदनी सिर्फ १७,५०,०००पौंड थी, जो १९०५ में५८,६१,०००पौंड और १९३०-३१में१५० लाखपोंड हो गई। (युद्ध की बढ़ी हुई कीमतों को हमें ध्यान में रखना पड़ेगा, लेकिन फिर भी हम देखते हैं कि इसी समय के अन्दर ग्रेट-ब्रिटेन और अमेरिका जैसे देशों में शराब से इतनी आमदनी नहीं बढ़ी)। महात्मा गाँधी के द्वारा आरम्भ किये शराब के पूर्ण बहिष्कार और दुकानों पर पिकेटिंग के लिये धन्यवाद है जिसने १९३६ में इसको १,१२,८५,००० पौंड तक कम कर दिया। उपरोक्त आंकडे पार्लमैंट में दिये गये आंकडे हैं।

इन पिछले वर्षों में सरकार की ओर से कड़ी दारूबन्दी नीति अख्तयार करने के भरसक प्रयत्न किये गये थे। जनमत के दबाव के उत्तर में १९०५ में पूरे चुङ्गी विभाग के प्रबन्ध की जाँच के लिये एक सरकारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमेटी बनाई गई। इस कमेटी की कुछ सिफारिशें प्रचलित व्यवस्था के पक्षमें थीं, लेकिन कुछ सूरतों में थोड़े से लाभदायक सुधार किये गये। इनमें मुख्य सुधार बड़े-बड़े शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में कमेटियों की स्थापना थी। इन कमेटियों का काम सरकार को शराब की दुकानों की संख्या के बारे में, तथा बिक्री के घंटों के विषय में सलाह देना था। ये कमेटियां सरकारी प्रभाव में स्थापित की गई थीं, इनका अन्तिम निर्णय एक स्थानीय माल अफसर के हाथ में था जो इन कमेटियों का चेयरमेन होता था।

सन् १९०७ में और फिर १९१२ में प्रभावशाली डेपूटेशन अधिक ठोस सुधार कराने के उद्देश्य से सैक्रेट्री ऑफ स्टेट फार इन्डिया (भारत मन्त्री) से मिले। इनमें महात्मा गोखले ने विशेष भाग लिया। दूसरे डेपूटेशन का एक फल हुआ कि प्रान्तीय राजधानियों में लाईसेंसिस बोर्ड बनाये गये जिनमें सुधारप्रिय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी थे। जिनका काम ऐडवाइजरी कमेटियों पर पहले की अपेक्षा अधिक सत्ता के साथ काम करना था। लेकिन सब होते हुए भी फल हमेशा निराशा-प्रद ही मिले क्योंकि अन्तिम निर्णय फिर भी माल-अधिकारियों के हाथ में रक्खे गये थे।

१९१९ के इण्डिया एक्ट के अन्तर्गत चुंगी विभाग निर्वाचित प्रान्तीय धारा-सभाओं के उत्तरदायी भारतीय मंत्रियों के हाथ में दे दिया गया। यह अच्छा अवसर था जिससे भारतीय अपने अन्दर के इस रोग से छुटकारा पाने के लिये प्रयत्नशील हो सकते थे परन्तु तुरन्त ही कठिनाइयाँ सामने आ गईं। क्योंकि इस चुंगी से जो आमदनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होती थी वह प्रांतीय सरकारों के जन हितकारी कार्य—जैसे शिक्षा, सफाई आदि में खर्च किये जाने वाली मदों में से एक खास थी। उस नए विधान के आलोचकों ने ठीक ही घोषणा की थी कि यह व्यवस्था मद्य-निषेध के मार्ग में अड़ंगा डालने के लिये की गई है। जैसाकि सुधारकों ने पहले ही देख लिया था, शराब की निरन्तर बढ़ती हुई आमदनी से आर्थिक समस्या बढ़ा दी गई, यहाँ तक कि १९३२-३३ में शराब की आय कई सूबों की कुल आमदनी की एक चौथाई तक पहुँच गई। इस प्रकार मद्य-निषेध को सफल बनाने के लिये इस भयानक आर्थिक सङ्कट का सामना करना था।

लेकिन उन्नतिशील भारत तो वास्तव में इससे भी अधिक चाहता था। १९२५ की सितम्बर में भारतीय व्यवस्थापिका सभा दिल्ली ने मादक-पेयों की पैदावार, निर्माण, बिक्री और आयात पर पूरी रोक लगा देने के लिये एक प्रस्ताव पास करके इस ध्येय की ओर कदम बढ़ाया। यह प्रस्ताव सरकार की ३९ वोटों के विरुद्ध ६९ वोटों से पास हुआ था। विरोध में ३९ के अल्पमत में २५ यूरोपियन, तथा १४ भारतीय थे, जिसमें सभी या तो सरकार द्वारा निर्वाचित हुये थे या सरकार से अधिकारी वर्ग के नाते सम्बन्धित थे। इस प्रकार एक बहुमत के साथ स्वतंत्र भारतीय मत ने पूरी दारू-बंदी के पक्ष में अपनी सम्मति प्रगट की। यह रुख १९२८ में कलकत्ता में हुई सर्व-दल-सम्मेलन में और भी पुष्ट हो गया, जब कि इस समय शराब-बन्दी राष्ट्रीय विधान के आवश्यक अंगों में से एक करार दे दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ६

भारत सरकार की मद्य नीति

"The Govt. of India have no desire to interfere with the habits of those who use alchohal in moderation. This is regarded by them as outside the duty of the Govt., and it is necessary in their opinion to make due provision for the needs of such persons. Their settled policy, however, is to minimise temptation to those who do not drink, and discourage excesses among those who do, and to the furtherance of this policy all considerations of revenue-must be absolutely subordinated."

भारत सरकार ने शासन सूत्र संभालते समय मद्य सम्बन्धी नीति की यह घोषणा की थी। इन शब्दों से यह स्पष्ट है कि सरकार की मद्यनिषेध भावना नहीं थी। यह घोषणा सुधार भावना से नहीं बल्कि कल्लालों और शराबियों को बनाये रखने के लिये है। सन् १८९९ में सरकार ने आबकारी नीति को चलाने के लिये ये सिद्धान्त बनाये थे—

१. अधिक शराबख़ोरी को प्रोत्साहन न दिया जाय।

२. टैक्स यथासम्भव अधिक रखा जाय।

३. कम से कम खपत में अधिक से अधिक कर लगाया जाय।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन सिद्धान्तों को तत्कालीन भारत मन्त्री लार्ड क्रॉस ने स्वीकृत कर लिया था। इन सिद्धान्तों में शराबख़ोरी को बिल्कुल ही बन्द करने की कोई नीयत नहीं है। इस नीति को कार्यरूप में इस प्रकार परिणित किया गया—

१. भट्टी पद्धति को चलाया जाय।

२. देसी शराबों पर अधिक ड्यूटी लगाई जाय। विदेशी शराबों पर अधिक ड्यूटी न हो।

३. दुकानों की संख्या कम करदी जाय।

इन उपायों को व्यवहार में लाया गया जैसाकि निम्न तालिका से प्रकट होता है—

दुकानों की संख्या

वर्ष	शराब की दुकानें	अफीम, भांग गांजा की दुकानें	दुकानों की कुल संख्या
१८९९—००	८२११७	१९७६६	१०१८८३
१९०५—०६	९१४४७	२१८६५	११३३१२
१९१०—११	७१०५२	२००१४	९१०६६
१९१४—१५	५६७२३	१७६९९	७४४२२
१९१५—१६	५५०४६	१७३१६	७२३६२
१९१६—१७	५१९१७	१७१७७	६९०९४
१९१७—१८	५४८९६	१७१४७	७२०४३
१९१८—१९	५२६८३	१७१५२	६९८५३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहले बहुत सी दुकानें मज़दूरों और निम्न श्रेणी की बस्ती के निकट थीं। वे हारे थके वहां ठहरकर एक गिलास पीते और नशा चढ़ने पर सब कष्ट भूल जाते थे। ऐसी दुकानें सरकार को बन्द करनी पड़ीं। उपरोक्त तालिका में जो दुकानों की कमी दीखी है वह ऐसी ही दुकानों के बन्द करने के कारण से है। इससे इन दूकानों की प्रचुरता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है।

ठेके नीलाम करने के परिणाम में ठेकेदारों को बहुत सी कठिनाइयां प्रतीत हुईं। वे जितने लाभ की आशा से ठेका लेते थे, उतना उन्हें लाभ नहीं होता था। "Administration Report of Bengal Provincial Government" में इस बात को लिखा गया है, कि "ठेकेदार अपना लाभ प्राप्त करने के लिये शराब में पानी मिलाकर बेचते हैं। मार्च सन् १९११ में नीलामी होने के तुरन्त बाद ही चौबीस परगने में ढेरों अर्जियां फ़ीस कम करने की आई जिनमें यह शिकायत की गई थी कि ऊँची बोली के भाव ने शराब विक्रेताओं को ईमानदारी से काम करने की गुंजायश नहीं रहने दी है।"

बिहार उड़ीसा की सरकारी रिपोर्ट में भी यही बात स्वीकार की गई है, "शाहाबाद में सबसे ऊँची बोली बोलने वाले को ठेका दिया गया। इस बोली में लाभ की गुंजायश न थी, परिणाम यह हुआ कि केवल इसी ज़िले में खपत २४९५६ गैलन बढ़ गई।"

फिर भी सरकार को दुकानों का ठेका देते समय दुकान के स्थान को विचारना पड़ता है। दुकान ऐसे स्थान पर हो, जहां से पीने वाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आसानी से शराब प्राप्त कर सकें, साथ ही यदि वे मतवाले होकर फसाद भी करें तो रास्ता रुके नहीं।

परन्तु इन उपायों से मद्य-निषेध नहीं हो सकता। मद्य-निषेध का सबसे उत्तम उपाय वह है जो स्वेडन में किया गया था। इस उपाय को 'गोथन बर्ग सिस्टम' कहते हैं। इसके द्वारा पीने वालों का नाम और पता रजिस्टर में दर्ज करके उन्हें शराब खरीदने का लाइसेन्स दे दिया गया। इसमें खरीदने की मात्रा भी निर्धारित कर दी गई। साधारण ठेके न देकर सरकारी दुकानें खोल दी गईं। और वहाँ उतनी ही मात्रा में शराब का स्टाक रक्खा गया जितना रजिस्टर में दर्ज होता था। स्वीड निवासी संसार भर में प्रसिद्ध शराबी (पियक्कड़) थे। छोटे बड़े, बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री पुरुष सभी शराब पीते थे। पाप और पतन की पराकाष्ठा हो चुकी थी। ४२ लाख गैलन शराब ३ लाख व्यक्ति प्रति वर्ष पीते थे। शराब बनाने, बेचने और पीने पर कोई प्रतिबन्ध न था, खुले आम शराब पी जाती थी। परिणाम यह हुआ कि देश में हाहाकार मच गया। अन्त में गोथन बर्ग की म्यूनिसिपिल कौन्सिल ने एक बिल पास किया और उसके अनुसार रजिस्टर रखा जाने लगा। उसने दुकानों के खुलने और बन्द होने का समय निश्चित कर दिया। शराब की पुरानी दुकानों के स्थान पर कॉफी-गृह और वाचनालय खोले गये। जिन व्यक्तियों को शराब पीकर नशा होता था उन्हें शराब पीने का लाइसेन्स बन्द कर दिया गया। जो एक से अधिक बार शराब पीने आते थे उन्हें भी लाइसेन्स बन्द कर दिया गया। इन दुकानों पर भोजन भी रहता था। यह भोजन बहुत स्वच्छ, स्वादिष्ट, पौष्टिक और मूल्य में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शराब के एक प्याले से बहुत सस्ता रहता था। शराब पीने वालों के सामने भोजन का प्लेट पेश किया जाता था, और जब वह देखता था कि चार पैसे देकर इस स्वादिष्ट और तृप्तिकारक भोजन से उसका पेट भर जाता है, तो वह फिर चार आने देकर शराब की छोटी सी मात्रा पीना पैसे फेंकना समझने लगा। उसकी शराब पीने की आदत छूट गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय दूसरा

मद्य दोष

क्लिटनवेन क्राफट ने शराब का वर्णन इस प्रकार किया है, "मैं आग हूं, मैं भस्म करती हूँ और नाश करती हूं। मैं रोग हूं और असाध्य हूँ। मैं चिन्ता हूं, राजाओं की चमकीली पोशाक, प्रतिष्ठित पुरुषों के भारी २ वेश, सजीली रानियों के रेशमी वस्त्र मेरी अमिट भूख मिटाया करते हैं। मेरा नशा जब भयंकर ऊँचाई पर पहुंच जाता है तब मैं थोड़ी देर के लिये सुलगती हूं। मेरी ज्वाला अचानक धधक उठती है और सर्वस्व को भस्म करना शुरू कर देती है, यहां तक कि कुछ भी नहीं छोड़ती। मैं अग्नि का समुद्र हूँ, कोई जिव्हा मुझसे प्यास नहीं बुझा सकती। मैं वह अग्नि हूं जो कभी जल से शान्त नहीं होती।"

पश्चात्य सभ्यता ने संसार को जो सब से भयानक वस्तु दी है वह शराब है। यह शरीर और आत्मा दोनों ही के लिये समान रीति से घातक है। गत महायुद्ध में १ करोड़ प्राण युद्ध के द्वारा, १॥ करोड़ महामरी के द्वारा और २ करोड़ शराब के द्वारा नष्ट हुए। भारत में ज्यों ज्यों पाश्चात्य सभ्यता बढ़ी है मदिरा का प्रचार व्यापक होता गया है। अमीर और ग़रीब सभी इसके चंगुल में फंसे हैं। पश्चिम में मद्य के विरोध में अब भारी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है। अमेरिका ने शराब को त्याग दिया है, वहां ३६ हज़ार वर्गमील ज़मीन है, और १०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करोड़ से अधिक मनुष्य रहते हैं, सर्वत्र शराब की बिक्री बन्द करदी गई है। वहां के वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने आन्दोलन मचा रखा है कि यह शराब उनके देश और राष्ट्र को, उनके समाज को सत्यानाश कर रहा है। विद्वान लोग सर्व साधारण को चिता रहे हैं कि मद्यपान से बल घटता है, पुरुषार्थ कम होता है, शरीर में रोग प्रवेश करते हैं और आयु कम हो जाती है। शराब का काम मांस को गला डालना है इससे दिमाग़ खराब होकर और बुद्धि मलिन हो जाती है। अन्य योरोपीय राष्ट्र भी समस्त संसार से इसको नष्ट कर देने का उद्योग कर रहे हैं। इङ्गलैंड के प्रख्यात महामन्त्री मिस्टर ग्लेडस्टन ने एक बार कहा था—"मनुष्य जाति पर असंयम द्वारा जितनी विपत्तियां पड़ी हैं, उतनी बड़ी से बड़ी तीन ऐतिहासिक विपत्तियां, अर्थात् युद्ध, महामारी और अकाल द्वारा भी नहीं पड़ीं।"

कुछ दिन पूर्व ग्रेट ब्रिटेन और भारत के डाक्टरों ने मिलकर एक विज्ञप्ति निकाली थी, जिसका अभिप्राय यह था:— १. यह वैज्ञानिक रीति से निश्चय हो गया है कि शराब, कोकिन, अफ़ीम और अन्य मादक द्रव्य विष हैं, २. भारत जैसे गरम देश में इनका थोड़ा भी व्यवहार स्थाई रूप से हानिकारक है। ३. बहुत दशाओं में शराब संतान के लिये हानिकारक है। ४. प्लेग, मलेरिया और क्षय को रोकने में शराब व्यर्थ है। ५. यही बात अन्य नशों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है।

कलकत्ते के सर लियोवर्ड राजर्स कहते हैं "कि बंगाल के जिगर के रोगों के '९० फीसदी रोगियों का कारण शराब का पीना ही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रियों में यह रोग बहुत कम पाया जाता है, क्योंकि वे शराब नहीं पीतीं मुसलमानों में भी यह रोग कम हैं क्योंकि बंगाल में हिन्दू ही ज्यादा शराब पीते हैं।"

डाक्टर हार्वी वेली, जो अमेरिका के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं और मेडिसन रिसर्च एशोसियेशन के सभापति हैं, कहते हैं—"औषध तत्व-सार के पारंगत हैं। जिन्होंने शराब के प्रभाव का अन्वेषण किया है वे एक मत से सहमत हैं कि शराब पौष्टिक पदार्थ नहीं है। यह एक निरा विषैला पदार्थ है, इसलिये व्हिस्की और ब्रान्डी दोनों ही औषधि की श्रेणी में से अलग करदी गई हैं।

योरोप के अस्पतालों में अब से २५ वर्ष तक शराब का औषधि की भांति बहुतायत से प्रयोग होता था। चीर फाड़ के बाद बहुत से अस्पतालों में ब्रान्डी हृदय को उत्तेजना देने के लिये काम में लाई जाती थी, पर अब इसका प्रयोग बन्द कर दिया गया है। आस्ट्रेलिया के एक अस्पताल में सन् १८९१ में १००० पौंड से अधिक मूल्य की शराब रोगियों पर ख़र्च की गई थी। उसी अस्पताल में सन् १९१४ में ४ पौंड मूल्य की शराब ख़र्च की गई।

शराब पाचन शक्ति को नष्ट करने वाली, सनक और दीवानापन लाने वाली, कलेजा, गुर्दा, आमाशय और रक्त स्नायुओं को भीतर ही भीतर घुलाने वाली अस्वाभाविक रीति से रोग जंतुओं को शरीर में पहुंचाने वाली है जिससे शरीर अवयव और ज्ञान तन्तु बिगड़ जाते हैं। निमोनिया, श्वास, दिक़, शोष आदि सांघातिक रोग उत्पन्न होने लगते हैं और फिर पुश्तैनी हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शराब काम शक्ति को असाधारण रीति से प्रबल कर देती है। संयम की शक्ति जाती रहती है यह जनन शक्ति को भी नष्ट कर देती है इसका परिणाम यह होता है कि बांझ और नपुंसकता के रोग उत्पन्न हो जाते हैं और मनुष्य शीघ्र ही निर्वीर्य और वृद्ध हो जाता है और अल्प-काल ही में उसकी समस्त इंद्रियां बेकार हो जाती हैं। शराबियों में प्रतिशत २७.१ मस्तक रोग से, २३·३ अपच रोग से और २६·९६ फेफड़े रोग से मरते हैं। भारत के पागल खानों में ६० प्रतिशत पागल मादक द्रव्य सेवन करने वाले हैं। भारत की वैश्याओं में २२ प्रतिशत सुरापान कारण है। मादक द्रव्यों से बेहोश करके कितने ही दुराचारी अनेक दुष्कर्म करते हैं।

शराब अस्वाभाविक रीति से गेहूं, मक्का, ज्वार, चावल महुआ, जौ अंगूर और खजूर के रस से सड़ा कर बनाई जाती है। इसमें अल्कोहल का प्राधान्य रहता हैं। १०९ औंस शराब में ७० औंस तक अल्कोहल रहता है। यह अल्कोहल भयानक विष है। यदि अल्कोहल थोड़ा भी एक मनुष्य को दिया जाय तो वह उसे मारने को काफ़ी है। यदि जल में सौवां भाग अल्कोहल मिला कर उसमें मछली को डाल दिया जाय तो वह मर जायगी। यदि अंडे की सफेदी को उसमें डालो तो वह तुरन्त सिमट जायगी तथा कड़ी हो जायगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १

अल्कोहल का परीक्षण

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक तरल पेय पदार्थों का उपयोग करते रहते हैं, जैसे दूध, पानी, लेमन, सोडा, बरफ, कॉफी, कोको आदि। इनमें अल्कोहल नहीं होता। इसके सिवा दूसरी श्रेणी के पेय हैं जैसे बीयर, विस्की, घर की बनी शराब, विलायती शराब, स्प्रिट, ताड़ी, दारू आदि ये सब नशा करती हैं क्योंकि इन सब में नशे की जीवात्मा 'अल्कोहल' होता है।

अल्कोहल के परीक्षण करने का साधारण उपाय यह है कि मद्य को किसी रक़ाबी में रखकर नीचे हल्की आंच जलाओ तो रक़ाबी भभक उठेगी। भक मे जल उठना अल्कोहल का प्रमाण है।

किसी भी तरल पदार्थ को उबाला जाय तो उसकी भाप बनने लगेगी। पानी २१२ F. डिगरी तक गरम करने पर भाप बनने लगती है। अल्कोहल केवल १७२ F. डिगरी में ही भाप बनकर उड़ने लगता है। यदि हम थोड़ी शराब, बीयर, स्प्रिट आदि कुछ भी एक कांच के गिलास में रखकर गरम करें तो वह तुरन्त गरम होकर गिलास के मुंह पर लौ बनने लगेगी। चूंकि पानी की भाप लौ बनकर जल नहीं सकती, और शराब में अन्य पदार्थों का मिश्रण नहीं है, इसलिये वह लौ अल्कोहल को प्रमाणित करती है। पानी का तनिक भी अंश उसमें होता तो वह लौ को जलने से अवश्य रोकता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अल्कोहल के सही माप का एक यन्त्र अल्कोहोलोमीटर भी आता है। आवकारी विभाग में घनत्त्व की माप भी की जाती है, और यही सही जांच है।

आवकारी विभाग अल्कोहल की वस्तुओं पर चुङ्गी प्रूफस्प्रिट Proof Spirit के हिसाब से लगाते हैं। आधा पानी आधा अल्कोहल से प्रूफ स्प्रिट बनती है। प्रूफ स्प्रिट में अनुपात से पानी का वज़न ५०.७६ और अल्कोहल का वज़न ४९.२४% प्रतिशत होता है। दोनों समान वज़न के हों तो प्रूफ स्प्रिट नहीं बन सकती क्योंकि अल्कोहल का घनत्त्व पानी से हल्का होता है। क्षेत्रफल के हिसाब से प्रूफ स्प्रिट में अनुपात से ५७.०६ भाग अल्कोहल और ४२.९४ भाग प्रतिशत पानी होता है।

यदि घनत्त्व ०.९८८५ हो तो उसमें ६.७५ प्रतिशत ख़ालिस अल्कोहल और १४.७३ प्रतिशत प्रूफ स्प्रिट का वजन होगा। इससे यह सिद्धान्त निकला कि प्रूफ स्प्रिट ख़ालिस अल्कोहल से दूनी से थोड़ी ज्यादा होती है, और ख़ालिस अल्कोहल की शक्ति में आधी से भी कुछ कम होती है। जिस तरल पदार्थ में २ प्रतिशत प्रूफ स्प्रिट होती है उस पर आवकारी चुङ्गी नहीं लगती, इससे अधिक पर लगती है। अल्कोहल में कितना पानी है इसका साधारण परिमाण इस प्रकार किया जा सकता है। दो चीनी के प्यालों में थोड़ी २ बारूद भरो। और उन में से एक में पानी मिली अल्कोहल छिड़क दो। दूसरी में ख़ालिस अल्कोहल छिड़क दो। दोनों के नीचे आंच जलाओ। दोनों जलेंगे। लेकिन (१) में अल्कोहल अंश तो जलकर उड़ जायगा, पानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का अंश बारूद में समा हुआ रह जायगा और वह गीली मालूम होगी। (२) में अल्कोहल जलेगा पर चूंकि उसमें पानी का अंश नहीं है इसलिये वह जलकर बारूद को भी जलाना शुरू कर देगी और बारूद गरम और सूखी मालूम होगी।

अब हमें इस बात पर विचार करना चाहिये कि अल्कोहल कहाँ से आती है। अल्कोहल प्राकृतिक रूप में किसी भी पदार्थ में नहीं बनती। वह रासायनिक विधि से सड़ाकर पैदा की जाती है और उससे शराब बनती है; जैसे जौ से बीयर, अंगूरों से वाइन, सेव से साइडर, नास्पाती से पेरी, शहद से मीड इत्यादि। इन शराबों की उत्तमता का यदि हम इसलिये बखान करें कि ये इतने सुन्दर फलों से बनी हैं तो यह मिथ्या है। क्योंकि दोनों के गुण भिन्न २ होते हैं। जिस प्रकार पानी, पानी की भाप, पानी की बरफ एक ही वस्तु की बनी होने पर भी भिन्न २ गुण रखती हैं इसी प्रकार शराब को भी समझना चाहिये।

शराब किस प्रकार सड़ाकर बनाई जाती है इसका हम विस्तार पूर्वक वर्णन करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण २

जौ की शराब

माल्ट विधि

जौ से बीयर बनाई जाती है। सबसे पहले अनाज को माल्ट किया जाता है, जिसकी विधि यह है:— जौ की पौद में जब किल्ले (अंकुर) फूट आते हैं तब उसमें रासायनिक परिवर्त्तन आरम्भ होता है। इस शिशु पौदे में स्टार्च बहुत अधिक मात्रा में होता है, यदि जौ की ऐसी पौदी को छाया में सुखा कर सावधानी से रखा जाय तो बहुत दिनों तक उसका यह गुण बना रहेगा।

जब पौदा नमी को जज़्ब करने लगता है तब यह बढ़ना आरम्भ होता है, और कुछ समय तक स्टार्च ही रासायनिक परिवर्त्तन से एक प्रकार की शक्कर बन कर इसे पोषक तत्त्व देता है। नीचे की नोक फैल कर जड़ हो जाती है, पत्तियां पनपने लगती हैं। फिर ज्यों २ पौदा बड़ा होता है त्यों २ पत्तियों द्वारा हवा में से और जड़ों द्वारा ज़मीन में से भोजन लेने लगता है। विकास होने पर जड़ें नीचे ज़मीन में धंसती जाती हैं और पत्तियाँ ऊपर ताज़ी हवा और रोशनी में फैलने लगती हैं।

स्टार्च बहुत ही शक्तिशाली पदार्थ है, यह तेज़ गरम पानी अथवा रासायनिक क्रिया से ही घुल सकता है। स्टार्च को रासायनिक उपाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से शक्कर बना कर बाज़ार में ग्लूकोज़ (Glucose) नाम से वेचते हैं। ग्लूकोज़ एक पोषक तत्त्व है, बच्चों और मरीज़ों के लिये पथ्य है। यह कई प्रकार के होते हैं।

इस बात से हमें ज्ञात हुआ कि जौ में "जौ की शक्कर" एक महत्वपूर्ण वस्तु है। इस शक्कर से ही शराब बनती है। शराब बनाने के लिये पहले जौ का माल्ट बनाते हैं, क्योंकि सूखे जौ में से स्टार्च को शक्कर के रूप में बदल देने की यही एक मात्र विधि है। अकेले सूखे जौ से शराब नहीं बन सकती। माल्ट विधि की चार क्रियायें हैं— १. भिगोना, २. ढेर करना, ३. किल्ले भूटना और ४. सुखाना। जौ को एक बर्त्तन में डाल कर उसमें पानी भर देना चाहिये जिससे वे डूब जाँय। ४८ घंटे तक डूबे रहने चाहिये। जौ पानी को ज़ज्ब करेंगे और फूल जावेंगे। इन जौ को पानी में से निकाल कर ढेर बना देना चाहिये। गीला ढेर बनने से थोड़ी गरमी पैदा होगी, और उनको गरमाई पहुँचेगी, इसी गरमाई से उनमें कुल्ले फूटेंगे। कुल्ले फूटने की आसानी के लिये ढेर को धीरे २ फ़र्श पर फैला देना चाहिये और उलट पुलट करते रहना चाहिये, थोड़े दिन बाद ही कुल्ले फूट आवेंगें। जब कुल्ले पूर्णतया फूट आंय, तब और अधिक अंकुर न बढ़ने देने चाहिये। उनको फिर भट्टी की मंदी आंच से गरम करके सुखाना चाहिये। आँच इतनी ही हो कि वे थोड़ा सूख जाँय, बहुत सूखे नहीं, जले नहीं, स्टार्च नष्ट होवे नहीं। माल्ट की सारी विधि बन्द कमरे में होनी चाहिये, खुली धूप में नहीं। शराब के कारखानों में माल्ट करने के कमरे मीलों लम्बे होते हैं और वे खुले नहीं होते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे माल्ट हुए जौ में पाचक शक्ति कम नहीं होती। बच्चों और मरीज़ों को डाक्टर लोग माल्ट अनाज की रोटी खाना बतलाते हैं। क्योंकि उनकी पाचन शक्ति कमज़ोर होती है। ऐसा अनाज मुंह की राल को उत्पन्न करता और उसके अभाव को पूर्ण करता है। भोजन खूब चबा कर निगलने का नियम इसीलिये है कि उसमें मुँह की लार का बहुत सा अंश मिलकर पेट में पहुंचे। माल्ट किया हुआ अनाज पाचनशक्ति को सुधार देता है।

माल्ट करने से जौ का वजन २० प्रतिशत घट जाता है। १०० सेर वजन ८० सेर ही रह जायगा। क्योंकि २% भिगोने में (घुलने वाला पदार्थ पानी में घुल जायगा), २% फर्शपर सुखाने में (कार्बन द्विओषित उड़ जायगी), ४% अंकुरों अथवा कुल्लों के घिसने अथवा छीज जाने में और १२% भट्टी कीं आंच से, भाप बन कर उड़ जाने में कम हो जाता है।

सन् १९२१ में यूनाइटेडकिंगडम अमेरिका में २,०००,००० एकड़ भूमि पर जौ की खेती शराब बनाने के लिये होती थी, जिसमें ९,०००,००० Quarter जौ पैदा होते थे। और १९,०००,००० Cwts जौ बाहर अन्य देशों से ख़रीदे गए थे।

एक जौ में निम्न पदार्थ होते हैं :—

Water	12.0
Dextrin & Sugar ...	6.2
Starch	62.6
Albuminoids	13.2

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Ash	2.8
Woody fibre ...	11.6
Fat	2.6
	100.00

अच्छे जौ का वज़न प्रति बुशल ४९ और ५८ पौंड के बीच में होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ३

शराब बनाना

शराब बनाने में आठ विधि करनी पड़ती हैं—माल्ट को कुचलना, मथना, पकाना, ठंडा करना, सड़ाना, साफ करना, शराब चुआना और शुद्ध करना।

मथने में १७५° F. गरम पानी प्रयोग में आता है, इससे स्टार्च की शुगर अच्छी तरह बनने लगती है। बड़ी २ मशीनों में पूरे चार घंटे तक एक घान की मथाई होती है, यहां तक कि स्टार्च की शक्कर बन जाती है जौ को अलग निकाल कर पशुओं को चारे के काम में लेलेते हैं और स्टार्च की शक्कर के तरल पदार्थ को पकाकर शराब बनाते हैं माल्ट बनाने में जौ २० % कम हो गया था। अब मथने में जौ पृथक होने से ५० % और कम हो गया।

उस शक्कर के तरल पदार्थ को बड़े २ टैङ्कों में भरकर सड़ाते हैं। सड़कर उसमेंफेन पैदा होते हैं। शराब के कारखानों में बहुत दूर तक फैले हुए तरल पदार्थ के ऊपर ये फेन श्वेत समुद्र की भाँति दीखते हैं। इन फेनों को सावधानी से उत्पन्न करके उनको एक बर्तन में संग्रह किया जाता है। इन फेनों से शराव चुआई जाती है। ये फेन कई प्रकार के बनते हैं। तरल पदार्थ की नीची तह में भी फेन उत्पन्न होते हैं, इनकी बनी शराब कुछ कमज़ोर होती है। ऊपरी सतह के फेनों की शराब ही प्रायः सर्वत्र बनाई जाती है और श्रेष्ठ समझी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फेन एक बार ही नहीं आते, वह एक बार उतार लेने पर दूसरी बार और तीसरी बार भी आते हैं। एक प्रकार से उस तरल पदार्थ की यह पौध है, इसमें बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। जितने अधिक फेन आयेंगे उतना ही अधिक सड़ान समझना चाहिए। टैंकों में अनुकूल टेम्प्रेचर रखने के लिये यन्त्र लगे रहते हैं। सड़ान का रासायनिक काम यह हुआ कि शक्कर की अल्कोहल और कार्बन द्विओषित दो चीज़ें बनी। फेन का फॉरमूला यह है:—

$$\underset{\text{Sugar}}{C_6 H_{12} O_6} + \underset{\text{झाग}}{\text{Yeast}} = 2\underset{\text{Alchohal}}{\left(C_2 H_5 Ho\right)} + 2\underset{\text{Carbon Diofide}}{\left(Co_2\right)}$$

ज्यों २ फेन बनते हैं, कार्बन द्विओषित हवा में उड़ जाती है और अल्कोहल रह जाती है। इस प्रकार शराब में खालिस अल्कोलह ही है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ४

शराब और डबलरोटी

कुछ लोगों की यह दलील है कि जौ की डबल रोटी भी इसी प्रकार ख़मीर उठा कर बनाई जाती है, जब उसमें हानि नहीं तब शराब में क्यों है? हम अभी बता चुके हैं कि शराब में, माल्ट और सड़ने में ७० प्रतिशत जौ कम हो चुके हैं और फेन लेने में तो और भी कमी हुई होगी, तब यह निश्चय मान लेना चाहिये कि डबल रोटी एक पैसे के टुकड़े में जितने पोषक तत्व मिले होंगे उतने पांच रुपये के शराब के गिलास में भी न होंगे। पश्चिम के एक प्रसिद्ध केमिष्ट बेरोन लीबिग ने एक बार कहा था कि हम इस बात को गणित द्वारा प्रमाणित कर सकते हैं कि खाने की मेज़ पर पड़ी हुई छुरी की नोक पर ही इतना पोषक तत्व पा सकता है जितना नौ गुनी सबसे अच्छी 'बवेरियन बीयर' में भी नहीं होता।

आधी पौंड रोटी में २८६ ग्रेन नसों को पुष्ट करने वाला पदार्थ रहता है। आधा पिन्ट दूध में १७६ ग्रेन पौष्टिक तत्व रहता है। आधा पिन्ट बीयर में केवल २० ग्रेन ही पौष्टिक तत्व रहता है। एग्रीकल्चर हाल लन्दन में पहली नेशनल ब्रीवर्स एग्ज़ीबिशन के अवसर पर बरटन शराब का एक पीपा दिखाया गया था जिसमें शराब का भाग विभंजन दिखाया गया था। पीपे में ३६ गैलन अथवा १४४ क्वार्टस शराब का विभंजन इस प्रकार था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३०	क्वार्ट	Water
७॥	"	Alcohal
३॥	"	Extractive (Dextrin. &c.)
२	"	Sugar
१	"	Albumenoid
१४४	"	

इसमें आप देखेंगे कि भोज्यपदार्थ केवल पिछली दो वस्तुएं ही हैं। रोटी और बीयर में अब यह भेद हुआ कि रोटी में वे सब गुण क़ायम हैं जो प्रकृति ने अनाज को पौदे में दिये थे जबकि बीयर में से ये गुण कुचलने और सड़ाने में रासायनिक परिवर्तन होने पर जाते रहे। यहां हम इस बात को प्रमाणित करते हैं कि रोटी में पौद के गुण क़ायम हैं।

एक तश्तरी में थोड़े से जौ अथवा गेहूं कुचल कर रखो, तश्तरी को गरम करो अनाज पहले काला पड़ेगा और फिर जलने लगेगा और यदि तेज आँच बराबर जारी रहे तो वह जलकर कोयले हो जायेंगे। अब इन कोयलों को और भी तेज़ आँच से जलाओ। धीरे धीरे कालापन चला जायगा, क्योंकि अधिक टेम्प्रेचर की वजह से कार्वन हवा की ओक्सीज़न से मिलकर कारबन डि ओक्साइड बन गया। जब तमाम कालापन मिट जायगा तब वे दाने सफेद भस्मी हो जायेंगे। इस भस्मी में अनाज के खनिज क्षार मिले हैं। अब इसी प्रकार रोटी को जलाइये तो अन्त में उसकी भी सफेद भस्मी में वही खनिज क्षार मिलेंगे। दोनों एक ही चीज़ हैं। दोनों के गुणों में कोई तब्दीली नहीं हुई। इससे यह बात प्रमाणित हुई कि अनाज की रोटी बनाने से अनाज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के पौष्टिक तत्व नष्ट नहीं हुए। रोटी और बीयर का भेद इस प्रकार है:—

रोटी

पानी	... ...	३७·०	%
Albumen	...	८·१	,,
शक्कर	... ...	३·६	,,
Fat	... ...	१·६	,,
खनिज	... ...	२·३	,,
स्टार्च	... ...	४७·४	,,
		१००·०	,,

बीयर

पानी	. ...	८३·१२५	%
Albumen	...	०·६१३	,,
शक्कर	... ...	१·७७०	,,
खनिज	... ...	०·४१२	,,
Extractive	...	८·१९०	,,
अल्कोहल	...	५·८९०	,,
		१००·०००	

शराब उसी में से बन सकती है जिसमें स्टार्च या शक्कर होगी। प्रकृति के दिये हुए मधुर और पके हुए फलों को नष्ट करके हम शराब बनाते हैं जो भयंकर नशा है। यहां हम एक तालिका देते हैं जिससे यह प्रकट होगा कि कौन कैसी शराब बनाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन जाति बनाती पीती हैं	नाम शराब	किससे बनाते हैं
हिन्दू, मलाया निवासी	अर्क	चावल, सुपारी (छालियां)
ग्रीक, तुर्क	राकी	चावल
हिन्दू	ताड़ी......	नारियल, ताड़ी
मराठे	बोजा	Eleusine Corocana
चीनी	शमशू......	चावल
जापानी	सासे (Sacie)	चावल
पैसेफिक टापू	कैवा	Macropipeo.
मैक्सीकन्स (mexicans)	पुलक्ये Pulque	Agave
दक्षिणी अमेरिकन	चीका	मक्का, ज्वार
तातारी	कौमिस	घोड़ी का दूध
रूसी, पोल (ध्रुव) के निवासी	वोदका राका	आलू,
अबेसीनियन	ताल्ला Tallah	बाजरा, कोदई, ककुनी

इनके अलावा अन्य शराब भी जैसे करन्ट (Currant), रसभरी (Raspberry), रूहबर्ब (Rhubarb), गूजबेरी (Gooseberry), आदि विभिन्न देशों में बनाई जाती हैं परन्तु किसी भी फल में प्रकृति ने अल्कोहल प्रदान नहीं किया, मनुष्य ने उन्हें सड़ाकर अल्कोहल उत्पन्न किया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ५

सड़न

अंग्रेजी कोष में वाइन का अर्थ अंगूरों का सड़ा हुआ रस है। इसके बाद इसमें और भी अर्थ सम्मिलित कर लिये गये। प्राचीन काल में रस और शरबत को शराब समझते और कहते थे। इस रस और शरबत से नशा नहीं होता था, बल्कि मन और शरीर पुष्ट होते थे। आजकल रस और शरबत शराब से भिन्न वस्तु हो गये हैं और जो जितनी अधिक बढ़िया शराब पीकर नशा करता है वह उतना ही अमीर समझा जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि घर की बनी शराब से नशा नहीं होता, क्योंकि इसमें अल्कोहल कहां से आया, हमने तो मिलाया नहीं। अल्कोहल या स्प्रिट मिलाई नहीं जाती, वह तो सड़ान से स्वतः रासायनिक रूप में उत्पन्न होती और बनती है। हम इस बात को प्रयोग द्वारा बतलाते हैं:—

एक चौड़े मुंह की बोतल में दो बड़े चम्मच (Table Spoon) शक्कर डालो और बोतल का एक तिहाई भाग गुनगुने पानी से भर दो। खूब हिलाओ। फिर उसमें थोड़े से सूखे फेन या ताज़े फेन डाल कर और हिला दो। ऊपर से बोतल का मुंह कार्ड बोर्ड से ढकदो। इस बोतल में तीन ही चीज़ें हैं, स्प्रिट या अल्कोहल नहीं है। कुछ ही घंटों बाद उसमें अल्कोहल पैदा होने लगेगी। यह अल्कोहल कहां से आई? सड़ाब से। सड़ने के बाद शक्कर की अल्कोहल और कार्बन डाइऑक्साइड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बन गई। यदि हम बोतल को और भी १–२ घंटे तक देखते रहें तो उसमें सड़न की गन्ध आने लगेगी और छोटे छोटे बबूले उठते हुए नज़र आयेंगे। यदि हम ढक्कन हटाकर एक दियासलाई या बत्ती जला कर एक दम अन्दर ले जावें तो वह बुझ जायगी। इससे यह प्रमाणित हुआ कि बोतल में साफ़ हवा नहीं है, बल्कि कारबन डाइऑक्साइड है जिसने बत्ती को बुझा दिया। अब इस बोतल का थोड़ा मिश्रण डिस्टिलिंग यन्त्र में डाल कर परीक्षण करें तो अल्कोहल भी प्रमाणित हो जायगी।

ऐसे ही फेनों को एकत्र करके भट्टी में चुआ कर शराब बनाते और फिल्टर करके बोतलों में भरते हैं जैसा कि अगले प्रकरणों में वर्णन किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ६

अंगूरी शराब

शराब बनाने के लिये अंगूर जैसे श्रेष्ठ फल को भी नष्ट किया जाता है। शराब बनने पर अंगूर के बहुत से गुण नष्ट हो जाते हैं। यहां हम अंगूर और वाइन (अंगूर की शराब) के गुण अलग २ लिखते हैं:—

अंगूर		वाइन	
Water ...	80·0	Water	78·0
Salts ...	0·4	Salts	0·2
Albumen	0·7	Albumen ...	0·3
Sugar	13·0	Sugar ...	3·5
Cellulose	5·1	Alcohal ...	17·5
Tortaric Acid	0·8	Refuse ...	0·5
	100·0		100·0

अंगूरों में भी प्रकृति ने अल्कोहल नहीं दिया। अंगूर सर्वप्रिय फल है और उसकी अनेक जातियां हैं। योरोप में दो हज़ार प्रकार के अंगूरों की पौद होतीं है। और सभी देशों में लोग इसे जानते हैं। कवियों ने इसकी तुलना में अपनी कविता को रंग दिया है। अंगूर का कोई भाग व्यर्थ नहीं जाता, यह देखने में आकर्षक, खाने में स्वादिष्ट, और गुणों में पोषक तत्त्व है। काबुल के लोग इसे सुखाकर रखते और किसमिस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनाते हैं, और वहां के निवासियों का यही भोजन है। यह ऐसी ज़मीन में पैदा होता है, जहां अन्य पौद नहीं हो सकती। खूब रोशनी हो, पहाड़ी प्रदेश की ढालू और दरदरी मिट्टी हो। अंगूर के पौदे को जितना प्रकाश और हवा मिलेगी उतना ही वह पनपेगा।

अंगूर की ऊपरी तह पर खुर्दबीन से फ़ेन के सूक्ष्म परमाणु देखे जा सकते हैं। ये परमाणु यदि अन्दर की तह तक पहुंच सकते तो अंगूर में स्वतः अल्कोहल होती, परन्तु अंगूर छिलके में बन्द रहता है उस में न पानी प्रवेश कर सकता है न हवा, इसलिये ऊपरी सतह पर रहने वाले परमाणु अन्दर प्रवेश नहीं कर पाते। छिलका कट जाने अथवा फट जाने से जिन अंगूरों में ये प्रवेश कर लेते हैं वे अंगूर सड़ जाते हैं।

शराब बनाने के लिये पहले अंगूरों को मथ कर रस निकालते हैं। यह रस प्राचीन समय में पैरों से कुचल कर निकाला जाता था, अब मशीनों से निकाला जाता है। इस रस को मस्ट कहते हैं। मस्ट में अंगूर के समस्त गुण और पोषक गुण उपस्थित रहते हैं। फिर इसे सड़ाते और फेन उत्पन्न करके शराब चुआते हैं। सड़ने पर इसके सभी गुण नष्ट होजाते हैं और फिर अंगूर अंगूर नहीं रह जाता।

दुनियां में शराब बनाने के अनेक बड़े २ कारखाने हैं। पेरिस की नुमायश में दुनियां के प्रत्येक भाग से ९५०० क़लाल अपनी २ शराबों के ३५००० भिन्न भिन्न नमूने लेकर आये थे।

यदि हम अंगूरों का ताज़ा रस निकाल कर पियें तो वह एक शक्तिशाली पेय है। अंगूरों के रस को बहुत दिन तक सड़न से बचाने के कुछ उपाय हम यहाँ बतलाते हैं:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१. उसे थोड़ी गरमी पहुँचाई जाय। (६०°C. या १४०° F. से ऊपर तापमान की गरमाई में उसमें सड़न नहीं होगी!)

२. उसे ठंडक पहुँचाई जाय। (५° C. या ४०° F. से कम तापमान की ठंड में उसमें सड़न नहीं होगी।)

३. उसका शर्बत बनाकर रखा जाय, या उसे पकाकर सुखा लिया जाय।

४. उसमें इतनी शक्कर मिलाओ कि वह गाढ़ा शरबत हो जाय।

५. उसमें सड़न रोकने वाली चीज़ें मिलाई जाँय, जैसे Salicylic Boracic, Sulphurous, Benzoic, and Cinnamic acids.

६. रस के सार को अलग कर दिया जाय।

७. उसे मूर्छित करके रखदो जहाँ वायु का प्रवेश न हो।

प्राचीन काल में लोग इन उपायों को भली भाँति जानते थे, और जहां तक हमारा विश्वास है वे इन्हीं उपायों से रखे हुए रसों का पान करते थे। इनमें अल्कोहल न होने की वजह से इन्हें शराब नहीं कहा जा सकता। अब भी किन्हीं पाश्चात्य देशों में बिना सड़ाव की शराब बनाई जाती है, उसमें रस को थोड़ा गरम करके,.जिससे उसमें फेन के परमाणु मर जांय, हवाबन्द बोतलों में भरकर रख देते हैं। ऐसी शराब धार्मिक व्यवहार में लाई जाती है। मेसर्स फ्रेन्क रिट, मएडे एएड कम्पनी, केन्सिंगटन ने .इसी प्रकार की शराब बनाकर बहुत बड़ा व्यवसाय फैला लिया। वे डाक्टरी शराब भी बनाते हैं जिसमें अल्कोहल नहीं होता। स्वीटज़रलैंड में 'सेन्स-अल्कोहल वाइन कम्पनी' ने बिना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अल्कोहल की शराब बनाकर अपने देश में इसी को बर्तने की लोगों से प्रेरणा की है। ऐसा ही प्रयत्न Ararat, Victoia, Australia ने भी किया है। वहां इस प्रयत्न के सफल होने की पूर्ण आशा है क्योंकि वहां अंगूर बहुत पैदा होते हैं। इन देशों में ऐसी शराब बनाने के बहुत बड़े कारखाने हैं, अंगूरों के ढेरों को मशीन में कुचल कर रस निकालते हैं, फिर इस रस को नितार कर गरम करते हैं, गरम करके हवाबन्द बड़ी २ ज़ारों में रख देते हैं जिससे इनमें सड़न न हो। एक वर्ष बाद इसे खोल कर फिल्टर करके बोतलों में भर कर बाजार में बेचते हैं। इनका विज्ञापन ही यह होता है "Grape juice the Best Drink."

यहां हम एक प्रयोग मूर्छित करने का बतलाते हैं जिससे सड़न रुक सकती है:—

एक साफ बोतल में थोड़ा ताज़ा दूध भरो और गरम करो यहां तक कि वह उबलने लगे। बोतल में से भाप निकलेगी, भाप के साथ बोतल की हवा भी निकलेगी। गरमी से बोतल के या दूध के परमाणु मर जायंगे। दूध गरम करने से पहले, ऊनी या रुंयेदार कपड़े के दो चार छोटे टुकड़े चूल्हे पर गरम होने को रख देने चाहिये। ये अच्छी तरह गरम तो हो जांय किन्तु जलें नहीं, गरम होने से इनकी हवा निकल जायगी तथा इनके परिमाणु भी नष्ट हो जायेंगे। जब दूध उबल रहा हो, तब इन गरम कपड़ों के टुकड़ों को दूध की बोतल में डाट की तरह भर दो और बोतल को ठंडा होने के लिये रख दो। कपड़ों की डाट के मार्ग द्वारा हवा बोतल में प्रवेश कर सकती है, पर इसके सब परमाणु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपड़े में ही अटके रहेंगे, अन्दर दूध में नहीं जा सकेंगे। इस प्रकार दूध एक दो वर्ष तक मीठा और स्वादिष्ट बना रह सकता है। पर इतना ध्यान रखिये कि दूध को प्रति दिन एक बार थोड़ा उबाल देना चाहिये। यह सत्य है कि दूध नित्य उबाले जाने से एक दिन अवश्य गाढ़ा हो जायगा, परन्तु यह बिगड़ेगा नहीं, सड़ेगा नहीं। इसे आप चाहें जब खा सकते हैं, वही स्वाद रहेगा। हम अपने घरों में एक दो दिन भी दूध को दूध जैसा नहीं रख सकते क्योंकि हवा के परमाणु उसमें पहुंच कर उसे बिगाड़ देते हैं।

शराब बनाने का थोड़ा हाल हमें ज्ञात हो चुका है। शराबों में अल्कोहल की मात्रा एकसी नहीं होती, ९% से २४% तक होती है।

Claret शराब में सबसे कम अल्कोहल होती है इसलिये वह सबसे कमज़ोर शराब होती है। Port और Marsala शराब सबसे तेज़ होती हैं। जिस शराब.में १४% से अधिक अल्कोहल होती है, उसे तेज़ समझ लेना चाहिये। क्योंकि सड़ाव में से १४% अल्कोहल बन चुकने पर फेन बनने बन्द हो जाते हैं। ब्रिटिश वाइनें, जैसे Orange wine, Raspberry wine इनमें १० से १२% अल्कोहल होता है। सेव की Cider, और नास्पाती की Perry शराब में ५ से १०% तक अल्कोहल होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ७

चुआना

सभी प्रकार की अल्कोहली शराब चुआ कर बनाई जाती है। अर्थात् सड़न के बाद उस पदार्थ को भाप द्वारा पानी बनाते हैं। चुआना अथवा अर्क खींचना अति प्राचीन पद्धति है। कहते हैं कि सबसे पहले यह पद्धति चीनियों को ज्ञात थी। चीनियों से और लोगों ने सीखी। प्रसिद्ध रासायनिक आबूकेसिस को एक ऐसा अर्क तैयार करना पड़ा जो जीवन को अमर बनाने वाला था, उसी अर्क के लिए उसने इस पद्धति को चलाया। प्राचीन भभके का आकार-प्रकार बहुत ही भद्दे ढंग का था। ज्यों २ सभ्यता बढ़ती गई त्यों २ नये रूप बनते गये। आधुनिक काल में ये भभके मशीन की शक्ल में बनाये जाते हैं जिसमें आंख मींच कर अर्क खींच सकते हैं। बारम्बार आग ठीक करने और ठण्डा पानी बदलने का झंझट नहीं करना पड़ता। आयरलैंड और स्कॉटलैंड में इन यन्त्रों द्वारा अल्कोहल और ईथर* दोनों ही खींची जाती हैं। तेज अल्कोहल और ईथर में से स्प्रिट खींची जाती हैं। स्प्रिट खींचना बहुत सावधानी और फुर्ती का काम है। Coffey के कारखाने में इस प्रकार की आधुनिक मशीन लगी हुई हैं जिसमें दो अथवा अधिक आँच एक ही साथ खिंच जाती हैं। जितनी तेज अल्कोहल लेनी हो उतनी ही आँच खींची जाती हैं। Coffey की भट्टी एक स्टैण्डर्ड भट्टी मानी

* शराब की रूह को ईथर कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाती है। इस भट्टी में ६५° से ६७° तक की एकसी स्प्रिट* तैयार होती रहती है। चुआने के बाद शराब तैयार हो जाती है। उसे फिल्टर करके हवा बन्द बोतलों में भरकर रख देते हैं। पुरानी होने पर व्यवहार में लाते हैं, जितनी पुरानी होगी उतनी ही अच्छी होगी।

यदि कोई व्यक्ति प्रति दिन एक पिन्ट बीयर पीये तो एक वर्ष में दो गैलन अल्कोहल उसके पेट में पहुंचेगी।

बहुत सी स्प्रिट इस प्रकार बनती हैं:—

ब्रान्डी, वाइन से अथवा वाइन के बचे हुए तलछट और मसाले से बनती है। एक हजार गैलन वाइन में १००—१५० गैलन तक वाइन स्प्रिट निकल आती है। *रम*, शक्कर को जोश देकर और सड़ा कर बनाई जाती है। शक्कर के झाग और मैल में पानी मिलाकर सड़ा कर खींचने से साधारण रम तैयार होती हैं। *विस्की* और *जिन*, अनाज को सड़ा कर बनाते हैं, लेकिन आलू, शक्कर, शक्कर का मैल और चुकन्दर की जड़ से भी बनती है। सौ पौंड माल में चालीस पौंड प्रूफ़ स्प्रिट बैठती है। एक बुशल माल्ट अनाज में दो गैलन प्रूफ स्प्रिट बैठती है। आठ बुशल सड़े हुए माल्ट में बीस गैलन प्रूफ स्प्रिट बनती है।

ब्रान्डी को डाक्टरी उपयोग में इसलिए लाते हैं कि इस के गुण डाक्टरी उपचार में आ सकने योग्य हैं। और इस बात की चेष्टा की जा रही है कि ब्रान्डी के गुण और उपचार सर्वत्र समान हो जांय जिससे डाक्टरों और मरीज़ों को 'अल्कोहलशक्ति' का निर्धारित ज्ञान हो सके।

* यहां स्प्रिट का अर्थ शराब ही है, जलाने की स्प्रिट इससे भिन्न होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और भी कुछ पदार्थ हैं जो ब्रान्डी के समान ही लाभ करते हैं और जो अल्कोहल के दोष से रहित हैं। डाक्टर जे० जे० रिज बेहोशी, धड़कन और दर्दों को हरने के लिये ब्रान्डी के बदले में इन उपायों का प्रयोग बताते हैं:—

१. पानी, जितना गरम पिया जा सके, थोड़ी शक्कर मिलाकर या ऐसा ही चूंस चूंस कर घूंट घूंट पिये। ठंडा पानी भी चुस्की ले लेकर पी सकते हैं। दिल की चाल को बढ़ाकर ठीक करता है।

२. अदरक, ६ माशे अदरक को कुचल कर दो छटांक उबलते हुए पानी में डालो, और उतार कर छान लो। फिर थोड़ी शक्कर मिलाकर गरम २ घूंट पियो।

३. पोदीने को कुचल कर उबलते पानी में डालो। छान कर थोड़ी शक्कर मिलाकर गरम २ घूंट पियो।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ८

अल्कोहल और पानी

अल्कोहल देखने में पानी के समान है, परन्तु इसके गुण उससे सर्वथा भिन्न हैं। पानी का जो उपयोग हो सकता है, वह अल्कोहल का नहीं हो सकता। यदि पानी का घनत्व १ मान लिया जाय तो अल्कोहल का घनत्व ·८०९५ होगा। इससे यह सिद्ध हुआ कि पानी से अल्कोहल हल्की और पतली है।

एक काँच की ट्यूब में थोड़ा अल्कोहल भरो और किसी हल्के रंग से रंग दो। एक दूसरी ट्यूब में थोड़ा पानी भरो और इसमें पहली ट्यूब में से धीरे से अल्कोहल डालो। अल्कोहल पानी में डूबेगी नहीं, पर यदि उसे हिला कर मिलाओ तो मिल जायगी। चूँकि एक चीज़ हल्की है दूसरी भारी, इसलिये एक पिन्ट अल्कोहल और एक पिन्ट पानी मिल कर एक क्वार्ट नहीं हो सकेगें। ऐसा १०० क्वार्ट मिश्रण बनाने के लिये ४९ क्वार्ट पानी और ५५ क्वार्ट अल्कोहल मिलाना पड़ेगा। यों तो ४९ और ५५ मिलकर १०४ होते हैं। परन्तु वह मिश्रण १०० ही बनेगा। दोनों तरल वास्तव में एक दूहरे में घुले हैं, मिले नहीं।

यदि हम काँच के एक गिलास में बराबर बराबर मात्रा में अल्कोहल और पानी मिलावें और अच्छी तरह हिलादें तो हमें तीन बातें दीखेंगी।

१. छोटे २ बबूले निकल रहे हैं। पानी में हवा मिली रहती है, और अल्कोहल के मिश्रण से हवा के बबूले बनने शुरू होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२. दोनों के मिलने से गरमी उत्पन्न होगी और गिलास छूने से कुछ गर्म प्रतीत होगा।

३. दोनों तरल पदार्थ बराबर बराबर हैं फिर भी गिलास में उन्होंने दूनी जगह से कम जगह घेरी है।

सब पदार्थ अपने २ कार्य में अच्छे हैं। परन्तु विपरीत कार्य करने से वे विष के समान हो जाते हैं। पानी पेट और अंतड़ियों के लिये अच्छी चीज़ है और वह दिन भर में बहुत सा हमारे पेट में पहुँचता है, परन्तु यह फेफड़ों के लिये हानिप्रद है। यदि यह फेफड़ों में रम जाय तो कुछ ही मिनटों में मृत्यु हो जायगी। Carbon Dioxide पेड़ों के पनपने के लिये जीवन मूल है, पर यदि कोई जानवर इसमें सांस ले तो वह समाप्त हो जायगा। अल्कोहल भी ऐसी ही चीज़ है, यह हमेशा भयानक और ख़तरनाक है।

इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिये कि अल्कोहल जितनी भी अधिक पी जायगी उतनी ही यह विष है।

अल्कोहल में यह विशेषता है कि वह किसी भी वस्तु को सख्त और बेघुली बनाए रखेगी। हम अजायब घरों और डाक्टरी कालिजों में बड़ी २ काँच की ज़ारों में मरे हुए जानवरों, पक्षियों और मनुष्य शरीर के हिस्सों को अल्कोहल में डूबे हुए देखते हैं। ये चीजें कई वर्ष तक बिना बिगड़ी बनी रहती हैं। एक बार एक डाक्टर ने कहा था 'कि यदि तुम किसी मृतक शरीर को चिरकाल तक रखना चाहते हो तो उसे अल्कोहल में डुबो कर रखो, पर यदि तुम जीवित शरीर को मारना चाहते हो तो उसे अल्कोहल पीने को दो।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पांच कांच की ट्यूब लो, एक में मछली, दूसरी में मांस, तीसरी में रोटी, चौथी में शक्कर और पाँचवी में मुनक्के डाल कर उनमें अल्कोहल भर कर कस कर डाट लगादो, और बहुत दिनों तक रखा रहने दो। आप जब भी देखेंगे सब चीज़ें ज्यों की त्यों पायेंगी, घुलेंगी नहीं। यदि हम भोजन में अल्कोहल का व्यवहार करें तो वह भोजन के पचने में बाधा डालेगी।

दो ट्यूबों में नमक डालो और एक में पानी और दूसरी में अल्कोहल भरदो। थोड़ी देर बाद देखने से पता लगेगा कि पानी ने नमक को घोल दिया है, अल्कोहल ने नहीं। इसी प्रकार शक्कर को भी देखो। शक्कर पानी में घुल जायगी, अल्कोहल में नहीं।

कांच के दो गिलास लो, एक में पानी भरो दूसरे में अल्कोहल, दोनों में मिश्री की एक एक डली को रंग कर तागे से अधर लटका दो। ध्यान से देखते रहो कि पानी ने रंग भी घोला है और मिश्री भी। किन्तु अल्कोहल ने रंग को घोला, मिश्री को नहीं

अल्कोहल भोजन को पचने से रोकती ही नहीं बल्कि वह घुले हुए भोज्य रस को अलग भी कर देती है। एक गिलास में नमक का घोल बनाओ। पानी को गरम करके उसमें नमक घोलो; वह घुल जाय तब और डालो, जब तक घुलता जाय तब तक घुलाते रहो, जब घुलना बन्द हो जाय और नमक तली में बेघुला बैठने लगे, तब घोलना बन्द कर दो। ऐसे घोल को ठंडा करके नितार कर दूसरे गिलास में ले लो। अब यदि इस घोल में थोड़ी अल्कोहल डालो तो देखोगे कि घुला हुआ नमक अलग होकर नीचे गाद की भांति बैठ गया है। जो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काम पानी ने किया था उस काम को अल्कोहल ने विफल कर दिया है।

दो गिलास और लो। एक में अल्कोहल भरो और दूसरे में पानी। दोनों में अंडे की सफेदी डालो। अल्कोहल में अंडे की सफेदी सिमट कर कड़ी हो जायगी, पानी में वह थोड़ी घुलेगी। पानी में गरम करके अंडे को पकाते हैं, तब भी वह कड़ी तो हो जाती है परन्तु सुपच्य रहती है। अंडे को धीमी आँच से इतना पकाना चाहिये कि वह अधिक कड़ा न हो जाय। बहुत तेज १८०° F. और २१२° F. पकाने से वह कड़ा और अपच्य हो जाता है। इन प्रयोगों से यह प्रमाणित होता है कि अल्कोहल पानी की तुलना में भोजन नहीं अपितु विष है। वह पचे हुए भोजन में भी बाधा डालता है। प्रकृति ने हमें पानी दिया है और हमें जब २ प्यास लगती है तब तब हम पानी पीते हैं, अन्य पेय उसकी बराबरी नहीं कर सकते। अधिक पानी पीना पेट को निर्मल और शुद्ध ही करता है। जिस प्रकार प्रकाश और अंधेरा, गरमी और ठंडक, आग और पानी एक दूसरे के विपरीत और शत्रु हैं उसी प्रकार अल्कोहल और पानी परस्पर में विपरीत शत्रु हैं।

जिस प्रकार हवा हमें जीवित रखने के लिये आवश्यक है उसी प्रकार पानी भी आवश्यक है। बिना पानी हम जीवित नहीं रह सकते। मनुष्य शरीर के लगभग ६० प्रतिशत अवयव पानी हैं। पानी रगों और पुट्ठों के लिए परमावश्यक है। हड्डी में २२ प्रतिशत, नसों में ७६ प्रतिशत, रक्त में ७९ प्रतिशत, अंतड़ियों के रस में ९७ प्रतिशत पानी का अंश रहता है। यदि हमें पेय पदार्थों में केवल पानी ही मिलता रहे तो हमारा शरीर कभी रोगी नहीं हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बार अप्रैल सन् १८७७ में रॉन्डा पहाड़ियों की एक खान में चार आदमी और एक लड़का कैद करके बन्द कर दिये गये। उन्हें खाने को कुछ नहीं दिया गया, केवल पानी का एक स्रोत उसमें बहता था, इनमें से एक आदमी के पास चोरी से शराब की एक बोतल छिपी रह गई थी। दस दिन के बाद जब उन्हें छोड़ देने के लिये निकाला गया तो पता चला कि उस व्यक्ति ने पानी को छुआ भी नहीं शराब ही पी, वह आठवें दिन ही मर चुका था। शेष सबने पानी ही पानी पिया और वे जीवित निकले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ६

अल्कोहल एक विष है

अल्कोहल पानी के विपरीत ही नहीं, बल्कि एक तीव्र विष है। भोजन में यह गुण होना चाहिये कि वह शरीर का पोषण करे, नसों को बढ़ावे और शक्ति उत्पन्न करे। लेकिन विष में यह गुण नहीं होते। भोजन जीवन देता है, विष लेता है। डाक्टर लेथेबे विष की परिभाषा इस प्रकार करते हैं—'जो खाद्य पदार्थ जीवित शरीर की नसों की चेतन शक्ति को नष्ट करता है अथवा जीवन का ह्रास करता है वह विष है।'

अल्कोहल के विषैले प्रभाव इस प्रकार हैं:—

१. नशा करती है। मस्तिष्क में उत्तेजना और व्याकुलता उत्पन्न करती है, मस्तिष्क के विकास को रोकती है, ज्ञान तन्तुओं को समेटती है।

२. नसों और पुट्ठों की छोटी सेलों को नष्ट करके उनका बढ़ाना रोक देती है।

३. आक्सीज़न के प्रचार को रोकती है जिससे चरबी बढ़ने लगती है।

कुछ लोग कहते हैं कि शराब नशा करती है इसीलिये इसे विष कहते हैं, शराब तो सोसायटी की एक दिलचस्प चीज़ है यह विष नहीं हो सकता। किन्तु हम वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा इसकी अन्य विषों से तुलना करके बतायेंगे:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चार ट्यूबों में बराबर बराबर कच्चे अंडे की सफेदी डालो। एक ट्यूब में Nitric acid, दूसरी में Carbolic acid, तीसरी में Corrosive Sublimate और चौथी में अल्कोहल भरो। सबको हिला हिला कर रखदो। थोड़ी देर बाद देखोगे कि सब में अंडे की सफेदी एक ही तरह से जम गई है। यद्यपि चारों पदार्थ भिन्न भिन्न गुणों वाले हैं परन्तु सबका रासायनिक प्रभाव एक है। इससे यह सिद्ध हुआ कि अल्कोहल भी शेष तीनों जैसे गुण रखती है। ये तीनों चीज़ें विष हैं। इसलिये अल्कोहल भी विष हुई। पौदों और पशु पक्षियों पर अल्कोहल के अनेक प्रयोग करके देखे गये हैं और बराबर यही प्रमाणित हुआ कि अल्कोहल विष है। अमेरिकन डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचा-र्डसन ने एक बार मडूसा मछली पर यह प्रयोग किया। क्यूगार्डन्स के तालाब विक्टोरिया रेजिया में पानी का टेम्प्रेचर ८०° F. रक्खा जाता है, उसमें मडूसा मछली पलती हैं। पानी के दो बर्तन लिये गये, प्रत्येक में १००० ग्रेन तालाब का पानी भरा गया। एक बर्तन में एक ग्रेन अल्कोहल डालकर अच्छी तरह मिलादी गई। फिर दोनों में एक एक मडूसा मछली डाली गई। अल्कोहल का तत्काल प्रभाव देखने में आया, दो मिनट में ही मछली की हरकतें जो एक मिनट में ७४ गिनी गई थीं बन्द हो गईं, और वह नीचे बैठती गई। वह बहुत सिकुड़ गई थी। पांच मिनट के बाद वह बिल्कुल पेंदी में गिर पड़ी, और जड़वत् होगई। इसे तुरन्त निकाल कर, एक दूसरे बर्तन में जिसमें खाली टैन्क का पानी भरा था, डाला गया और २४ घन्टे तक उसी में पड़ी रहने दी गई, पर वह अच्छी नहीं हुई। जबकि दूसरे बर्तन वाली मछली बराबर एक सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरकत करती और खेलती रही। इससे यह प्रमाणित हुआ कि १०००वें पानी में अल्कोहल का १ वाँ भाग भी जीवन के लिये कितना भयानक है। डाक्टर रिचर्डसन कहते हैं कि मडूसा पर यह प्रयोग मैंने अनेक प्रकार से करके देखा, मनुष्यों पर भी करके देखा, प्रत्येक अवस्था में अल्कोहल का विषैला प्रभाव हुआ।

डाक्टर जे० जे० रेजे ने वनस्पतियों पर अल्कोहल के प्रयोग किये थे। उन्होंने बीजों को अल्कोहल और पानी के समीप रखा और धूप रोशनी तथा खाद की एकसी व्यवस्था की। परन्तु अल्कोहल ने उन्हें पनपने नहीं दिया, अधिक अल्कोहल के कारण वे मर गए। डाक्टर एफ़० डब्लू० डेवल्यन ने प्याज पर प्रयोग करके देखा। उन्होंने प्याज को पानी और अल्कोहल दोनों मिला कर बोया। अल्कोहल ने प्याज को बढ़ने नहीं दिया। यदि अल्कोहल अधिक डाली गई तो प्याज बिल्कुल ही मर गई। आलू और गेहूं पर भी इसी प्रकार के प्रयोग किये गये और सब का एक ही परिणाम रहा। सड़न में से १४% से अधिक अल्कोहल उत्पन्न नहीं होती, सो भी इसी कारण से; क्योंकि जब १४% अल्कोहल बन चुकती है तब वह फेनों की सेलों को मार देती है।

अल्कोहल के विष होने का सबसे मुख्य प्रमाण तो यह है कि वह मारती है। अल्कोहल पर आज तक जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं, वे सभी इसे विष सिद्ध करती हैं। ब्रिटिश मेडीकल एशोसियेशन के सन्मुख अपना निबन्ध पढ़ते हुए डाक्टर आर्चडॉल रेड ने कहा था 'कि मेरी दूसरी तज़वीज़ यह है कि अल्कोहल एक विष है और इससे प्रति वर्ष अनेक मृत्यु होती हैं, मुझे आशा है कि मेरी इस तज़वीज पर वाद-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विवाद नहीं किया जायगा क्योंकि सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में इसका अनुभव करते हैं। बीमा कम्पनियों ने इसके आँकड़े भी दिये हैं। मैं तो एक ही बात दोहराऊँगा कि जो अधिक सुरापान करते हैं वे अधिक विष पीते हैं।'

डाक्टर एवर्ट, सिनियर फ़िज़िशियन एट सेन्ट जार्ज हॉस्पिटल, ने अपने लेक्चर में कहा था कि 'अल्कोहल का नाम उन विषों में सबसे पहले दर्ज़ है जिन्हें जनता अधिक से अधिक खा पी सकती है।' डाक्टर प्रोफेसर सिम्बुडहेड स्पष्ट कहते हैं कि 'मैं बहुत काल से इस बात का अनुभव करता आया हूँ कि अल्कोहल केवल शारीरिक विष ही नहीं है बल्कि वह रोग उपचार में जब अन्य उपचारिक विषों के साथ दिया जाता है तब वह उन सब विषों के प्राकृतिक गुणों को नष्ट कर डालता है और उन्हें और भी अधिक क़ातिल विष बना कर रोगी को स्वस्थ करने में बाधा डालता है।'

स्वर्गीय डाक्टर नॉरमन कर ने हिसाब लगाकर बताया था कि 'अल्कोहल के उपचार और आक्रमण से एक वर्ष में ४०,००० व्यक्ति मरे थे। यों प्रतिवर्ष १७०० मृत्यु की खानापूरी तो सरकारी रजिस्टरों में भी दर्ज होती है।' पुराने कुछ पत्रों की सूचनाएँ देखियेः—

Daily Chronicle, (२७ जनवरी १८९९) 'वाल्टर लेघ पेम्बरटन, आयु ४५ वर्ष, एक बीमा कम्पनी के इन्सपेक्टर, एक होटल के कमरे में मरे पाये गये। ज्यूरी ने अधिक शराब पीने का परिणाम निर्णय किया।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Daily Chronicle, (२ फरवरी १८९९) 'एडवर्ड जी० टॉमसेट, एक ट्रेन में मरे पाये गये। डाक्टर निकल ने पोस्टमार्टम करके बताया कि अधिक शराब ने इन्हें मार डाला।'

Westminister Gazette, (२६ मार्च १९०२) 'एक ९ वर्षीय लड़का जिसका नाम थोमस टरने था, अपने पिता की रखी हुई शराब चखने के विचार से पीते ही मर गया।'

इसी में दूसरा समाचार यह भी था, 'लैएडक्वार्ट में एक जर्मन मज़दूर ने होड़ में आकर तीन गिल 'नीट ब्रान्डी' पीली। पीते ही मर गया।'

Daily Chronicle, (२५ मई १८९९) 'मिस्टर जी० पी व्याट, इंगलैंड के कोरोनर ने घोषणा की है कि १० में से ९ मृत्यु जिनकी मैंने छानबीन की अल्कोहल के कारण थीं ।

Western Daily Mail, (२३ जून १८९९) 'मिस्टर आर० जे० राइस को एक तीन वर्ष के बच्चे मेरी-ग्वान-ईवान्स की मृत्यु की जांच करते समय ज्ञात हुआ कि उसने अपने पिता की शराब रसोई में खेलते हुए पी ली थी।'

Daily Chronicle (४ नवम्बर १८९९) 'डाक्टर ए० एम्ब्रोस ने एक ३१ वर्षीय अध्यापिका एलिजाबेथ की लाश की जांच करके ज्यूरी को बतलाया कि अल्कोहल के विष से यह मृत्यु हुई है।'

Daily Chronicle (११ अक्टूबर १९०४) 'न्यूयार्क शहर में पिछले ११ दिनों के अन्दर २५ आकस्मिक मौत हुई हैं। जाँच करने पर पता चला कि एक दुकानदार ने दुकान उठाने के लिये विस्की को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सस्ती बेच दिया। लोगों ने खरीद कर पी। पुलिस ने पता चलाया कि यह विस्की लकड़ी की सेलों में बनाई गई थी जिससे इसमें लकड़ी की अल्कोहल का अंश आ गया था। यह विस्की चोरी से बनी थी। काफी दौड़धूप के बाद बनाने वाले पकड़े गये हैं।'

सन् १९२१ की बम्बई के एक शराबी रईस की घटना है:—

'एक प्रख्यात क्रोड़पति का इकलौता पुत्र करोड़ों की सम्पदा और एक १८ वर्षीय सगर्भा स्त्री को छोड़ कर मरा। मृत्यु के समय उसकी आयु २४ वर्ष की थी। उसका शरीर काला, रूखा और अत्यन्त घृणित हो गया था। मुख से साफ शब्द नहीं निकलता था, गद्गद् वाणी से हकला कर बोलता और उसका प्रति क्षण प्रत्येक अङ्ग कांपता था।'

सन् १९२३ की एक शराबी राजा की घटना इस प्रकार है:—

'........... के अत्यन्त सुन्दर राजा २६ वर्ष की आयु में मर गये। उनका शरीर पीला हल्दी के समान हो गया था, नेत्र भी पीले थे, जिगर और गुर्दे फूल कर सूख गये थे, एक एक बूंद पेशाब कष्ट से उतरता था, शरीर सूख कर हड्डी का ढांचा रह गया था, दस्त दो चार दिन तक न उतरता था। फेंफड़ा गलकर सड़ गया था। पाँच पाँच मिनट में ज़ुबान ऐंठती थी और वे शराब के सिवा कुछ न पीते थे, वे बचने के लिये आतुर थे, पर चीख़ २ कर प्राण निकल गये!!!'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १०

अल्कोहल का प्रयोग

अभी तक हमने यही देखा है कि अल्कोहल बनाने में अनेक खाद्य पदार्थों को नष्ट किया जाता है और यह भयानक विष है। अब प्रश्न यह उठता है कि अल्कोहल किसी प्रयोग में आ भी सकता है या नहीं? इसलिये हमें इसके गुणों का भी परीक्षण करना चाहिये।

अल्कोहल भी काम में आती है। यह विष तो अवश्य है परन्तु भोजन बना लेने पर। वैज्ञानिक प्रयोगों में यह बहुत अच्छी वस्तु है। अल्कोहल के विरुद्ध जितने भी आन्दोलन चले हैं सभी ने इस नशीली चीज़ को पीने और भोजन बना लेने का विरोध किया है, पर बाहरी उपचारों का नहीं। विज्ञान हमें बताता है कि अल्कोहल जीवित शरीर के बाहरी प्रयोग में आ सकता है, अन्दर नहीं।

अल्कोहल और पानी के भेद :

अल्कोहल	पानी
१७२° F. पर उबलती है।	२१२° F. पर उबलता है।
जमती नहीं।	जम जाता है।
आसानी से आंच पकड़ लेती है।	नहीं जल सकता।
आँच को भड़काती है।	आँच को बुझाता है।
ईथर की गन्ध आती है।	गन्धरहित होता है।
जलने योग्य है।	जलने योग्य नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चमड़ी को जलाकर झुलसा देता है ।	चमड़ी को शीतल और ताज़ा बनाता है !
जीवन के लिये अनावश्यक है ।	जीवन के लिये आवश्यक है ।
बीजों को मार देता है ।	बीजों को उपजाता है ।
भोजन को घोलती नहीं ।	भोजन को मुलायम बनाता है ।
विष है ।	स्वयं भोजन है ।
नशीली है ।	नशा नहीं है ।
शरीर को हानि पहुंचाती है ।	शरीर को लाभ पहुंचाता है ।
मल को रोकती है ।	मल को निकालता है ।
किसी भी भोजन में पैदा नहीं होती ।	भोजन में मिला रहता है ।
प्यास पैदा करती है ।	प्यास बुझाता है ।

अल्कोहल में राल, चमड़ी, गोंद कपूर आदि चीजें घुल सकती हैं इसलिये इससे वार्निस, पॉलिश और सेन्ट तैयार होते हैं । बाज़ारों में जो उड़ने वाले बढ़िया सेन्ट बिकते हैं उनमें अल्कोहल ही उड़ती है । अल्कोहल में बहुत सी चीज़ों को डुबोकर रख सकते हैं । स्कूलों, कॉलिजों, अस्पतालों और म्युज़िमों में जो मरे हुए जानवर तथा शरीर अंग रक्खे रहते हैं, वे अल्कोहल के कारण बिगड़ने नहीं पाते ।

अल्कोहल का दूसरा सुन्दर उपयोग ईथर बनाना है । ५ भाग तेज अल्कोहल और ६ भाग तेज गन्धक के तेजाब को गरम करो तो भाप बनेगी । इस भाप को नली द्वारा किसी बरतन में संग्रह करते जाओ यही ईथर है । ईथर बनाना बहुत ही नाज़ुक है सावधानी से बनानी चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्लोरोफार्म जो शस्त्र चिकित्सा में मनुष्य समाज के लिये सबसे अधिक उपयोगी वस्तु है, अल्कोहल से बनता है। अल्कोहल में Bleaching Powder मिलाकर चुआलो। फिर इसे शुद्ध कर लो, और दुबारा चुआओ। ऐसा कई बार करो। यही क्लोरोफ़ार्म है।

Cloral और इसी प्रकार की अन्य औषधियां जो डाक्टरी काम में अधिक उपयोगी साबित हुई हैं सब अल्कोहल से बनती हैं।

तीसरी खास चीज़ अल्कोहल से Methylated Spirits बनती हैं जो नित्य बहुत काम में आती हैं। मैथेलेटेड स्प्रिट में ९० % अल्कोहल और १० % Wood Spirit होती है। इस Wood Spirit में Paraffin या मिट्टी के तेल का अंश होता है, इसलिये स्प्रिट पीने के काम में नहीं आती है। अल्कोहल से टिन्चर भी बनते हैं। अल्कोहल मोटर और मोटर साइकिलों में पेट्रोल के बदले में भी काम आ सकती है।

संसार में तरल पदार्थों में सबसे प्रधान पानी है, पानी के बाद दूध, दूध के बाद गन्धक का तेजाब, तेजाब के बाद अल्कोहल है। अल्कोहल अनेक रूप में अनेक प्रकार से बनती और व्यवहार में आती है। पाठकों में से बहुत कम अल्कोहल के इस विस्तृत क्षेत्र को जानते होंगे।

यहाँ हम अल्कोहल के तीन फॉरमूले बताते हैं:—

Methyl Alcohal or Wood sprit	$C H_3 HO$.
Ethyl Alcohal	$C_2 H_5 HO$.
Amyl Alcohal or Potato spirit	$C_5 H_{11} HO$.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीनों प्रकार की अल्कोहलों को टीन की प्लेटों में रखकर नीचे आंच जलाओ तो तीनों जलने लगेंगी। पहली का धुंआ रंगरहित होगा, दूसरी में थोड़ी चमक होगी, तीसरी में अधिक चमक और धुंआ होगा। यह सब कार्बन की कम ज्यादा मात्रा के कारण है। इनमें से पहली और तीसरी पीने में व्यवहृत नहीं होतीं, दूसरी होती है। अब भोजन और अल्कोहल की तुलना देखिये:—

भोजन	अल्कोहल
१. एकसी मात्रा सदैव एकसा ही प्रभाव करती है।	१. एकसा प्रभाव करने के लिये प्रतिदिन मात्रा बढ़ानी पड़ती है।
२. स्वाभाविक आहार मात्रा से अधिक लेने की इच्छा नहीं होती।	२. इसकी आहार इच्छा कभी तृप्त नहीं होती, बढ़ती ही जाती है।
३. अचानक भोजन न मिलने पर स्नायुमंडल डूबता नहीं।	३. इसका अभ्यास हो जाने पर फिर एक बार न मिलने पर स्नायुमंडल डूब जायगा।
४. खाना देर तक खुला रखा जा सकता है।	४. अल्कोहल खुली नहीं रह सकती।
५. खाना शरीरमें जमा होता है।	५. अल्कोहल शरीर में जमा नहीं होती।
६. भोजन में पोषक तत्व हैं।	६. अल्कोहल में नहीं।
७. भोजन स्वस्थ शरीर का	७. अल्कोहल रोगी अवस्था में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आहार है।

८. चिकित्सक स्वस्थ अवस्था में भोजन त्यागने की सम्मति नहीं देगा।

९. खाली पेट में भोजन कर सकते हैं।

१०. युवावस्था में खूब खाओ।

११. भोजन खाने के पश्चात कभी सरूर नहीं होता।

१२. भोजन की मात्रा, मांस-पेशियों की बढ़ती के अनुसार बढ़ती है।

काम में लाते है।

८. चिकित्सक स्वस्थ अवस्था में अल्कोहल कभी न पीने देगा।

९. खाली पेट अल्कोहल नहीं ले सकते।

१०. युवावस्था में अल्कोहल छूना भी नहीं चाहिये।

११. पीने के बाद सरूर होता है।

१२. अल्कोहल की मात्रा मांस-पेशियों के क्षीण होने पर बढ़ती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ११

पानी भोजन है

भोजन का अधिक अंश पानी है। इससे शरीर के बहुत से अवयव बढ़ते और बनते हैं। शरीर में निम्न प्रमाण से पानी होता है:—

	Water P. C.		Water P. C.
Bones.	22	Skin	72
Fatty Tissues	30	Brain	75
Cartilage	55	Muscles	76
Liver	69	Lungs	79
Marrow	70	Kidneys	83
Blood	79	Intestinal Juice	97
Bile	86	Tears	98
Pancreatic Juice	88	Gastric Juice	99
Chyle	93	Saliva	99½
Lymph	96	Sweat	99½

एक स्वस्थ युवा आदमी चौबीस घंटों में, चमड़ी, फेंफड़े, और गुर्दों के द्वारा ८० से १०० औंस तक पानी खोता रहता है। इस कमी की पूर्त्ति के लिये प्रतिदिन ३॥ से ५ पिन्ट तक पानी की आवश्यकता है। अल्कोहल इस कमी का सूक्ष्मांश भी दूर नहीं कर सकती। प्रकृति ने पानी के सिवा अन्य कोई पदार्थ इस कमी को पूरा करने के लिये नहीं बनाया। यदि हम प्यास बुझाने के लिये, दूध, कोको, कॉफी, चाय,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेमनेड आदि पीते हैं तो इन पेय पदार्थों में जो पानी मिला है, वही प्यास को बुझाने में सफल होता है अन्य अवयव नहीं। यह कहा जा सकता है कि जितना पानी निकल जाता है उतना पानी तो हम कभी पीते भी नहीं। परन्तु यह बात नहीं है, हम जितना असली पानी पीते हैं उतना तो पीते ही हैं, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में भी भोजन आदि के द्वारा भी कुछ पानी पेट में पहुंचता है। नीचे हम भोजन में पानी का अंश बताते हैं :—

	Water P. C.		Water P. C.
Oat Meal	5	Bananas	74
Butter	10	Fish	74
Barley Meal	14	Potatoes	75
Haricot Beans	14	Grapes	80
Lentils	14	Parsnips	81
Maize	14	Beetroot	82
Peas	14	Apples	83
Wheaten flour	14	Peaches	85
Rice	15	Gooseberries	86
Figs	17	Milk	86
Bacon	22	Oranges	86
Cheese	34	Cabbages	89
Bread	40	Carrots	89
Walnuts (fresh)	44	Tomatoes	89
Eggs	72	Mushrooms	90
Fowl	73	Onions	91
Lean meat	73	Celery	93

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Watercress	93	Sea Kale	93
Pears	94	Rhubarb	95
Vegetable Marrow	94	Cucumber	96
		Lettuce	96

यह न समझ लेना चाहिये कि ऊपर वर्णित पानी का अंश इन पदार्थों में पानी के रूप में ही है। यह भिन्न २ अंगों और अवयवों के सूत्रों में आबद्ध है। अब यह भली भांति प्रकट हो जाता है कि पानी जीवन के साथ कितना अधिक सम्बन्धित है। पानी अङ्गों का निर्माण करता, उन्हें पुष्ट करता और स्वच्छ करके, उनके मल को निकाल कर बाहर फेंक देता है। शरीर के प्रत्येक भाग से—नसों में से, रक्त नालियों में से, अन्तड़ियों में से, मेदे में से, पेट में से, मस्तिष्क में से, मल छूटता रहता है। सभी अंग नित्य स्वच्छ होते रहते और मल को त्यागते रहते हैं। यदि यह मल न निकले तो हम बीमार पड़ जाँय। एक मात्र पानी ही इस मल को बहाकर शरीर से बाहर करता है। अधिक मलावरोध से मृत्यु तक हो सकती है। हमारे शरीर में से प्रति दिन यदि ३ पिन्ट पानी निकलता हो तो इसमें 1½ औंस मल जरूर मिला होगा।

अल्कोहल इस क्रिया को नहीं कर सकती। बल्कि वह शरीर के प्रत्येक अवयव को अवरोध कर देगी। शराबियों के गुर्दे प्रायः रोगी और बढ़े हुए होते हैं। ये गुर्दे झुर्रीदार और खुरदरे होते हैं। इनका रंग पीला ज़र्द होता है।

स्वस्थ गुर्दे का रंग गहरा लाल होगा। यह सम्भव नहीं कि प्रत्येक शराबी का पहले गुर्दा ही बिगड़े, क्योंकि शराब पहले किसी और अवयव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को भी पकड़ लेती है और फिर धीरे २ वहां तक पहुंचती है।

हमारे शरीर से चौबीस घन्टों में हमारे फेफड़ों से छै छटांक पानी सांस की भाप द्वारा निकलता है। इस पानी में फेफड़ों का मल कार्बन-द्विओषित के रूप में मिला रहता है। शरीर का दूषित पानी पसीना बनकर भी निकलता रहता है। समस्त शरीर में दो लाख श्वेत-ग्रन्थियां हैं। परिपूर्ण शरीर में पसीना बहने की नाली चौथाई इंच लम्बी होती है। शरीर की सब नालियों को मिलाकर लम्बा रख दिया जाय तो इनकी लम्बाई १० से २० मील लम्बी तक हो सकती है चमड़ी में से भाप बन कर प्रति दिन दो पौंड पानी उड़ता है। यदि चमड़ी इतनी क्रिया नहीं कर पाती तो इस क्रिया का भार फेंफड़ों और गुर्दों पर आ पड़ता है। जिस प्रकार फेफड़ों और रक्त के लिये ताज़ा हवा की आवश्यकता है, उसी प्रकार चमड़ी को ठीक क्रिया में रखने के लिये शरीर के भीतर और बाहर स्वच्छ और अधिक पानी की आवश्यकता है। इस तमाम पानी का सिंचन, जो गुर्दों, फेफड़ों और चमड़ी के द्वारा बाहर निकलता है, रक्त में से होता है, क्योंकि रक्तवाहिनी नालियों में रक्त, इन तीनों अवयवों के पास से होकर गुजरता है। इस प्रकार रक्त निरन्तर व्यय होता रहता है, इस व्यय की पूर्ति शरीर में पानी को अधिक मात्रा में पहुंचाने से हो सकती है। इसीलिये पानी को आहार में गिना गया है।

शरीर के निम्न भागों में रक्त की कमी इस प्रकार देखी जा सकती है:—

१. फेंफड़े	अधिक पानी अधिक कारबनडिओक्साइड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

	अधिक पानी
२. चमड़ी	थोड़ी कारबनडिऑक्साइड
	थोड़ा मल
	अधिक पानी
३. गुर्दे	अधिक मल
	थोड़ी यूरिक एसिड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १२

प्यास

हमें प्यास उस समय लगती है जब शरीर में से प्रतिदिन ¼ भाग मल बाहर निकल चुकता है। अधिक शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूरों को प्यास अधिक लगती है क्योंकि शरीर में से पानी जल्दी २ खर्च होता है। अधिक नमक खाने से भी प्यास अधिक लगती है। प्रत्येक अवस्था में प्यास लगने पर सदैव बिल्कुल शुद्ध और निर्मल जल पीना चाहिये। जितना श्रेष्ठ जल होगा उतना ही श्रेष्ठ रक्त बनेगा, जितना श्रेष्ठ रक्त होगा उतना ही श्रेष्ठ शरीर और मस्तिष्क का विकास होगा।

यदि हम शरीर के किसी स्थान पर चमड़ी के ऊपर अल्कोहल में डूबा हुआ ब्लॉटिंग पेपर रखदें और उसे दबादें, तो थोड़ी देर में ही उस स्थान पर झुर्रियां पड़ जायेंगी और वह लाल हो जायगा। अर्थात् अल्कोहल चमड़ी के छेदों में प्रवेश करके रक्तवाहिनी नालियों में पहुंच गई। इसीलिये रोगी जिसे शराब का अभ्यास नहीं है, अल्कोहल के उपचार से सुधरने की अपेक्षा बिगड़ जाता है क्योंकि अल्कोहल शरीर के परमाणुओं को समेट कर गतिहीन बना देती है। अल्कोहल ने ज्यों ही रक्त में प्रवेश किया कि उसने तुरन्त स्वाभाविक क्रियाओं को बिगाड़ना आरम्भ किया। वह पहले नसों के जोड़ों को निर्जीव करती है, जिससे मांसपेशियों पर नसों का अधिकार कम हो जाता है। परि-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

णाम यह होता है कि रक्त की गति धीमी पड़ जाती है और रक्त ज्यों २ चमड़ी के समीप आता है, त्यों २ शराब पीने वाले के चेहरे पर उत्तेजना और लाली झलकती है। यही क्रिया मन को चेतनाहीन और मग्न कर देती है।

दिल पर अल्कोहल का क्या प्रभाव पड़ता है? डाक्टर पारकेस और डाक्टर वूलोविज़ ने सबसे पहले इसका परीक्षण किया था। उन्होंने पानी और अल्कोहल की अलग २ खुराक पर एक स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट आदमी को रक्खा। अल्कोहल के दिनों में दिल की चाल बहुत बढ़ गई थी। यों, स्वस्थ अवस्था में २४ घंटों में दिल की धड़कन १००,००० होनी चाहिये। दिल की दो कोठरियां होती हैं, जिनमें ६ औंस रक्त प्रत्येक धड़कन पर आता है अर्थात् २४ घंटों में ६००,००० औंस रक्त का प्रवाह रहता है। यह रक्त इतनी तेजी से आता जाता है कि यदि खुली हवा में यह छूटे तो ५ या ६ फीट की दूरी पर जाकर पड़े। दिल को यह परिश्रम १ फुट ऊँचा ११६ टन बोझ उठाने के समान पड़ता है। एक औंस अल्कोहल से ४,३०० अधिक धड़कन होती हैं, दो औंस से ८,६०० और तीन औंस से १२,९००।

इस अधिक धड़कन का यह अर्थ हुआ कि दिल को अधिक परिश्रम करना पड़ा। और यह परिश्रम निरर्थक होता है। इससे शक्ति का व्यय बढ़ता है। डाक्टर लोग जानते हैं कि दिल की चाल बढ़ जाने से रक्त के प्रवाह में कमी आ जाती है। शरीर के प्रत्येक अवयव के लिये एक कोष होता है जिसमें रिज़र्व शक्ति जमा रहती है। यह शक्ति तब काम आती है जब मूल शक्ति में कमी होती है। इसी प्रकार दिल के कोष में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी रिज़र्व शक्ति होती है। 'अल्कोहल के प्रयोग से यह शक्ति ख़र्च होने लगती है। निरन्तर शराब पीने वाले व्यक्तियों का यह कोष ख़ाली हो जाता है, कोष खाली होने से रगें नष्ट हो जातीं हैं। अल्कोहल इस कोष में कुछ भी शक्ति नहीं भरती क्योंकि उसमें यह गुण नहीं है। इन दोषों के कारण शराबियों के दिल में चर्बी बढ़ जाती है, दिल सिकुड़कर मुर्दा बन जाता है और रक्त की एक बूंद भी न रहने पर हार्ट फेल हो जाता है।

रक्त की सेलों में और भी अति सूक्ष्म सेलें होती हैं जो ओक्सीज़न को खींचती हैं। अल्कोहल इन सेलों को सिकोड़ देती है जिससे वे ओक्सीज़न खींचने में कम समर्थ होने लगती हैं। यदि अधिक अल्कोहल प्रयोग किया जाय तो वे बिल्कुल ही ओक्सीजन ग्रहण न कर सकेंगी। जितनी कम ओक्सीजन मिलेगी, उतना ही शरीर निर्बल होता जायगा, रक्त में रद्दी पदार्थ एकत्र होते जायेंगे। इससे रोग उत्पन्न होंगे। डाक्टर फ्रेन्क चेसायर ने मेढ़कों पर यह प्रयोग करके देखा, उन्होंने अनेक मेढ़कों को टांग, दिल और सिर के बल अल्कोहल में रखा और खुर्दबीन से उनकी क्रियाओं का परीक्षण किया। सबका यही परिणाम निकला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १३

पचन पर अल्कोहल का प्रभाव

पुरानी कहावत है कि रक्त ही जीवन है। यदि रक्त शुद्ध और पुष्ट है तो शरीर भी पुष्ट और स्वस्थ है। रक्त का आधार भोजन है। प्रत्येक भोजन का रक्त बनता है। रक्त से मांस, मज्जा, अस्थि इत्यादि शरीर के अवयव पोषित होते हैं। भोजन रक्त बनने से प्रथम एक क्रिया करता है जिसे पचन कहते हैं। मुंह, दांत, कण्ठ, पेट, लीवर और अन्य छोटे अवयव इस क्रिया के कर्त्ता हैं।

कुछ लोगों का विश्वास है कि अल्कोहली पेय पदार्थ पचन क्रिया को शक्ति देते हैं। यह उनका भ्रम है। शराबी भोजन के बाद शराब पीकर कुछ गर्माई प्रतीत करता है और भोजन का भार पेट पर रखा मालूम नहीं होता, इसी आभास से वह शराब को पाचक समझता है। शराब पाचन क्रिया को और भी दबा देती है। पचन का अर्थ यह है कि भोजन तरल पदार्थ में बदल कर रक्त में रम जाय। रासायनिक विधि, गरमी और क्रिया इन तीन बातों से रक्त बनता है। इस विधि के लिये चार प्रकार के रस चाहियें:—

१. *मुंह की लार,* जो स्टार्च की शक्कर बनाती है।

२. *पेट का रस.* जो भोजन में क्षार उत्पन्न करके उसे पचने योग्य करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३. लीवर का रस, जो मल और अपच पदार्थ को निकाल कर बाहर करता है।

४. मेंदे का रस, (Pencreas), जो इन तीनों के बचे हुए कार्य की पूर्त्ति करता है।

इन सब रसों की क्रिया का यह काम है है कि ये भोजन को रक्त बनादें। हम जितना भोजन करते हैं, हमें अपनी खुराक़ की उतनी ही मात्रा नहीं मान लेनी चाहिये। हम भली प्रकार जितना भोजन पचा सकें, वही मात्रा होती है। अधिक भोजन से हानि होती है क्योंकि आंतों को इससे निबटने के लिये अधिक शक्ति और श्रम करना पड़ता है। बाज़ार में बहुत से बने हुए खाद्य पदार्थ बिकते हैं, जिनमें उपरोक्त रसों की भांति काम करने वाले परमाणु रहते हैं, जो शरीर में उन रसों के न रहने पर भी वैसा ही प्रभाव करते हैं। इन पदार्थों को सेवन करने वाले की अंतड़ियां अपने स्वाभाविक कार्य को भूल जाती हैं और वे भविष्य में अपना प्राकृतिक कार्य करने के योग्य नहीं रहतीं। शरीर के इन चारों पाचक रसों में कितना पानी अंश रहता है, यह इस गणना से ज्ञात होगा:

मुंह की लार	पानी	९९४·१
	खनिज क्षार	२·३
	अन्य पदार्थ	३·६
		१०००·०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पेट का रस	water	९९४·४
	Papsin	३·२
	Salt	१·५
	Hydrochloric acid	·२
	Potassium chloride	·५
	Calcium chloride	·१
	Phosphats of calcium, magnesium & iron.	·१
		१०००·०

लीवर का रस	water	८५९·२
	Bilin	९१·५
	Fat.	९·२
	Cholesterin	२·३
	Mucus and colouring matter	२९·८
	Salts	७·७
		१०००.०

मेदे का रस	water	९८०·५
	Pancreatin, Amylopsin Trypsin,	१२·७
	inorganic salts	६·८
		१०००·०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पेट में भोजन पहुँचने पर मांसपेशियों का कार्य शुरू हो जाता है। कोई भोजन देर में रस बनता है, कोई जल्दी। औसतन ३-४ घंटे का समय लगता है। यहां हम इसकी एक तालिका देते हैं कि कौन भोजन कितने समय में पचकर रस बनने लगता है:

	घंटे		घंटे
उबले चावल	१	गौमांस का कबाब	३
Boiled tripe	१	उबला भेड़ का मांस	३
कच्चे सेब	१॥	उबली गाजर	३।
उबली सलमन मछली	१॥	भेड़ का कबाब	३।
उबला साबूदाना	१।॥	रोटी	३॥
उबली कॉड मछली	२	उबले आलू	३॥
उबली सेम	२॥	उबली सलजम	३॥
ख़जला	२॥	पनीर	३॥
आलू का शाक	२॥	उबले अंडे (सख़्त)	३॥
हंस का कबाब	२॥	भूने हुए अंडे	३॥
उबला Gelatine	२॥	उबली मुर्ग़ी या कबाब	४
उबला भेड़ के बच्चे का मांस	२॥	उबला करमकल्ला	४॥
उबला गौ मांस	२।॥	सूअर का कबाब	५।
कढ़ी	३	उबली कुर्री	५॥

शराब पीने से भी पेट का रस बनता है, लेकिन यह रस सुपाच्य नहीं होता। असल में इस रस में pepsin बहुत ही कम बनती है क्योंकि रस की pepsin सेलों को धोने में ख़र्च हो जाती है, और नई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

pepsin बनने में अल्कोहल बाधा देती है। इसलिये शराब पीकर जो पेट का रस एकदम बढ़ता है, वह पचने की क्रिया नहीं है। शराब धीरे २ पेट की रस ग्रन्थियों को क्रियारहित कर देती है।

जेनेवा यूनीवर्सिटी के विख्यात प्रोफेसर डाक्टर एल० रेविलियोड और डाक्टर पालबिनेट ने इस बात की बहुत खोज की है। वे कहते हैं कि शराब पीने वालों का पेट अन्दर की ओर सिकुड़ कर मोज़े की शक़ल का हो जाता है। उसमें चर्बी बढ़ जाती है। इसी प्रकार के प्रयोग डाक्टर बीयूमोन्ट ने किये थे और एक पुस्तक छपाई थी, जिस पर एक नोट डाक्टर एन्ड्रू कूम्बे ने लिखा था जो सम्राज्ञी विक्टोरिया के चिकित्सक थे और बेलजियन्स के राजा रानी के परामर्शदाता थे। डाक्टर बीयूमेन्ट एक ही लाइन लिखते हैं कि 'शराब पीने वालों को पेट की एक न एक शिकायत बनी रहेगी।'

डाक्टर मुनरो ने एक प्रयोग करके यह स्पष्ट कर दिया है कि पानी भोजन को गलाता है और अल्कोहल इस के विपरीत करती है। यह प्रयोग इस प्रकार था:—

गौ मांस को बारीक कूटकर किमाम करके तीन बोतलों में डाला, इनमें थोड़ा थोड़ा 'पेट का रस' भी एक बछेड़े के पेट में से निकालकर मिलाया गया। अब पहली बोतल में पानी, दूसरी में अल्कोहल और तीसरी में पीली शराब (Pale ale) डालकर हिलाकर रख दिया गया। सब का टेम्प्रेचर १००° रख गया। तीनों में पेट की भांति निम्न-लिखित क्रिया हुई:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मांस को किसमें मिलाया	चौथे घंटे बाद प्रभाव	आठवें घंटे बाद प्रभाव	दसवें घंटे बाद प्रभाव
पहली बोतल पेट का रस और पानी	पचन क्रिया आरम्भ	बारीक रेशे बन गये	घुलकर रस बन गया
दूसरी बोतल पेट का रस और अल्कोहल	रंग धुंधला हो गया, मांस में क्रिया नहीं हुई	मांस में अब भी क्रिया नहीं हुई	मांस ऐंठ कर सिकुड़ गया, पेपसिन तल में बैठ गई
तीसरी बोतल पेट का रस और पीली शराब	मांस पर रूंए जमकर बादल से बनगये	ज़रा सा मांस कम हुआ	पेपसिन तल में बैठ गई। पचन क्रिया नहीं हुई

यह क्रिया बिल्कुल मनुष्य शरीर क्रिया जैसी थी क्योंकि डाक्टर मुनरो ने शरीर यन्त्र जैसे ही यन्त्र लगाये थे। इससे यह स्पष्ट है कि पीली शराब में अल्कोहल का अंश थोड़ा भी होते हुए पचन क्रिया नहीं हुई। 'पेट के रस' में पेपसिन एक अंश है इसे भी अल्कोहल ने निकालकर अलग कर दिया।

सर विलियम रॉबर्ट्‌स ने पेट पर अल्कोहल के अनेक प्रयोग करके देखे थे, उनका कहना है कि ५ प्रतिशत 'शेरी' और १० प्रतिशत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'बरटन एल' शराब निश्चय ही पचन क्रिया को रोकने में समर्थ होती है। येल यूनीवर्सिटी के डाक्टर चिटेन्डन और मेन्डेल कहते हैं कि २ प्रतिशत अल्कोहल पचन क्रिया को सदैव नष्ट कर देगी। डाक्टर ई० लेबोरडे अमेरिका के एक मासिक पत्र 'जरनल ऑफ़ फारमेसी' में अपने प्रयोग का परीक्षण इस प्रकार लिखते हैं, कि मैंने एक बोतल में मांस को चार घंटे तक ४०°C. के टेम्प्रेचर पर २ प्रतिशत अल्कोहल डालकर रखा। पानी ने जब जब पचन क्रिया आरम्भ की, अल्कोहल ने उसे तुरन्त रोक दिया। रॉयल मेडीकल सोसायटी एडिनबर्ग के भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट डाक्टर जेम्सम्यूरहोवे इस प्रकार कहते हैं, 'कुछ व्यक्ति भोजन के बाद शराब पीते हैं और समझते हैं कि यह पाचन करेगी, परन्तु यह सब धोखा है क्योंकि जिस प्रभाव को वे पचन क्रिया अनुभव करते हैं वह पेट की नसों पर अल्कोहल की गरमी और नशे की सुरसुराहट है। अल्कोहल निश्चय ही बदहज्मी पैदा करती है। मदिरा जब पहलेपहल पीजाती है तो आमाशय उसे बाहर फेंक देता है और उल्टी हो जाती है।

अल्कोहल पेट में पहुंचने के बाद तुरन्त ही रक्त में मिलनी शुरू हो जाती है, और चूंकि रक्त बहुत तेजी से नसों का दौरा करता है, इसलिये अल्कोहल भी तेज़ी से नसों पर प्रभाव डालने लगती है। लीवर (ज़िगर) पर इसका प्रभाव बहुत ही बुरा होता है क्योंकि लीवर की सेलें अत्यन्त कोमल होती हैं, वे इसकी गन्धमात्र से ही मुर्झाने लगती हैं। सेलों के निकम्मे होने से लीवर अपना काम करने में असमर्थ होने लगता है। तेज़ या अधिक शराब पीने वालों का लीवर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिकुड़कर एेंठ जाता है। शरीर में लीवर सबसे बड़ा अवयव है। स्वस्थ लीवर का वजन ५० से ६० औंस तक होता है। वह चिकना और लाल होता है। शराबियों का लीवर, खुरदरा, काला और मुड़ा हुआ होता है। शराबियों को सदैव लीवर की बीमारी हो जाती हैं। वे व्यक्ति जिन्हें शराब बनानी या बेचनी पड़ती है और जिन्हें शराब पीने के सरल साधन प्राप्त हैं, वे शीघ्र मर जाते हैं। डाक्टर सर बेनजामिल वार्ड रिर्चासन रक्त में अल्कोहल के प्रभाव का इस प्रकार वर्णन करते हैं:—

'अल्कोहल का प्रभाव रक्त पर भयानक और नाज़ुक है, क्योंकि जब सूक्ष्म सेलें मर जाती हैं तो स्वाभाविक क्रिया बन्द होजाती है और स्वाभाविक शरीर का पोषण रुक जाता है। शरीर में रक्त की ये सेलें लाखों होती हैं। यदि इन सेलों को उपर नीचे रखकर एक पाई के बराबर गोलाई में चुना जाय तो एक इञ्च ऊंचाई में १२००० सेलें रखी जा सकती हैं। यदि इन सेलों को बिछा दिया जाय तो कई स्क्वायर गज़ जगह घिरेगी। ये सेलें रक्त के लिये ओक्सीज़न ग्रहण करती रहती हैं। इसलिये इनमें से एक भी शरीर की तन्दुरस्ती के लिये बहुत क़ीमती है।

कुछ लोगों का ख़्याल है कि 'पोर्ट वाइन' का माणिक जैसा लाल रंग होता है, इसलिये यह अवश्य रक्त को बढ़ाती होगी। परीक्षण करके देखा गया कि यह ख़्याल भी मिथ्या है। एक छोटा चम्मच 'animal charcoal' में आधा वाइन गिलास 'पोर्ट वाइन' मिलाओ और उसे फिल्टर होने के लिये रखदो। वाइन फिल्टर होकर पानी की भांति निकल आयेगी। वाइन का लाल रंग चारकोल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में मिलगया परन्तु किसी भी पदार्थ के गुणों में तब्दीली नहीं हुई। तब फिर वह २-४ बूंद रंग भला क्या रक्त लाल करेगा?

किस शराब में कितना मादक द्रव्य होता है:—

वीयर	५ प्रतिशत	बरमथ	१५ प्रतिशत
एल	७ ,,	क्यूडीम्यूथी	३२ ,,
पार्लर	७ ,,	काकटेल्स	३५ ,,
हार्ड सैड	६ ,,	बिटर्स	४६ ,,
कूट वाइन	८ ,,	कीमनल	४२ ,,
कैरेट	८ ,,	रम	४५ ,,
मस्केरल	८ ,,	ब्रान्डी	५० ,,
शैपंन	१० ,,	जिन	५० ,,
सैनटर्न	१२ ,,	व्हिस्की	५० ,,
शेरी	१४ ,,	वोडाका	५० ,,
पोर्ट	१४ ,,	एब्सिथ	६० ,,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १४

शरीर की गरमी पर अल्कोहल का प्रभाव

हमारे भोजन का परिणाम मांस, रक्त और मज्जा का बनना और शरीर की गरमी को सही टेम्प्रेचर में रखना भी है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हमारा शरीर गरम है। संसार के प्रत्येक भाग, ध्रुवों और भूमध्य रेखा के निवासियों की शरीर गरमी का एकसा ही परिमाण है। हमारे शरीर में गरमी होने का प्रयोग water Hammer यन्त्र से करके देखा जा सकता है। इस यन्त्र में पानी की थोड़ी सी बूंदें होती हैं, हाथ में मुट्ठी बाँधकर पकड़ने से पानी की बूंदे भाप बनकर ऊपर को उड़ती प्रतीत होती हैं। साथ ही मुंह में जीभ के नीचे थरमामीटर लगाकर देखिये तो टेम्प्रेचर में कोई घटी बढ़ी नहीं होगी। इससे यह ज्ञात होता है कि हमारे शरीर में गरमी बनती और निकलती रहती है।

स्टार्च वाले भोजन जैसे चावल, आलू, साबूदाना, अरारोट, रोटी, और शक्करसार जैसे, गन्ने से चीनी, अंगूरों से ग्लूकोज़ (Glucose,) दूध से लेकटोज़ (Lactose,) मधु (शहद) से लिवूलोज़ (Levulose,) आदि लेने से शरीर की गरमी ठीक बनी रहती है।

अल्कोहल शरीर की प्राकृतिक गरमी को बाहर फेंकने की क्रिया करती है। एक औंस स्टार्च में एक औंस शराब से अधिक गरमी है, और शराब पचास गुणा अधिक महंगी पड़ती है।

(Sucrose)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीचे लिखी वस्तुओं में शक्कर इस प्रकार होती हैः—

गन्ने की चीनी	में	९६·० प्रतिशत
गुड़	में	७९·०
अंजीर	में	६२·५
चेरी	में	१८·१
खुबानी	में	११·६
आड़ू	में	१६·५
नासपाती	में	६·४

यह गरमी भोजन के कारबन में से आती है। कारबन जलता रहता है यही गरमी है। निम्न फॉरमूले से आप देखेंगे कि शक्कर से अधिक कार्बन अल्कोहल में हैः—

Ethyl Alcohal C_2H_5HO.		Sugar C_{12} H_{22} O_{11}	
Carbon	52·174	Carbon	42·106
Hydrogen	13·043	Hydrogen	6·432
Oxygen	34·783	Oxygen	51·462

इस हिसाब से अल्कोहल शराब की गरमी के लिये बहुत ही लाभकारी होनी चाहिये, परन्तु ऐसा नहीं है। शराब पीने वाला गरमी को प्रतीत अवश्य करता है, परन्तु यह गरमी धोका है। डाक्टर बिन्ज़ ने इसके अनेक प्रयोग किये हैं। वे कहते हैं कि अल्कोहल पीने से आराम सा लगता है, यह पेट और चमड़ी की रक्त नालियों को फैलाती है। इस घर्षण में गरमी चारों ओर बिखरती है, बिखरकर वह भागती है। इस भागने को गरमी समझ लिया जाता है। डाक्टर बिन्ज़ ने १२६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रयोगों को थरमामीटर द्वारा परीक्षण किया है। बहुत थोड़ी मात्रा ने तो टेम्प्रेचर कम नहीं किया। बीच दर्ज़े की मात्रा ने ०·३ से ०·६ तक कम किया और अधिक मात्रा ने कई डिग्री कम कर दिया। जो साधारण मात्रा में शराब पीते हैं उनका टेम्प्रेचर एक डिग्री कम रहेगा। प्रोफेसर रेमसन कहते हैं कि ·०५ से २ डिग्री तक टेम्प्रेचर कम रहता है, यद्यपि गरमी सी लगी रहती है। डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचर्डसन अपने प्रयोग को इस प्रकार वर्णन करते हैं:—

'एक गरम खून के पशु को शराब पिलाकर बेहोशी की हालत में एक कमरे में रखा गया, इस कमरे का टेम्प्रेचर १०° कम कर दिया गया था। उसी के साथ इसी कमरे में एक अन्य पशु बे शराब पिलाये भी रखा गया। दोंनो सोये रहे। पहला सोकर उठा ही नहीं, मर गया। दूसरा स्वस्थ रहा।' समुद्र में सदैव रहने वाले गोतेख़ोर तथा ह्वेल मछली आदि जल जंतुओं के शिकारी जिन्हें सदैव पानी और ठंड में रहना पड़ता है, कभी शराब नहीं पीते। एक बार रूस में कैथेराइन दी ग्रेट के शासन काल में एक बड़ा भारी जल्सा हुआ, और उसमें प्रत्येक व्यक्ति को शराब पीने की खुली छुट्टी दे दी गई। सबने मनमानी पी। प्रातःकाल देखा गया कि हज़ारों व्यक्ति शरीर की गरमी कम हो जाने की वजह से सुन्न हो गये और मर गये !!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १५

मस्तिष्क पर अल्कोहल का प्रभाव

समस्त शरीर का राजा और नियन्त्रणकर्त्ता मस्तिष्क है। प्रकृति ने इसे सबसे ऊपर बहुत सावधानी से ढककर रखा है। हम कुछ भी देखें, अनुभाव करें, बिचारें जानें, ये सब क्रियाएँ मस्तिष्क करता है। यह मतिस्ष्क इतना समझदार और उत्तरदायित्वपूर्ण भार ग्रहण किये हुये है कि हम जब सो जाते हैं तब भी यह शरीर को ज्ञान देता रहता है। यदि सिर में चोट लग जाती है और हम बेहोश पड़े होते हैं तब भी मस्तिष्क शरीर के अन्य अंगो की गति का संचालन करता रहता है। यदि मस्तिष्क में सांघातिक चोट लग जाय और वह बिल्कुल ही निर्जीव हो जाय तो शरीर की सभी क्रियाएँ बन्द हो जायेगी और प्राणी मर जायगा।

इसलिये मस्तिष्क बहुत महत्वपूर्ण अंग है। लोग समझते हैं कि अल्कोहल मस्तिष्क को सहायता प्रदान करता है, किन्तु यह ग़लत है। प्रोफ़ेसर क्रेपलिन और डाकटर लौडर ब्रन्टन अपने प्रयोगों के परिणाम में कहते हैं, 'कि अल्कोहल का शारीरिक प्रभाव अद्भुत है. क्योंकि यह ज्यों २ प्राणी की गति को हीन बनाता है त्यों-त्यों वह इन्हें सतेज और अधिक कर्मशील अनुभव करता है।' इसके और भी प्रयोग किये गये हैं। डाक्टर जे॰ जे॰ रिज ने स्पर्श-ज्ञान, तौल-ज्ञान,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दृष्टि-ज्ञान और निर्णय-ज्ञान पर अलग-अलग परीक्षण किये और सभी को दूषित पाया। ये प्रयोग बहुत विस्तृत हैं और इनकी सम्पूर्ण विधि Medical Temperance Journal Vols. XIII and XXI में वर्णित है। ३॥ माशे अल्कोहल पीने के बाद स्पर्श-ज्ञान में ५% कमी हुई। तौल-ज्ञान में २८% कमी हुई। दृष्टि-ज्ञान में ९% कमी हुई। और निर्णय ज्ञान में १४% ग़ल्ती हुई। प्रयोग काल में निम्न इन्द्रियों का इस प्रकार ह्रास हुआ।

१. हाथों की मज़बूती में कमी।
२. दृष्टि की तेज़ी में कमी।
३. निर्णय में यथार्थ ज्ञान की कमी।
४. विचारों के दौड़ान में कमी।
५. नसों की तेज़ी में कमी।
६. स्वयं नियन्त्रण शक्ति में कमी।

अधिक मात्रा देने से उन्हें नशा हो गया। बेहोश होंने से पहले शराबी इधर उधर झूमता, बहकी बातें करता, अन्तरिक्ष में कल्पना देखता और पागलों जैसी चेष्टाऐं करता रहता है। पूरे प्रभाव में मस्तिष्क शून्य और चुप होकर पड़ रहता है। अमेरिका में एक शराब नियन्त्रण बोर्ड (the Board of Control) है, जिसके रक्षागृह में शराब की व्याधियों से पीड़ित व्यक्ति आश्रय पाते हैं। सन् १९१५-१९ काल में ६० प्रतिशत व्यक्ति मस्तिष्क रोग से पीड़ित थे।

मस्तिष्क एक ऐसा केन्द्र है जहाँ हृदय, फेंफड़े, स्नायु, ज्ञान-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तंतु और रीढ़ की संचालन शक्ति स्थिर है। इसलिये जिस व्यक्ति का मस्तिष्क ठीक क्रिया में नहीं रहता, उसे हम पागल कहते हैं। शराब कंठ से उतरते ही ज्ञानतंतुओं द्वारा मस्तिष्क पर प्रभाव करती है, दस मिनट बाद ही वह उसमें हलचल उत्पन्न कर देती है, मस्तिष्क में विचारों का तांता लग जाता और पीने वाला व्यक्ति अपने को बहुत ही व्यस्त समझता है। धीरे-धीरे स्नायुमंडल में विषैला प्रभाव उत्पन्न होकर संज्ञा नष्ट होने लगती है। जिसका परिणाम यह होता है, कि (१) इच्छाशक्ति प्रभावहीन हो जाती है। (२) वाणी काबू से बाहर हो जाती है। (३) चालीस प्रतिशत व्यक्ति आत्मघात करते हैं। (४) विवेक और ज्ञान नहीं रहता, (५) कार्य शक्ति का ह्रास हो जाता है। (६) पाप वासना प्रबल हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १६

मांसपेशियों पर अल्कोहल का प्रभाव

शरीर के बल का माप उसकी मांसल पेशियां हैं। मनुष्य का पराक्रम, शौर्य और वीरता सब कुछ मांसपेशियों पर निर्भर है। पेशियां जितनी दृढ़ और पुष्ट होंगी, उतना ही मनुष्य शक्तिवान समझा जायगा। मांसपेशियां दो प्रकार की होती हैं:—

१. जो अपनी इच्छा से कार्य करती हैं। जैसे, बाँहों की।

२. जो अपनी इच्छा से कार्य नहीं करतीं। जैसे, दिल और पेट की।

दोनों प्रकार की पेशियों का संचालन मस्तिष्क करता है। दोनों का परस्पर में गहरा सम्बन्ध है, और इनका शक्तिशाली बनना परमावश्यक है। अल्कोहल पेशियों पर भी बुरा प्रभाव डालती है। डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचार्डसन ने मेढ़कों पर प्रयोग करके देखे थे, जिसमें अल्कोहल ने पेशियों को टेढ़ा करके सिकोड़ दिया। डाक्टर जे० जे० नोरिस, डाक्टर फ्रे, प्रो० डेस्ट्री, और प्रो० क्रेपलित सबने प्रयोग करके देखा है क २० ग्राम अल्कोहल से एक व्यक्ति की पेशियों की शक्ति एक दिन में २२३३० किलोग्रमीटर से घट कर १५९३५ किलोग्रमीटर रह गई। पहलवान लोग शराब से बचे रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण १७

अल्कोहल और जीवन

इस बात को सभी स्वीकार करेंगे कि अल्कोहल और शराब जीवन का दुखमय अन्त करती है। वह मनुष्य को मतवाला, पागल, जीवन रोगी बनाकर मृत्युके द्वार तक ही नहीं ले जाती बल्कि अनेक घरों में कंगाली दरिद्रता और सर्वनाश की पूर्णाहुति भी करती है।

शराब जीवन के लिये तनिक भी आवश्यक नहीं। कुछ लोग इसे आनन्द और भोगविलास के लिये पीते हैं, कुछ संग सोहबत के प्रभाव में पीने लगते हैं, परन्तु सभी इसके भयानक चरित्र को जानते हैं।

संसार में मद्य का ज़बरदस्त चक्र है। स्कॉट लोग विस्की पीते हैं, अंगरेज और जरमन बीयर पीते है। लेटिन लोग वाइन पीते हैं। पूर्वी अफ्रिका निवासी जिन पीते हैं। चीनी अफीम पीते हैं। आधुनिक अमेरिकन कोकीन पसन्द करते हैं। कुछ ख़ास व्यक्ति ख़ास रसों को सड़ाकर पीते हैं।

यह सब इसकी मादकता की महिमा है। इस मादक विष को हमें विद्वानों की इन सम्मतियों में ढूंढ़ना चाहिये:—

'अल्कोहल जो भ्रमात्मक आनन्द, क्रिया, और शक्ति प्रदान करनेवाला पदार्थ हैं, कब्र में दफ़नाये जाने योग्य है। किसी कवि, चिकित्सक, धर्म पुरोहित, और चित्रकार ने इससे प्रबल शैतान को नहीं देखा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचार्डसन् M. D., F. R. S.

'अल्कोहल डाक्टरी के लिये भी योग्य नहीं है। भोजन भी नहीं है।'

—सर विक्टर हॉर्सले F. R. S.

'मैं कह सकता हूं कि देश को नष्ट करने में अल्कोहल प्रबल योद्धा है।'

—सर वमगल बार्ट, M. D.

'अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है।

—ई० मेकडोवेल कॉसग्रेव, M. D., F .R. C. P.

'शरीर को अल्कोहल से कभी लाभ नहीं हो सकता।'

—सर एन्ड्रू क्लार्क बार्ट, M. D.

'शराबी और शराब बेचने वाले जब इच्छानुसार पीते हैं तब समाज और राजनीति दोनों ही के संगठन को नष्ट करते हैं।'

—प्रेसिडेन्ट रूज़वेल्ट।

'शराब शरीर की पची हुई शक्तियों को भी उत्तेजित करके काम में लगा देती है, फिर उसके ख़र्च हो जाने पर शरीर काम के लायक नहीं रहता।'

—सर फ्रेडरिक ट्रीक्स बार्ट, (सम्राट जार्ज के गृह-चिकित्सक)

'जिनके अधिकार में बिजली और भाप की मशीनें रहें, उन्हें शराब के चंगुल में ज़रा सा भी फंसने का मौका देना अति भयानक है।'

—मि० डेनियल्स (अमेरिका के जंगी जहाज़ों के मंत्री)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय तीसरा

भारत सरकार को शराब बेचने से लाभ

प्रकरण १

आय के ज़रिये

पिछले अध्यायों में पाठक शराब की बुराइयों को भली प्रकार समझ चुके हैं। भारत सरकार भी इन दोषों को समझती है। भारत सरकार इन दोषों को तब भी समझती थी जबकि अबसे सवासौ वर्ष पहिले लन्दन में प्रत्येक मुहल्ले के खुले चबूतरों पर शराब बेची जाती थी। शराबख़ानों के मालिक खुल्लमखुल्ला अपनी दुकान की खिड़कियों में नीचे लिखे ढंग का विज्ञापन लटका दिया करते थे:—

'साधारण शराब, मूल्य एक पैंस
बेहोश करदेने वाली शराब, मूल्य दो पैंस
साफ़ सुथरी चटाई, मुफ़्त (अर्थात् बेहोश होनेपर लेटने के लिये चटाई के पैसे नहीं लियेजाते)'

परन्तु इन दोषों को सरकार ने तुरन्त ही सुधार डाला क्योंकि वह अपना देश था। किन्तु भारत तो सरकार का अपना घर नहीं है, वे इस देशपर व्यवसायिक राज्य करते हैं। सरकार को शराब से बड़ी भारी वार्षिक आय है, वे इसे बन्द करके अपने ख़ज़ाने को कम क्यों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करें । आबकारी विभाग में मादक द्रव्यों से आय के ज़रिये इस प्रकार हैं:-

१. मादक द्रव्यों का बनाना और बेचना, जैसे देशी शराब, पचवई, आदि । देशी शराब महुआ पेड़ के सूखे फूलों से बनती है।

२. विदेशी शराबों की बिक्री जो यहां आती हैं, जैसे रम, ब्रान्डी, बीयर ।

३. खजूर, नारियल और ताड़ के पेड़ों से शराब निकालना और ताड़ी बेचना ।

४. स्थानीय खपत के लिये अफ़ीम बनाना और बेचना ।

५. भांग गांजा चरस आदि बनाना और बेचना ।

६. अन्य मादक वस्तुओं का जैसे कोकीन, मरफ़िया आदि बनाना और बेचना ।

उपरोक्त विभागों से प्रकट होता है कि जो वस्तुएं सड़कर नशीली, अल्कोहल बनती हैं, अथवा जिनमें नशा होता है वे सब आबकारी विभाग की चीज़ें हैं।

१. आबकारी आय का आधा भाग तो केवल देसी शराबों से ही प्राप्त हो जाता है, जो इस प्रकार है:—

(१) भट्टी से बाहर शराब जाते समय भट्टी की ड्यूटी ।

(२) बेचने का अधिकार देने की फ़ीस ।

२. विदेशी शराब पर ड्यूटी इस प्रकार है:—

(१) भारत में आने पर विदेशी शराबों पर ड्यूटी। (समुद्र-तट पर जो कस्टम लगता है, वह रक़म कस्टम विभाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में जमा होती है।

(२) भारत में बनी तथा विदेशों से आई विदेशी शराब बेचने की लाइसेन्स फ़ीस।

पहली (१) में ये चीज़ें सम्मिलित हैं, माल्टेड शराब, वाइन की स्प्रिट, रेक्टीफ़ाइड स्प्रिट, अल्कोहल, ब्रान्डी, विस्की, रम और डाक्टरी तथा सुगन्धित स्प्रिटें।

३ पेड़ों का टैक्सः

(१) पेड़ों पर टैक्स। इनसे शराब चुआना, बनाना और बेचना।

(२) लाइसेन्स फ़ीस। दुकानों पर बेचने की आज्ञा देने का लाइसेन्स।

(३) सरकारी जमीन पर पेड़ों को बोने की फ़ीस।

भारत में सरकार की निगरानी में जो देशी शराब की भट्टियां हैं, उनमें एक वर्ष में लगभग पचास लाख गैलन बीयर और लगभग एक करोड़ गैलन मामूली शराब तैय्यार होती रहती है। विलायती शराब भारत में सन् १९१२ से १७ तक लगभग सात करोड़ रुपयों की विदेशों से मंगाई गई थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण २

शराब की खपत

सन् १९०५—०६ में एक 'इन्डियन एक्साइज़ कमेटी' बनाई गई थी जिसके मेम्बर सरकारी अफ़सर थे। उनकी रिपोर्ट के कुछ शब्द ये हैं:—

'विदेशी शराबों की खपत बहुत बढ़ गई है।'

'ताड़ी की खपत को ठीक ठीक नियन्त्रण में कर लिया जाय, तो उसके पीने वाले बढ़ जायेंगे।'

'देशी शराबों की खपत से भी पीने वालों की संख्या बढ़ रही है।'

देशी और विदेशी शराब की खपत (Liquid गैलन में):—

शराब का नाम	१९०१-०२	१९११—१२
एल, बीयर, पोर्टर	२६७३८५२	४२३९५८५
साइडर	४९१२	११२८३
विस्की	५५३९८१	६५५६७३
ब्रान्डी	३०२०५९	३३६४८५
जिन	७३२०५	७३७९२
रम	४०६७१	५०७८२
लीकर	११८०४	१४८२१
देशी शराबें	३००६७२	३३५७१६

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देशी शराब की खपत (Proof gallons में)

प्रान्त	१९०१—०२	१९११—१२	१९१८—१९
बम्बई और सिन्ध	१७१७७७५	२९३७०३४	२६७०१५४
मद्रास	८७५७५५	१६२६१७८	१६७२४९५
पंजाब	२४८५२४	४५१७१६	४५६८३७
सी. पी.	२६६१८०	१०३६८८०	१२२११३७
यू. पी.	१२१४७१८	१५३८५०४	१४६८६२०
बंगाल, बिहार, उड़ीसा	६०८२१८	१८७६३२१	२०६११०१
आसाम	......	२३८९४७	२२५५७१
बरमा	......	२६७८६	१२४४०१

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि शराबख़ोरी कितनी बढ़ गई है। सरकार ने इस बढ़ती को रोकने के लिये टैक्स बढ़ा दिया। परन्तु यह केवल बहाना मात्र था, टैक्स तो अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए था, न कि शराबख़ोरी बन्द करने के लिये। शराब महंगी होने पर शराब घटी नहीं, बल्कि चोरी डकैती की घटनायें बढ़ गईं। वे चोरी करने और गाँठ कतरने लगे। सरकारी टैक्स के आंकड़े भी देखिये:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १६०१—०२ से १६११—१२ तक का टैक्स

प्रान्त	शराबखोरी की बढ़ती	टैक्स की बढ़ती
बम्बई	५१ %	३८ %
सिन्ध	३५ %	२२ %
मद्रास	८६ %	३१ %
पंजाब	८१ %	३३ %
यू.पी.	२० %	२४ %
मध्य प्रान्त	३०० %	५४ %

बंगाल, बिहार और उड़ीसा के आंकड़े १९०५—१९०६ में बंग-भंग के कारण नहीं दिये जा सके।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

समस्त भारत में आबकारी दुकानों की संख्या

वर्ष	शराब	अफ़ीम भांग गांजा चरस	कुल संख्या
	१	२	३
१८९९-००	८२११७	१९७६६	१०१८८३
१९००-०१	८३२०२	१९९२८	१०३१३०
१९०१-०२	८४९२५	२०१५५	१०५०८०
१९०२-०३	८६७५७	२०९८४	१०७७४१
१९०३-०४	९१३२३	२२०५१	११३३७४
१९०४-०५	९११३८	२१९७८	११३११६
१९०५-०६	९१४४७	२१८६५	११३३१२
१९०६-०७	८९२१४	२१०७२	११०२८६
१९०७-०८	८६७५८	२०२४४	१०७००२
१९०८-०९	७३५५०	२०००५	९३५५५
१९०९-१०	७६७६२	१९७५४	९६५१६
१९१०-११	७१०५२	२००१४	९१०६६
१९११-१२	६२११३	१९१०८	८१२२१
१९१२-१३	५९९८६	१८१६६	७८१५२
१९१३-१४	५८५२७	१७९५७	७६४८४
१९१४-१५	५६७२३	१७६९९	७४४२२
१९१५ १६	५५०४६	१७३१६	७२३४२
१९१६-१७	५१९१७	१७१७७७	६९०९४
१९१७-१८	५४८९६	१७१४७	७२०४३
१९१८-१९	५२६८३	१७१५२	६९८३५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ३

आबकारी से आय

तमाम मादक द्रव्यों पर सरकार कर लगाती है, जैसे देसी शरावें। सरकार की आधी आबकारी आय तो देसी शरावों की ड्यूटी से ही होती है। और फिर अफ़ीम, भाँग, गाँजा, चरस तथा अन्य नशीली वस्तुएँ। ताड़ आदि शराब बनाने वाले पेड़ों पर भी ड्यूटी लगती है। विदेशी शरावों की कस्टम ड्यूटी। इन वस्तुओं को बनाने और बेचने के ठेकों को नीलाम करने से इनकी रक़म पेशगी ही प्राप्त हो जाती है। नीचे की तालिका में विदेशी शराब की कस्टम ड्यूटी सम्मिलित नहीं है, क्योंकि उसका हिसाब कस्टम खाते में जमा होता है। मनुष्य की दुर्बलता का लाभ उठाकर सरकार इतनी बड़ी रक़म अपने खज़ाने में भरती है। सन् १९०५ से तो आबकारी की आय भूमिकर को छोड़कर अन्य सब करों से बढ़ गई है।

सन् १८६१-६२ में यह आय १७८६१५७० रुपये, सन् १८७०-७१ में २३७४४६५० रुपये, सन् १८८०-८१ में ३१३५२२६० रुपये थी। आगे के आंकड़े विस्तारपूर्वक इस प्रकार हैं। इनमें व्यय की मद में माल के तैय्यार करने, बनाने और प्रबन्ध भार का व्यय भी सम्मिलित है:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आबकारी आय

वर्ष	कुल कर	चुंगी का आय	कुल आय १+२	व्यय	बचत ३-४
	१	२	३	४	५
	रू०	रू०	रू०	रू०	रू०
1885—86	4,15,21, 360	....	4,5719460	1243720	44475740
1886—87	43751740	4881970	48633710	1167300	47466410
1887—88	45346550	5277920	50624470	1270780	49353690
1888—89	47053460	5482840	52536300	1379410	51156890
1889—90	48918940	5592650	54511590	1567390	52944200
1890—91	49477800	6009000	55486800	1749810	53736990
1891—92	51172640	5895840	57068480	1900970	55167510
1892—93	52424430	5102530	58526960	1930130	56596830
1893—94	53885730	5956510	59842240	1933750	57908490
1894—95	55276760	6116090	61392850	1928090	59464760
1895—96	57224170	6625860	63850030	2079570	61770460
1896—97	56142000	6591650	62733650	2128550	60605100

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

1897-98	54894540	6613120	61507660	2404555	59103115
1898-99	57434220	6952670	64386890	2403140	61956750
1899-00	57899125	7055244	64954369	2422627	62531742
1900-01	59058030	6938205	65996235	2417640	63578595
1901-02	61150215	7038840	68189055	2491875	65697180
1902-03	66399630	7560000	73959630	2837895	71121735
1903-04	74701440	7866000	82567440	3208920	79358520
1904-05	80301360	8286000	88587360	3634710	84952650
1905-06	85317300	9740000	95057300	3871740	91185560
1906-07	88473285	8490000	96963285	4119135	92844150
1907-08	93405154	10051000	103456154	4441410	99014740
1908-09	95844441	10451000	106295411	5858277	100437134
1909-10	98067802	10514795	108582597	5968698	102613899

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

1910-11	105454715	12053394	117508109	6089904	111418205
1911-12	114146285	12458386	126604671	6288803	120315868
1912-13	124168787	12597466	136766253	6428572	130337681
1913-14	133414505	13368464	146782969	6562932	140220037
1914-15	132853214	12199000	145052214	6895269	138156945
1915-16	129483132	11790000	141273132	7061095	134212037
1916-17	138238495	12513946	150752441	7179474	143572967
1917-18	154425590	10996886	165422476	7300000	158122476
1918-19	173552770	11065351	184618121	8200000	176418121

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आबकारी आय प्रतिवर्ष कितना बढ़ी ?

समय	प्रतिवर्ष में औसतन बढ़ती	१० वर्ष में बढ़ती का प्रतिशत
१८६०-१८७०	६.५	३३%
१८७०-१८८०	७.६	३२%
१८८०-१८९०	१८.१	५८%
१८९०-१९००	९.६	१२%
१९००-१९१०	४६,४	७९%
१९१०-१९१८	८५.०	६५%

केवल शराब के आँकड़े इस प्रकार हैं:—

बीयर तथा अन्य शराबों से आय

वर्ष	अन्य शराबों से	बीयर से
१९००—०१	४२३४५१५६ रु०	४६२२६३ रुपये
१९०५—०६	६१९८२९६६ ,,	५९४५२९ ,,
१९१०—११	७७९६३५४३ ,,	८३८६६७ ,,
१९१५—१६	६२९५८७५५ ,,	१०२९५६१ ,,
१९१६—१७	९९६८५४८१ ,,	१८८०३७३ ,,
१९१७—१८	११०९९०२९९ ,,	३००७४७४ ,,
१९१८—१९	१२८०५२७४० ,,	३६१५६९३ ,,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलग २ प्रान्तों के आँकड़े इस प्रकार हैं:—

यू० पी० में	सन्	१८९९-००	में	६३६	लाख रु०
,,	,,	१९०४-०५	,,	१०२	लाख रु०
,,	,,	१९१८-१९	,,	१५९	लाख रु०
मद्रास में	सन्	१८९९-००	में	१३४	लाख रु०
		१९०४-०५	,,	१८७	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	४६४.४	लाख रु०
बम्बई में	सन्	१८९९-००	में	१०६	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	३७८	लाख रु०
पंजाब में	सन्	१८९९-००	में	२६·	लाख रु०
		१९१८-१९	,,	९८	लाख रु०
सी. पी. और	सन्	१९०३-०४	में	४५·५	लाख रु०
बरार में		१९१८-१९	,,	१२३	लाख रु०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूसरा खण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय चौथा

अफीम

प्रकरण १

भारत में अफीम

अफ़ीम एक महत्त्वपूर्ण औषध है, पर यह तभी तक अच्छी है जब तक इसे चिकित्सारूप में लिया जाय। संसार के प्रसिद्ध और अनुभवी चिकित्सकों की भी यही सम्मति है कि रोग की प्रत्येक अवस्था में अफ़ीम हुक्मी असर रखती है, बढ़ते हुए सांघातिक लक्षणों को रोकती है और विशेषकर दर्द की वेदना को हरने में तो वेजोड़ वस्तु है परन्तु साथ ही साथ इसका स्वाभाविक प्रभाव नसों को सुस्त कर देना है। इससे हमें यही समझ लेना चाहिये कि अफ़ीम औषध ही है, और वह नित्य प्रति व्यवहार में लाने वाली गिज़ा नहीं हो सकती। यदि हम इसके अभ्यासी बनते हैं तो हमारे स्नायुमँडल का सदैव के लिये निर्जीव हो जाना अवश्यम्भावी परिणाम हैं। अफ़ीम मस्तिष्क को मंद करके ज्ञान तंतुओं को मूर्छित कर देती है, जब मस्तिष्क चेतनाहीन होता है, तब श्रवण शक्ति, स्वादेंन्द्रिय और दृष्टि पर भी उसका हीन प्रभाव पड़ता है। पीनक उसी अवस्था का नाम है, जब मस्तिष्क और ज्ञान तंतुओं का सम्बन्ध भिन्न भिन्न हो जाता है। अफ़ीम से ये रोग लग जाते हैं: १. कब्ज़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता है। २. पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है। ३. श्वासरोग। ४. मँद बुद्धि। ५. चिड़चिड़ापन।

राजपूताने में अब भी व्याह शादी, दावतों और आदर सत्कार में ठाकुर लोग अफ़ीम घोल कर पिलाते हैं। गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश में पहले इतनी अफ़ीम खाई जाती थी कि अफीमियों की विष्ठा से पशुओं की रक्षा के लिये जंगल में आदमी नियत किये गये थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्वीय देशों में अफ़ीम का प्रचार पिछली सदियों में ही बढ़ा है और इसका कारण पश्चिमी व्यापारी हैं जिन्होंने पूर्व में मादक द्रव्यों का व्यवसाय करके उसे बहुत ही लाभदायक व्यापार दिखा दिया। इस ध्येय को लेकर मादक द्रव्यों की समस्या और भी विस्तृत होती गई है और प्रत्येक नगर में दुकानदारों ने मनुष्य की नैतिक दुर्बलता की ओट में इसे पूर्ण रूप से स्थायी बना दिया है।

मिलों में तथा अन्यत्र दिन भर काम करने वाली मज़दूर मातायें अपने बच्चों को चुपचाप पड़े रहने के लिए अफ़ीम पिला देती हैं। जिन देशों में अफ़ीम नहीं मिल सकती वहां दूसरी कोई नशीली वस्तु दे देती हैं। शहरों में हीं नहीं, गांवों में भी खेतों पर काम करने वाली माता बच्चों को अफ़ीम देती हैं। बूढ़ी और समझदार स्त्रियें इस अभ्यास को अपनी बहुओं को भी सिखा जाती हैं। एक बार एक अँग्रेज डाक्टर ने नागपुर के समीप एक गांव का निरीक्षण किया, वहाँ एक हिन्दू बूढ़ी दादी अपने पौत्र को अफ़ीम दे रही थी। डाक्टर ने इस पर आपत्ति की, परन्तु बुढ़िया ने अधिकार पूर्वक उत्तर दिया,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'इससे यह रोयेगा नहीं, चुपचाप पड़ा रहेगा, साथ ही इसके हरे पीले दस्तों में भी लाभ होगा ।"

एक दूसरा बच्चा जिसका पेट बढ़ा हुआ था और शरीर पीला था, बाहर से खेलता हुआ अन्दर आया, डाक्टर ने उसे देखकर पूछा, 'क्या इसे भी शिशुवस्था में अफ़ीम दी गई थी ?' बूढ़ी ने उसी अधिकारपूर्वक उत्तर दिया, 'हां, पर इसकी भूख न जाने कहां चली गई है, यह कभी भूखा ही नहीं होता । आप डाक्टर हैं, इसकी पाचन शक्ति को ठीक करिये न ?'

डाक्टर की ताड़ना देने पर भी वह अफ़ीम को बुरा नहीं मान सकी । उस गांव के दूसरे भाग में ईसाई लोग भी रहते थे, डाक्टर ने वहां के बच्चों को इस पापविघ्र से मुक्त पाया । उनकी माताओं ने बताया कि अफ़ीम देने का हम विचार भी नहीं लातीं, हमारे बच्चे बिल्कुल स्वस्थ हैं वे समय पर सोते और समय पर जागते हैं । हमने उनका दैनिक क्रम इस ढग पर डाल दिया है कि वे अपने खिलौनों से घंटो खेलते रहते हैं, उन्हें रोना और चिल्लाना नहीं पड़ता । यद्यपि इन लोगों को भी खेतों में अधिक समय देना पड़ता था । इन उदाहरणों से ग़रीबी और अज्ञानता के मूढ़ कारण प्रकट हैं ।

एक कहावत प्रसिद्ध है कि अफीम बच्चों को शक्ति प्रदान करती है, युवकों को नष्ट करती है और बुड्ढों को सहारा देती है । यह बात सत्य भी हो तब भी अन्ध विश्वास की ओर ढकेलने वाली है । अफ़ीम की लत पारस्परिक सहयोग, उठने बैठने और संग सोहबत से पड़ती है । जहां दस पांच अफीमचियों का संघ हुआ और एकाध उपचार की चर्चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई कि अफ़ीम का आनन्द और उसमें डूबकर मधुर स्वप्न दीखने का असत्य प्रलोभन नये ग्राहकों को फांस लेता है। फिर वे उसमें हमेशा के लिए तैरते रहते हैं। यूनानी और वैद्यक में अफ़ीम का प्रयोग बिल्कुल सही अवस्थाओं में होता है, लेकिन अताई चिकित्सक इसका प्रयोग निर्भय होकर प्रत्येक अवस्था में करते रहते हैं। ठंड, सर्दी और मलेरिया के आक्रमण से बचने के लिए इसका प्रयोग करने में अब डाक्टरों का विश्वास नहीं रहा। ग़रीब आदमी अपनी भूख मारने के लिए और सर्दी के दिनों में बच्चे को गरम रखने के लिये अब भी अफ़ीम व्यवहार में लाते हैं। लेकिन अफ़ीम की सबसे अधिक खपत इन उपचारों में नहीं होती बल्कि वहाँ होती है जहां अफ़ीमचियों की सोसायटी और पीनक में घूमने की लालसा अधिक रहती है। डाक्टर कर्नल आर० एन० चोपड़ा जिन्हें भारत सरकार ने अफ़ीम के शिकारों की दुर्दशा जांचने के लिये नियुक्त किया था, लिखते हैं कि 'अफ़ीमचियों' की सोहबत ने अफ़ीम का प्रचार बढ़ाया है। आसाम में अफ़ीम की लत बुरी तरह लोगों में लगी हुई है। यद्यपि इस प्रान्त का जलवायु मलेरिया उत्पादक है। ब्रह्मपुत्र के प्रान्तों में भी अफीम का अधिक प्रचार है, जबकि वहां का जलवायु मलेरिया उत्पादक नहीं है। उड़ीसा में अफ़ीम की बेहद ख़पत होती है, वहां पहाड़ी जिलों में तो प्रचार है पर नीचे के ज़िलों में बिल्कुल भी नहीं है। कर्नल चोपड़ा इसका कारण अफ़ीमचियों की सोहबत ही बताते हैं। पंजाब के विषय में भी उनकी यही धारणा है।

कहते हैं कि मुसलमानों में अफ़ीम का अधिक सेवन किया जाता है क्योंकि क़ुरान में शराब पीना वर्जित है। लेकिन पूर्वी बंगाल में जहां

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुसलमानों की ही आबादी है अफ़ीम की खपत कम है क्योंकि वहां अफ़ीमी सोसाइटी का संसर्ग नहीं है। बहुत से लोग गहरी नींद सोने के लिये अफ़ीम की मात्रा लेते हैं। हाँगकाँग में व्यापारी और दुकानदार लोग पहले तो अफ़ीम खा लेते हैं और पीछे से 'जिम' (शराब) की थोड़ी मात्रा पीते हैं जिससे उनकी आंखों में अफ़ीम की पीनक नहीं दिखाई देती, ग्राहकों को उनके अफ़ीम सेवन का आभास नहीं मिलता।

अब हमें इस प्रश्न पर विचार करना चाहिये कि अफ़ीम की लत कहां तक लाभदायक है, और कहां तक भयानक है। तम्बाकू और चाय भी तो इसी श्रेणी के विष हैं। कुछ लोग वर्षों तक अफ़ीम खाने के अभ्यासी रहे हैं, और तम्बाकू भी पीते रहे हैं, फिर भी उनमें कोई ख़ास बुराई देखने को नहीं मिलती। ऐसे लोग काम करते रहने के योग्य तो होते हैं पर उनके ज्ञान ततु सर्वथा नष्ट हो चुके होते हैं तम्बाकू पीना उतना हानिप्रद नहीं है जितना अफ़ीम लेना। तम्बाकू के अभ्यास को तो छोड़ा भी जा सकता है, पर अफ़ीम का चस्का छूटना कठिन है। और जो लोग इसे छोड़ देते हैं, उन्हें रोग, चोट और अन्य आकस्मिक दुर्घटनायें अनायास ही अपनी चपेट में ले लेती हैं। अफ़ीम छोड़ने के लिये अधिक से अधिक मानसिक शक्ति की आवश्यकता, होती है। अफ़ीमची को पारिवारिक सुख कदापि प्राप्त नहीं हो सकता। ब्रिटिश फौज़ में यदि कोई सैनिक अफ़ीम का सेवन करते देखा जाता है तो उसे नौकरी से बरख़ास्त कर दिया जाता है, क्योंकि उसकी बफ़ादारी सन्देहमयी हो जाती है। भारत के गाँवों की अनेक मृत्यु सरकारी रजिस्टरों में दर्ज होती हैं और ये मृत्यु अधिकतर अफ़ीम का परिणाम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होती हैं। अफ़ीम की बिक्री के लिये रजिस्टर्ड लाइसेन्स दिये जाते हैं और महीने में बेचने की तौल भी सीमित है फिर भी दुबका चोरी से मनों अफ़ीम बिकती है। आसाम में एक भिखारी युवक जो अफ़ीम का जर्जरित शिकार था और जो अपने पैरों खड़ा भी नहीं हो सकता था, कमर में एक मटमैला थैला लिये फिरते देखा गया, इसके थैले में वही थी अफ़ीम थी जो सरकारी होती है और इसे वह बेच रहा था। कलकत्ते में अफ़ीम की सबसे बड़ी दुकान हावड़ा पुल के समीप है, उस दुकान पर सबसे अधिक बिक्री शाम को होती है जबकि हज़ारों आदमी अपनी नौकरी पूरी करके जल्दी २ क़दम बढ़ाये स्टेशन की ओर ट्रेन पकड़ने जाते हैं और झट से पैसे फेंक कर अफ़ीम की पुड़िया जेब में डालते हैं।

आजकल ब्रिटिश भारत में अफ़ीम बनारस ऐजेन्सी में सरकार की कड़ी निगरानी में बोई जाती और तैयार होती है।

फिर भी इसके विषम परिणाम को सरकार ने अनुभव किया और वह प्रति वर्ष इसकी काश्त के लाइसेन्स देने में कमी करती गई। सन् १९२०-२१ में काश्त के लाइसेन्सों की संख्या ४४११५१ थी और वह घटते घटते सन् १९२५-२६ में २८१६९४ ही रह गई। पहले १८५६८९ बीघा ज़मीन में काश्त होती थी, पीछे वह ११३६९१ बीघा ही रह गई। इस कमी का कारण कुछ तो सरकार की नीति में परिवर्त्तन और कुछ पहले स्टाक का बचा पड़े रहना था। सन् १९२०-२१ में १४३४० मन अफ़ीम पैदा हुई, सन् १९२४-२५ में २८२५४ मन और सन् १९२५-२६ में केवल १३०३० मन ही हुई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिन्दू धर्म में अफ़ीम की काश्त करना वर्जित है, लेकिन सरकार काश्तकारों को पेशगी रुपया देकर प्रोत्साहन देती है। ३१ अक्टूबर १९२६ में अफ़ीम के लिए ७००९१० रुपये, भांग के लिए ८९०० रुपये और सिंचाई के कुओं के लिये १०३४८ रू० पेशगी दिये गये। फसल पकने पर पौदो की डोंडों में छेद करके उसमें से दूध को बर्त्तनों में संग्रह किया जाता है। एक डोंडे में से थोड़ा थोड़ा नित्य दूध निकलता है। जब तक वे दूध देकर सूख न जाय तब तक दूध निकाला जाता है। सूखे डोंडे बाजारों में पोस्त के डोंडे के नाम के बिकते हैं। पोस्त इन्हीं में से निकलती है। यह दूध कुछ सूख जाता है तबइसे कच्ची अफ़ीम कहते हैं काश्तकारों से कच्ची अफ़ीम को एकत्र करने में भी बहुत सावधानी और निगरानी रखी जाती है, अप्रेल से जून तक तमाम माल गाज़ीपुर सरकारी अफ़ीम फेंक्टरी में पहुँचाया जाता है। यह फेक्टरी हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी है, सन् १९०७ से जबकि चीन को अफीम जानी बन्द हो गयी इसमें ज्यादा अफ़ीम नहीं बनती। फेक्टरी में कच्ची अफ़ीम को बड़े बड़े चौकोर हौदों में इकट्ठा करके सड़ाते हैं। कुछ दिन बाद उसके उपर काली पपड़ी जम जाती है, इस पपड़ी में बुलबुले उठने लगते हैं। फिर उसे पकाते हैं पकाकर धूप में सुखाते हैं। जो कर्मचारी इस काम को करते हैं उन्हें धूंएं और परमाणुओं की गन्ध के कारण प्रति दसवें दिन अवकाश लेना पड़ता है। सारी निर्माण विधि पर कठोर नियन्त्रण है। प्रत्येक कर्मचारी की बहुत बारीकी से आते जाते तलाशी ली जाती है। गाज़ीपुर में अफीम चार प्रकार की बनती है एक तो, योरोप के लिये, जो हाई कमिश्नर लन्दन की सँरक्षता में डाक्टरी औषध के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिये भेजी जाती है। दूसरी, भारत के लिये ही डाक्टरी औषध में व्यवहार करने के लिये पहली से थोड़ी भिन्न बनती है। तीसरी, आबकारी विभाग के लिये बनती है जो भारत में सर्वसाधारण के खाने में आती है। और चौथी, उन देशों के लिये बनती हैं जहां इसका सेवन खाने में नहीं, पीने में करते हैं। गाज़ीपुर का रासायनिक विभाग अफ़ीम का सत (मरफ़िया) भी निकालता है। ६ फरवरी १९२९ ई० को भारत के अर्थ मंत्री सर जॉर्ज शुस्टर ने देहली की लेजिस्लेटिव असेम्बली में रेवेन्ड जी० जी० चटर्जी के प्रश्नों के उत्तर में बताया था कि गाजीपुर में अनेक वर्षों से Pure Morhine जों लाभदायक डाक्टरी औषध है बनता रहा है। यह केवल एक ही बार सन् १९२३-२४ में ४३० पौंड ग्रेट ब्रिटेन को भेजा गया था, शेष सबकी खपत भारत में ही औषध विक्रेताओं में हुई है।" ख़राब और इधर उधर की ग़ैर कानूनी अफ़ीम को काम में लाने के लिये कच्चा (crude) मरफिया अधिक मात्रा में बनाया जाता है। सन् १०२३-२४ में ४००० पौंड, १९२४-२५ में २००० पौंड, १९२५-२६ में ५००० पौंड, १९२६-२७ में बिल्कुल नहीं, १९२७-२८ में ११०० पौंड कच्चा मरफ़िया बनाया गया। ये आंकड़े अकेले भारत में बने माल की मात्रा को प्रकट करते हैं, जबकि योरोप में भी कच्चा मरफ़िया संसार भर की डाक्टरी मांग से अधिक तैय्यार किया गया। भारत में बना यह सब मरफिया लन्दन को उस अफीम के बदले भेजा गया जो वहां मरफ़िया बनने के लिये भेजी जाती थी। इसका आर्डर लन्दन के औषध निर्माताओं ने ब्रिटिश होम ऑफिस की आज्ञा प्राप्त करके भेजा था। सन् १९२८ के मार्च महीने से इसका बनाना बन्द कर दिया गया,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और उसकी जगह कोडाइन Codeine बनने लगी, यह मरफ़िये से कम जोख़िम रसायन है। अफ़ीम से Heroin हरोइन मरफिया जैसी अन्य वस्तु भी बनती है, पर वह गाज़ीपुर में नहीं बनाई जाती।

लन्दन को प्रतिवर्ष जो अफ़ीम भेजी जाती है, उसका परिमाण वहाँ के आर्डर पर निर्भर है। आर्डर हाई कमिश्नर के ऑफिस से दो प्रतिष्ठित ब्रिटिश फ़र्मों के लाइसेन्स प्राप्त करने पर भेजा जाता है। यह लाइसेन्स लन्दन के होम आफिस से स्वीकृत होता है और इसकी मात्रा निर्धारित होती है। इन ब्रिटिश फर्मों को गाज़ीपुर अफ़ीम ख़रीदने के लिये तीन लाइसेंस प्राप्त करने पड़ते हैं:—

१. निर्धारित वज़न तक माल लेने और उसका औषध बनाने का लाइसेन्स, होम ऑफिस से।
२. अफ़ीम पार्सल को ब्रिटेन की भूमि पर जहाज़ से उतारने की हाई कमिश्नर के ऑफिस को होम आफिस की आज्ञा।
३. गाज़ीपुर के अधिकारियों को भारत सरकार का, माल बाहर भेजने का परवाना।

पहली नवम्बर १९२४ से ३१ अक्तूबर १९२५ तक ११६००० पौंड (Medical opium) जो लगभग १४५० मन होती है लन्दन भेजी गई थी और १६००० पौंड यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका भेजी गई। अमेरिका में अफ़ीम सदैव नहीं जाती है। इसके सिवा ४५१ पौंड चकी और १२६७ पौंड चूरे की शक्ल में अफ़ीम भारत के भिन्न २ प्रान्तों में भेजी गई जिसमें ५ भाग कलकत्ते, १ भाग लाहौर, १ भाग अहमदाबाद और शेष सरकारी डाक्टरी स्थानों पर पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १९२५-२६ में कुल ७१० पेटियां (जिसमें से १०८ भारत के आबकारी विभाग को दी गई थीं।) लन्दन भेजी गईं और दो और मद में दी गई। और भारत में डाक्टरी व्यवहार के लिये ७५० पौंड चकी और १३४१ पौंड चूरा दिया गया। एक पेटी में डेढ़ मन अफ़ीम होती है इस हिसाब से लन्दन में ९०० मन अफीम गई जबकि सन् १९२४-२५ में १४०९ मन गई थी। आबकारी विभाग द्वारा. मालवे की मनों अफ़ीम चोरी से इधर उधर जाती हुई पकड़ी जाती है, जो मुफ्त बराबर ही सरकार के ख़ज़ाने में जमा होती है।

आबकारी की अफ़ीम की, जो भारत के प्रान्तों में सर्व साधारण के व्यवहार में आने के लिये बेची जाती है, एक-एक सेर की छै पहलू चकी (डली) बनती हैं, ऐसी साठ चकियां फिर पेटी में बन्द होती हैं, सन् १९२५-२६ में ५२२० पेटियां बेची गईं। इस अफ़ीम में दो भाग मालवी अफ़ीम और एक भाग बनारसी अफ़ीम का मिश्रण होता है। मालवी अफ़ीम वह है जो भारत की रियासतों में बोई जाती है। बनारसी अफ़ीम से इसमें तेल का अंश अधिक होता है और यह कम साफ़ होती है। इस कारण से इसका नशा कम होता हैं। दोनों अफीमों का यह भेद पौदे के डोंडे से रस संग्रह करने की भिन्न २ पद्धति के कारण से होता है। भारत में खपने के लिये तेल अंश वाली अफ़ीम अधिक उपयुक्त समझी गई है। सन् १९२४-२५ में ९३१० मन, और १९२५-२६ में ३३४७ मन कच्ची मालवी अफीम रियासतों से ख़रीदी गई, जिसमें से आधी तो संयुक्त मालवी रियासतों से और इतनी ही ग्वालियर तथा कुछ इन्दौर से आई थी। सन् १९२४-२५ में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७९६९ मन और १९२५-२६ में ७८७१ मन आबकारी अफ़ीम भारत में सर्वसाधारण में बिकी। ये आंकड़े बाज़ार की मांग के ऊपर निर्भर है।

Provision अफीम (विदेशों को जाने वाली अफीम) के एक एक सेर के गोले बनते हैं। साठ गोलों को एक पेटी में बन्द करते हैं। सन् १९०७ से प्रथम चीन व्यापार के दिनों में ३०००० से ४०००० पेटियां प्रतिवर्ष बाहर भेजी जाती थीं। १९२५—२६ में १०७४९ पेटियाँ फेक्टरी से बाहर गईं, जिनमें से ८०१७ कलकत्ते में बेची गईं थीं। १९२६—२७ में ७००० और १९२७—२८ में ५००० पेटियां बाहर गईं। पहिली सितम्बर १९२५ को भारत सरकार ने इस बात का निश्चय किया कि आगामी दस वर्षों में अफीम का भारत से इस प्रकार बाहर भेजना बन्द कर दिया जायगा। स्टेट्स उपनिवेश, मलाया स्टेटस्, डच इन्डीज़, फ्रेंच इन्डोचाईना, मकाड, और हांगकोंग में अफ़ीम को पीने का बहुत प्रचार था। जब वहां अफ़ीम के कारण बहुत सी अनधिकार चेष्टायें बढ़ गईं तब भारत सरकार को यह निश्चय करना पड़ा। कलकत्ते में पहले अफ़ीम का खुले आम नीलाम होता था, सरकार को यह भी बन्द करना पड़ा। अभी हाल में आबकारी विभाग ने चीन में बनारसी अफ़ीम पकड़ी थी।

आबकारी और Provision की अफ़ीम को अफ़ीम के पौदे के सूखे पत्तों में लपेट कर पैकिंग करते हैं। इससे मरफिया के परमाणु नष्ट नहीं होते। अफ़ीम के पौदे का शेष भाग भी पैकिंग के उपयोग में ले लिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरकार द्वरा सन् १९२५—२६ में Provision अफ़ीम ५१,१७८,००० रुपये, बनारसी आबकारी अफ़ीम १,९२४००० रुपये, मिली जुली ख़राब क्वालिटी की आबकारी अफ़ीम १०,९०५,००० रुपये, ब्रिटेन को भेजी जाने वाली डक्टरी अफ़ीम २,३४९,००० रुपये से अधिक, भारत में वेची जाने वालीं डाक्टरी अफीम का चूरा ३७००० रुपये से कुछ कम, भारत में काम आने वाली डाक्टरी अफ़ीम की चकी १४००० रुपये से कुछ कम, और Alkaloids अफ़ीम (लगभग सभी मरफिया के रूप में इंगलैंग भेजा गया) ३०२,००० रुपये से अधिक की बेची गई।

इंगलैंड को जो डाक्टरी अफ़ीम भेजी गई उस पर २४५,००० रुपये का नुकसान तथा Provision अफ़ीम पर १९,६९५,००० रुपये और Alkaloids अफ़ीम पर १६५००० रुपये का लाभ रहा।

भारत सरकार अफ़ीम पीने के अभ्यास को पसन्द नहीं करती, फिर भी पीने का अभ्यास आसाम में अधिक प्रचलित है। यू० पी० कलकत्ता, और गोदावरी के प्रदेश में भी पीने का थोड़ा प्रचार है।

तमाम ब्रिटिश भारत में कोकीन इंजेक्शन की खुली छुट्टी नहीं है। नाज़ायज़ कोकीन रात दिन आबकारी विभाग और पुलिस द्वारा पकड़ी जाती है। यू० पी० के आबकारी विभाग के मत से ज्यादातर कोकीन जर्मनी जापान और इटली से आती है। बम्बई में पठान लोग नाज़ायज़ कोकीन बेचते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुकानदारों को अफीम बेचने के ठेके दिये जाते हैं, जिसकी बोली ऊंची होती है, उसी के नाम पर ठेका छोड़ा जाता है। आबकारी विभाग के इन्सपेक्टर ठेकेदारों को ऊंची बोली बोलने के लिये प्रोत्साहन देते हैं और अफीम बेचने के नये नये बाज़ार (जहाँ अभी तक अफीम बेचने का उसका ध्यान भी न गया हो) बताते हैं। परिणाम यह होता है कि अफीम की बोली का भाव बढ़ जाता है, और भाव बढ़ने से टैक्स बढ़ता है। मंहगी अफीम होने पर भी अफीम की खपत में कमी नहीं होती, लोग चोरी से इसको बनाते और बेचने लगते हैं। और जिसे अफीम की लत पड़ जाती है वह न महगी देखेगा, न सस्ती। वह कितना भी गरीब क्यों न हो, सौ उपाय करके अफीम लेगा। आज बहुत से परिवार इसी नीति के कारण बर्बाद हो चुके हैं और हो रहे हैं।

आसाम में सब से अधिक अफीम का प्रचार है। यद्यपि वहाँ के सभ्य व्यक्ति अफसर लोग भी इस भयंकर अभ्यास को कम करने की चेष्टा करते रहे हैं, परन्तु किसी ने भी सफलता प्राप्त नहीं की। फिर भी सन् १९२१ और उसके बाद जो सफलता मिली, तो वह महात्मा गांधी तथा कांग्रेस नेताओं को। महात्मा जी ने अगस्त १९२१ में आसाम का दौरा किया, और जनता को समझाया कि वे जब तक मादक द्रव्यों का सेवन न त्याग देंगे, तब तक स्वराज्य नहीं ले सकेंगे। महात्मा जी जानते थे कि इस अभ्यास को तोड़ना आसामवासियों के लिये कितना कठिन है, फिर भी उन्होंने उनको बारम्बार यही कहा, कि "तुम लोग अवश्य इन बस्तुओं को छोड़ सकते हो। अफीम छोड़ना बहुत ही सहल बात है, ईश्वर में विश्वास रक्खो।" बहुतों ने इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपदेश को हृदयंगम किया और अफीम की पुरानी लत को छोड़ दिया। अगस्त से नवम्बर तक सैकड़ों नवयुवकों ने उत्साहित होकर मादकनिषेध का कार्य अपने हाथ में लिया। उन्होंने दुकानों के आगे खड़े होकर खरीदने वालों को विनयपूर्वक समझाया। कोई अशान्ति नहीं हुई। परन्तु सरकार ने इन लोगों को सरकारी आमदनी में कमी कराने के उद्देश्य के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया, फिर भी अफीम की बिक्री में बेहद कमी हो गई। सन् १९२०-२१ में १६१४ मन अफीम; ६३९ मन गांजा और ३०४५७२ गैलन देसी शराब की खपत हुई। सन् १९२३-२४ में अफीम ८८४ मन, गांजा ३४४ मन और देसी शराब १९१,४२१ गैलन की खपत हुई। इस कांग्रेसी आन्दोलन का स्थायी प्रभाव हुआ और वहां फिर मादक द्रव्यों की खपत नहीं बढ़ी।

एक बार एक जेल के मेडीकल ऑफिसर ने बताया था कि "जेल में जो अफीमची अथवा शराबी सजा काटने आते हैं, उन्हें वहाँ न अफीम ही प्राप्त होती है, न शराब ही। प्रारम्भ के तीन चार दिन तो उन्हें इनके न मिलने से बड़ा कष्ट होता है पर फिर वे निराश हो जाते हैं। और जब वे जेल से छूट कर जाते हैं तब तक उनकी यह आदत हमेशा के लिये छूट गई होती है। वे पहले से अधिक स्वस्थ और मजबूत हो जाते हैं। जब्बलपुर अफीम इन्क्वायरी कमेटी के सामने भी यही बात कही गई थी। केवल पांच फीसदी ऐसे कैदी मिलेंगे जो अफीम अथवा शराब की बहुत ही हुड़क करें। उन्हें जेल में अफ़ीम एक दो बार दे भी दी जाती है। पर पन्द्रह बीस दिन में वह हुड़क भी जाती रहती है। वास्तविक बात यह है कि यदि मनुष्य को यह ज्ञान हो जाय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि अब यह चीज़ मुझे न मिलेगी तो वह अवश्य इस लत से छूट जायगा।

आसाम में गैरकानूनी मादक द्रव्य दो स्थानों से आता है। (१) चीन और तिब्बत। (२) राजपूताना। इनमें राजपूताना अधिक सहल है। चीन की अफीम कभी २ बङ्गाल की खाड़ी में नावों में पकड़ी जाती है, पर वह कम मात्रा में होती है। तिब्बत और मंगोलियन देशों से आने वाली अफीम का उपयोग आसाम की खानों तथा चाय के बागों में काम करने वाले तिब्बी और मंगोलियन कुलियों में ही है। मारघेरिटा के एक अस्पताल में एक तिब्बी कुली ने बताया कि वह अफ़ीम पीता रहा है, उस कुली का नाम सरकारी दुकानों से अफ़ीम ख़रीदने वालों की लिस्ट में दर्ज नहीं था जैसाकि वहाँ का सरकारी नियम है। वह निश्चय से गैर कानूनी अफीम लेता था। तिब्बत से असाम में अफीम आने का मार्ग उत्तर पूर्वी पहाड़ियों और जंगलों में होकर है। जावा और सुमात्रा में भी प्रायः चीन की अफीम पकड़ी जाती है। परशिया की खाड़ी में होकर भी अफीम का मार्ग है।

यदि कोई व्यक्ति प्रति दिन तीन माशा अफीम खाता है तो वह दो माशा मिलने पर बहुत छटपटायेगा, पर यदि उसे बिल्कुल भी न मिले और हताश हो जाये तो वह उसे सर्वदा के लिये छोड़ भी देगा।

आसाम की भयानक स्थिति के बाद उड़ीसा का नम्बर है। उड़ीसा में भी अफ़ीम का अभिशाप है। अबसे दो ढाई सौ वर्ष पहले उड़ीसा बहुत ही वैभवशाली देश था, अंग्रेज़ों ने प्रारम्भ में यहीं से बड़े २ यापार किये थे। पन्तु अफ़ीम की लत ने उसे अब नष्ट कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक तो वहां वैसे भी भयंकर बाढ़ें आतीं और खेत में खड़ी फ़सलों तथा धन जन को बहा ले जाती हैं।

उड़ीसा को उन्नत करने के लिये बिहार प्रान्त में सम्मिलित कर दिया गया था फिर भी उसे विशेष लाभ नहीं हुआ। एक बार इंडिया ऑफिस की आज्ञा से एक अफ़ीम जांच कमेटी उड़ीसा में बैठी थी। इसमें एक भी सदस्य योग्य नहीं था। उसका नं० २ प्रश्न देखिये,

(i) किसी शरीरिक व्याधि के प्रयोग पर लोग विश्वास करते हैं ? अगर ऐसा है तो किन व्याधियों पर ?

(ii) क्या लोग इसके शक्तिवर्द्धक पदार्थ होने पर विश्वास करते हैं ?

(iii) क्या अफ़ीम गठिया के दर्द और अन्य रोगों के आराम करने में बाहरी प्रयोग में आती है ? किन २ रोगों पर ?

इन प्रश्नों से साफ़ प्रकट है कि अफ़ीम की खपत के आधार क्या हैं। कमेटी ने ऐसा कोई प्रश्न नहीं किया जैसे, आपकी राय में अफ़ीम व्यवहार में आने के असली कारण क्या है ? इसके प्रमाण में आप क्या विवरण पेश करते हैं ? कमेटी का आगे चलकर पांचवां प्रश्न यह था,

(५) क्या लोगों को शारीरिक विशेष व्याधियों को रोकने के लिये, अथवा शक्तिवर्द्धक पदार्थ के रूप में, मादक द्रव्य की थोड़ी मात्रा लेना आवश्यक है ? सांतवा प्रश्न अफ़ीम की खुराक के सन्बन्ध में था,

(७) क्या आपको कोई ऐसा उदाहरण ज्ञात है जिसमें अफ़ीम अधिक मात्रा में बिना शौक़ ली गई हो और उससे किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक क्रिया में नुक़सान हुआ हो ?

यह प्रश्न इस बात के समर्थन का संकेत करता है कि जो व्यक्ति डाक्टरी उपचार के सिवा वैसे अफ़ीम का शौक करते हैं, उन्हें अफ़ीम हानिप्रद नहीं हैं। बालासोर के एक डाक्टर के पास बीस प्रश्न दो दिन के अन्दर अन्दर उत्तर देने के लिये भेजे गये। यह डाक्टर बहुत ही व्यस्त अफ़सर थे, और वे प्रश्न भी विचार करने के लिये यथेष्ट समय चाहते थे। इन डाक्टर महोदय ने जो उत्तर जल्दी में दो दिन समाप्त होने पर भेजे थे, उनमें से एक तो उनके भाव से बिल्कुल ही विपरीत लिखा गया था। एक अमरीकन मिशनरी को, जिन्हें मादक द्रव्यों का विशेष अनुभव और ज्ञान था, इस कमेटी के समक्ष गवाही देने के लिये पेश किया, पर उन्हें यह कहकर इन्कार कर दिया गया कि आप देर से आये हैं।

मिस्टर सी० एफ़० एन्ड्रूज़, जिन्हें भारत के गांवों का विशेष ज्ञान है, और डाक्टर चोपरा, दोनों की यही सम्मति है कि देश के कल्याण के लिये अफीमी सोसाटियां नष्ट होनी चाहियें। यही एकमात्र उपाय अफ़ीम छुड़ाने का है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उड़ीसा प्रान्त में जागीरी ठिकानों में अफीम की खपत सन् १९२२—२३

जागीरदारी या स्टेट का नाम	कितनी अफीम खपती हैं		आबादी सन् १९२१	प्रति १०००० आबादीपर कितनी खपत हुई
	मन	सेर		सेर
अथागढ़	11	39	42339	110·7
अथामलिक	2	25	59753	17·6
बमरा	8	0	135432	23·6
बरमबा	2	20	38630	25·8
बौद	5	0	124515	16·0
बोनल	1	35	68186	11·0
दसपाला	3	1	34510	35·0
धेनकानल	32	28	233691	55·9
हिन्डोल	3	32	38621	39·3
खोंडपारा	5	19	64289	34·0
कियोंझर	9	13	379532	9·8
कालाहांडी	4	9	415846	4·0

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ख़ारास्वान	2	4	37409	22·7
मयूर भंज	33	7	754457	17·6
नरसिंहपुर	3	18	33003	41·2
नयागढ़	12	20	122843	40·7
नीलगिरी	6	30	65239	40·0
पटना	12	35	494719	10·4
पल-लहरा	2	8	23791	36·9
रायराखोले	2	0	31229	25·6
रानपुर	2	35	41281	27·8
सरलकेला	5	25	115539	19·4
सोनेपुर	5	15	226663	9·5
गंगपुर	30	8	309847	38·9
तल़चर	7	21	51006	59·0
तिगीरिया	4	38	19535	101·5

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिहार और उड़ीसा प्रान्त की खपत

नाम ज़िला	आबादी सन् १९२१	कितनी अफीम दी गई (सेरों में)	प्रति १०००० आबादी पर खपत सेरों में
पटना	1609631	2094	13·0
गया	2159498	980	4·5
शाहाबाद	1865660	426	2·2
सारन	2289778	306	1·3
चम्पारन	1908385	296	1·5
मुजफ़्फरपुर	2845514	482	1·6
दरभंगा	2929682	618	2·1
मुंगेर	2132893	662	3·1
भागलपुर	2139318	894	4·1
पुरनियाँ	1989637	1958	9·8
संथाल परगना	1882973	739	3·9
कटक	2109139	5372	25·4
बालासोर	1055568	5903	55·9

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंगूल	199451	242	12·1
पुरी	1023402	3097	30·2
सम्बलपुर	744193	840	11·2
हजारीबाग	1288609	691	5·3
रांची	1387516	762	5·4
पालामऊ	687267	445	6·4
मानभूम	1547576	817	5·2
सिंहभूम	694394	1000	14·4
जोड़	34,490,084	28,624	8·2

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १९२७ में कलकत्ते में एक जांच कमेटी बैठी थी। इसका उद्देश्य अफीम से उत्पन्न बुराइयों का कारण जाँच करना था। उस जाँच से पता चला कि कलकत्ते में मध्यम श्रेणी के बंगाली कच्ची अफीम बहुत खाते हैं। यह कच्ची अफीम गैर कानूनी और चोरी छिपे आती और बिकती है। सन् १९१२ के आंकड़े देखने से तो यही प्रतीत होता है कि वहाँ अब पहले की अपेक्षा खपत कम है। अब वहां पचास के पीछे एक व्यक्ति कच्ची अफीम खाता है। कलकत्ते में चीनी मर्द और औरतें भी अफीम खाती हैं, मर्द पीते भी हैं। बहुत से व्यक्ति तो ऐसे हैं जिन्होंने किसी रोगवश अफीम व्यवहार में ली थी, पीछे वह लत ही पड़ गई।

कलकत्ते में खपत के ये कारण हैं:—

१. अफीचियों द्वारा अधिक मात्रा में अफीम खाना।

२. पीने के लिये अफीम लेना।

कलकत्ते में अफीम पीने के लगभग १७५ अड्डे हैं। जांच कमेटी ने सिफारिश की थी कि (१) ये सब अड्डे सख्ती से बन्द कर दिये जाँय और इनके मालिकों को कठोर दंड दिया जाय। (२) बेचने और ठेके में जमा रखने की मात्रा में कमी कर दी जाय। अर्थात् कलकत्ते शहर में एक तोला (१८० ग्रेन) और सिरामपुर में दो तोला (३६० ग्रेन) की जगह घटकर केवल १२ ग्रेन ही बेचने और खरीदने का अधिकार रह जाय। बहुत ही पक्के अफीमची, जिसे अधिक अफीम लेने के लिये सरकारी रजिस्ट्री टिकट लेना होगा, की बात अलग है। अब तो डाक्टरी राय भी यह है कि ५ या ६ ग्रेन की दैनिक मात्रा भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हानिप्रद है। दर्द अथवा अन्य उपचारों के लिये १ या २ ग्रेन काफी है। (३) सारे बंगाल प्रान्त में वेचने और रखने की मात्रा एक तोले से अधिक न रहने दी जाय और आगे चलकर फिर आधा तोला कर दी जाय। (४) पुराने अभ्यस्त अफीमचियों का नाम सरकारी रजिस्टर में दर्ज कर लेना चाहिये और उनको कुछ अधिक अफीम प्राप्त करने के सरकारी रजिस्ट्री-कार्ड छै महीने के अन्दर अन्दर दे देने चाहियें। (५) अन्य कोई व्यक्ति १२ ग्रेन से अधिक (केवल डाक्टरी नुसखे को छोड़कर) न पा सके। (६) मूल्य में क्रमशः वृद्धि हो। (७) फुटकर खरीज बेचने का भाव प्रान्त भर में एक हो जिससे चोरी छिपे अफीम न बिक सके। (८) अफीम वेचने वाले ठेकेदार को सरकार नियत वेतन दे, जिससे वह बिक्री बढ़ाने का उद्योग न करे। (९) यह सब व्यवस्था बन जाने पर छोटे २ अफीमचियों का नाम भी रजिस्टर में दर्ज कर लिया जाना चाहिये। (१०) चिकित्सा के केन्द्रों को प्रोत्साहन दिया जाय। (११) गैर सरकारी आन्दोलन को भी प्रोत्साहित किया जाय। (१२) मिल मालिकों से प्रार्थना की जाय कि वे मिल में काम करने वाली मजदूर माताओं की निगरानी रखें कि कहीं वे अपने बच्चों को सुलाने तथा चुप पड़ा रहने देने के लिये अफीम तो नहीं दे रही हैं। (१३) बिक्री की दुकानों को कम किया जाय, और वे मिल अथवा फैक्टरियों के आस पास में न रहें।

इन उपायों से यह प्रकट है कि अफीम को चारों ओर से बांधने की चेष्टा की गई है। परन्तु जब तक जनता के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी सरकार का सहयोग न दें तब तक सफलता में सन्देह है। क्या यह ठीक न होगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि अफीम बेचने का अधिकार औषध विक्रेताओं को सौंप दिया जाय और ठेके तोड़ दिये जांय। मूल्य में वृद्धि की नीति बहुत ही घातक सिद्ध होगी, क्योंकि गरीब और मजदूर अफीमी अपनी सारी कमाई देकर भी अफीम खरीदेगा और इस प्रकार वह स्वयं तो नष्ट होगा ही, उसके स्त्री बच्चे भी भूखे मरेंगे और नष्ट होंगे।

जब्बलपुर जांच कमेटी ने यही उपाय बताये थे कि अफीम खरीदने की मात्रा चौथाई तोला या ४५ ग्रेन कर दी जाय।

कानपुर जाँच कमेटी का कहना है कि अफीम की खपत तांगे-वालों तथा अपराध करने वालों में अधिक है।

बनारस कमेटी ने भी मादक द्रव्यों को बिल्कुल बन्द कर देने की सिफारिश की है।

वर्त्तमान में, मात्रा से अधिक अफीम रखने पर अथवा अड्डे में जाकर अफीम पीने पर जो सजा दी जाती है वह कम है। यू. पी. में सन् १८७८ से एकत्र होकर अफीम पीना जुर्म है, लेकिन ऐसा अब भी होता है। सन् १९२७ में एक अनुभवी अधिकारी ने लखनऊ को लक्ष्य करके यह बात कही थी कि बड़े शहरों में अब भी एक दर्जन अफीम पीने के अड्डे हैं जहां तीन सौ व्यक्ति नियमपूर्वक अफीम पीकर स्वर्ग का आनन्द लेते हैं। सन् १९२६ में ऐसे चार केस पकड़े गये थे।

नवम्बर सन् १९२४ में एक सरक्यूलर लेटर भारत सरकार ने सब प्रान्तीय सरकारों के पास भेजा था जिसमें एक साथ मिलकर काम करने का प्रस्ताव था और विशेषतया सर्वत्र एक ही मूल्य रखने की प्रेरणा थी जिससे चोरी छिपे अफ़ीम बेचना खरीदना बन्द हो सके! इन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब योजनाओं के उत्तर प्रान्तीय सरकारों ने भारत सरकार को भेज दिये, जिसे उसने अपने एक विशेष वक्तव्य और नीति के साथ जून १९२६ में प्रकाशित किया।

सन् १८९३ में रायल कमीशन ने भी अफ़ीम की जांच की थी। उसने यह शिफ़ारिश की थी कि कच्ची अफीम की माध्यम मात्रा रहने दी जाय, चाहें वह शारीरिक व्याधि के लिये व्यवहार में ली जाय अथवा शक्ति बढ़ाने या आनन्द लेने के लिये ली जाय। रायल कमीशन ने अन्य छोटी २ बातों को भी दर गुज़र कर दिया था। भारत सरकार रायल कमीशन की रिपोर्ट के अनुकूल है, पर वह यह प्रकट नहीं करती कि उस कमीशन के एक सदस्य मिस्टर एच० जे० विल्सन ने इस रिपोर्ट से अपनी एक ज़ोरदार और अकाट्य विपरीत टिप्पणी लिखी थी। स्वर्गीय मिस्टर जोशुआ रौनट्री ने अपनी पुस्तक "दी इम्पीरियल ड्रग ट्रेड" में इस रिपोर्ट की थोथी और एकतर्फा कार्यवाही की अच्छी विवेचना की है। यह पुस्तक सन् १९०५ में प्रकाशित हुई थी।

"लीग ऑफ नेशन्स अफीम कमेटी" ने अन्तर्राष्ट्रीय अफीम समस्या पर विचार करने के लिये अनेक विद्वान डाक्टरों से परामर्श लिया था, उन सबकी यही राय थी कि नियमित रूप से अफीम सेवन करना उचित नहीं है। यह वक्तव्य सन् १९२६ का है। इन्हीं दिनों इंडियन मेडीकल सरविस के डाक्टर कर्नल चोपरा ने भी जांच करके यही राय प्रकट की।

कांग्रेस ने भी अपनी कांग्रेस जांच कमेटी बनाई थी और निष्पक्ष रूप से जांच की थी। परन्तु उसकी सिफारशों को सरकार ने बहुत ही कठोर पाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण २

मालवी अफीम

ब्रिटिश भारत में जो मनों गैर कानूनी अफीम पकड़ी जाती है वह अधिकांश राजपूताने की होती है। इस चोरी के व्यापार का कारण वहाँ अफीम का बहुत सस्ता होना और ब्रिटिश भारत में बहुत मंहगा होना है। यदि कोई व्यक्ति एक मन अफीम राजपूताने से २००) रुपयों की खरीद कर सही सलामती से ब्रिटिश भारत में बेच दे तो उसे कम से कम एक हजार रुपये बचेंगे।

राजपूताने की किसी किसी स्टेट में अफीम की खेती करना बहुत लाभप्रद सौदा रहा है। लेकिन थोड़े ही समय से अधिकारियों ने इस पर पूरा अधिकार और नियन्त्रण रखने की कोशिश की, और भूपाल तथा जयपुर ने तो बिल्कुल ही खेती न करने की चेष्टा की है। जयपुर सरकार.तो प्रति वर्ष अपने आबकारी विभाग की रिपोर्ट भी प्रकाशित करने लगा है।

आजकल राजपूताने में अफीम की पैदावार के दो बड़े बड़े स्थान हैं। झालरापाटन, मन्दसौर, सीतामऊ और राजगढ़ के आसपास रतलाम तक खूब पैदा होती है। कोटा और टोंक के आसपास भी होती है। टोंक से 'अफीम बिस्कुट' बनकर जैसलमेर और जोधपुर आते हैं। इन जिलों में बहुत अधिक खपत होती है। जैसलमेर में एक वर्ष में एक हजार सेर अफीम प्रति दस हजार जन संख्या पीछे खर्च

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होती है। इस प्रचुरता का कारण लोगों का खाना तो है, परन्तु चोरी छिपे बाहर जाना भी है। इन स्टेटों से अन्य राजपूती स्टेटों, और वहां से सर्वत्र फैलना, यह सारा व्यापार जोधपुरी मारवाड़ियों के हाथ में है। अंकों की गणना के अनुसार ब्रिटिश इलाकों के पड़ौस की देसी रियासतों में अफीम की खपत हमेशा अधिक होती है।

टोंक के इलाके की अपेक्षा अन्य इलाकों में सरकार का अधिक नियन्त्रण है। अफसर लोग अफीम इकट्ठा करते, सुखाते और तेल लगा कर तैयार करते हैं। काश्त करने वाले को उसकी अफीम के ७) रुपये सेर के दाम मिलते हैं, जबकि सरकार की बेचने की कीमत १२) से लगाकर १५) रुपया तक है। गाजीपुर की अफीम २६) रुपया सेर बिकती है।

राजपूताने की अफीम मालवी अफीम के नाम से प्रसिद्ध है। सन् १९०७ में जब भारत सरकार ने चीन को अफीम न भेजने का निश्चय किया, तब उसने मालवी स्टेटों को इस बात की सूचना दी कि अब हमें तुमसे माल खरीदने की कम आवश्यकता होगी। सरकार की इस अचानक कमी ने अनेक मारवाड़ी व्यापारियों पर वज्रपात किया, क्योंकि उनके हाथ में अफीम का काफी स्टॉक मौजूद था। कुछ समय तक तो यह स्टाक व्यर्थ पड़ा रहा, किन्तु जब अन्य अफीमों पर पाबन्दियां लग गईं और भाव मंहगा हो गया तब नाज़ायज़ व्यापारियों ने उसे खरीदना और बेचना आरम्भ किया और इस स्टॉक की अच्छी कीमत उठी। इन नाजायज़ व्यापारियों के कारण भारत सरकार परेशान है। यद्यपि इन रियासतों में अफीम पर भारत सरकार का नियन्त्रण नहीं है, फिर भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह लीग ऑफ नेशन्स के समक्ष दुनियां के और देशों में नाजायज अफीम पहुँचने की जिम्मेदार है, क्योंकि दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और सुदूर देशों में मालवी अफीम नाजायज तौर से पहुंची है। बम्बई से मेल वोट दक्षिण अफ्रीका को जाती है उसमें कभी कभी निश्चय चोरी से अफीम जाती है। तलाशियां होती हैं, परन्तु कम।

मई सन् १९२७ में वायसराय ने अफीम उत्पादक देसी रियासतों की एक कॉन्फ्रेंस बुलाई और उसमें अपने भाषण में स्पष्ट रूप से सरकार की परेशानी बताई। उन्होंने कहा, "जैसा कि आप सबको ज्ञात है कि रियासतों में अफीम का भारी स्टाक है जिसकी निकासी का कोई कानूनी नियम नहीं है। साथ ही अफीम की काश्त भी होती रहती है, और नया माल तैय्यार होने पर पुराना स्टाक रुका रहता है। सो, जब तक यह स्टाक है और नई पैदावार भी रुकती नहीं है तब तक भारत सरकार अफीम की नाजायज रवानगी का अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व लेने को तैय्यार नहीं है। आप लीग आफ नेशन्स के कमीशन अथवा 'जेनेवा अफीम कन्वेन्शन' की धारा २४ के अनुसार दिसम्बर सन् १९२८ में नियुक्त सेन्ट्रल बोर्ड के समक्ष क्या उत्तर देंगे, जब वे रियासतों में प्राइवेट लोगों के पास नाजायज एकत्रित अफीम के विशाल ढेर की ओर ध्यान आकर्षित करेंगे, और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से उसके भयानक परिणाम पर विचार प्रकट करेंगे? क्योंकि पकड़ा-धकड़ी के लगातार सिलसिलों से इस बात पर काफी प्रकाश पड़ता है कि रियासतों से समुद्र तट की ओर अफीम का नाजायज श्रोत्र जारी है।

"अन्दरूनी स्थिति भी इतनी ही गंभीर है। मुझे विश्वास है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि नाजायज अफीम ब्रिटिश भारत में ही नहीं बल्कि दूसरी पड़ौसी रियासतों में भी जाती है।

"तीसरी समस्या कुछ रियासतों में अफीम की अधिकाधिक खपत का होना है। इस खपत के कारण भारत और भारत से बाहर अप्रिय भावना का बढ़ना है, जिससे रियासतों और भारत सरकार दोनों पर अविश्वास उत्पन्न होता है।"

वायसराय महोदय ने आगे चलकर सर बेसिल ब्लेकेट की परीक्षण नीति की चर्चा की कि "इससे रियासतों की काश्त बन्द हो जायगी और भारत सरकार लागत मूल्य पर उन्हें अफीम देगी। सन् १९०६ से १९१६ तक मध्यभारत और राजपूताने में काश्त भूमि का क्षेत्रफल २४४,००० एकड़ से घटकर १००,००० एकड़ रह गया। सन १९२३ से १९२६ तक ७२,००० एकड़ से घटकर ३५,००० एकड़ ही रह गया। क्योंकि काश्तकारों ने यह देखा कि गेहूँ और अन्य खेती से अच्छा लाभ होता है। इन्स्टीट्यूट आफ प्लान्ट इन्डसट्री इन्दौर के डाइरेक्टर मिस्टर होवर्ड के अनुसंधानों से यह बात विदित हुई कि जावा सुगर केन और गेहूँ की संशोधित किस्म 'पूसा ५' की काश्त की जावे और खेतों को ट्यूब कुओं द्वारा सींचा जाय तो अफीम की पौद से यह अधिक उन्नतिशील है।"

देशी रियासतों की इस कानफ्रेन्स ने वादविवाद के पश्चात सारी परिस्थिति समझने के लिये एक कमेटी नियत की जिसके ये उद्देश्य थे:—

१. अफीम की काश्त के बदले अन्य दूसरी काश्त करना कहाँ तक संभव है और इसका प्रभाव रियासत और प्रजा की समृद्धि पर क्या पड़ेगा?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२. अफीम की अधिक से अधिक खपत कहां तक निश्चय की जाय ? किस अवसर पर और किस लिये ? बिक्री के लिये यह कैसे तैयार होती है और विक्रेता पर इसका प्रभाव क्या पड़ता है ?

३. रियासतों में अफीम का कितना स्टॉक बचा पड़ा है और उसकी निकासी का सबसे उत्तम मार्ग क्या है ?

४. नाज़ायज तौर से चोरी छिपे माल ले जाने के विरुद्ध मोर्चा कैसे लिया जाय ?

५. रियासती अफीम नीति और ब्रिटिश भारत की अफीम नीति को एक समान बना देना कहाँ तक उपादेय होगा। जैसे, रियासतों में अफीम की काश्त बन्द करदें और अफीम गाज़ीपुर फेक्टरी से लागत मूल्य पर खरीदी जाय जिससे रियासतों में भी ब्रिटिश भारत के भाव पर बिके।

कमेटी की रिपोर्ट एक साल तक भारत सरकार के हाथ में प्रकाशित होने के लिये पड़ी रही और बटलर कमेटी की रिपोर्ट की प्रतीक्षा करती रही, जो देसी रियासतों का भारत सरकार से वैधानिक सम्बन्ध निर्णय करने वाली थी। यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई पर इसमें अफीम का नाम मात्र को ही जिक्र है।

पहली जांच रिपोर्ट के विषय में हम समझते हैं कि रियासतों से अफीम का गैर कानूनी ढंग से जाना तब रुक सकता है, जबकि भारत सरकार १०,४००,००० रुपये देकर वहाँ पड़ा सब स्टॉक खरीद ले और गाजीपुर में उसकी डाक्टरी अफीम बनाले। इसकी खपत होने तक युक्तप्रान्त में भी काश्त बन्द रहे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ३

बरमा

बरमा में तीन जाति बसती हैं; बरमी, भारतीय और चीनी। सरकार तीनों के लिये अलग २ 'अफ़ीम नीति' का व्यवहार करती है। बरमी और भारतीय तो अफ़ीम खाते हैं, तथा चीनी पीते हैं। बरमी कानून में चीनियों को ही अफ़ीम पीने की आज्ञा है, भारतीय इसे खा सकते हैं और बरमी कठिनता से प्राप्त करते हैं।

आफ़ीम पीने का एक विशेष लाइसेन्स होता है। सब अफीमी चीनी रजिस्टर में दर्ज रहते हैं। सन् १९२५ की रिपोर्ट के अनुसार कुल ६५४० (१६५० चीनी, ४८८४ भारतीय, ६ अन्य) अफ़ीमियों में १६३६ ने अपने आपको पीने वाला लिखाया, और ३१ दिसम्बर १९२४ तक तमाम प्रान्त में दर्ज़ हुए पीने वालों की कुल संख्या चीनी १६९८८, बरमी ११४४, और भारतीय २०५ थी।

अबसे पहले बरमियों में अफीम खाने वालों की संख्या अधिक नहीं थी और कुछ ही जगह इसका प्रचार था। धीरे २ यह भी कम होती देखी गई। लेकिन सरकार को फिर ज्ञात हुआ कि अफ़ीम खाने वालों बरमियों को नाज़ायज़ अफीम भी बहुत अधिक मात्रा में प्राप्त होती है, तब यह सोचा गया कि एक नया रजिस्टर और बनाय जाय जिसमें 'रोग के आक्रमण को रोकने के अभिप्राय' से अफीम दी जाय और लेने वालों को लाइसेन्स दिया जाय। यद्यपि डाक्टरों की यह खुली राय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी कि अफीम रोग के आक्रमण को रोकने में निरर्थक वस्तु है। म्योंगम्या जिले में जहां सन् १९२४ में इस प्रकार का अनुभव करके देखा गया, वहां सन् १९२६ के आरम्भ तक रजिस्टर में दर्ज़ वैसे व्यक्तियों की संख्या १७६५ थी। उन्हें अपने अफ़ीमी होने का एक डाक्टर सारटीफिकेट दिखाना पड़ता था। अब तो अन्य जिलों में भी रजिस्टर लिखा जाने लगा है।

बर्मा में नाज़ायज ढंग से दो प्रकार की अफीम आती है। १. पूर्व की ओर से 'शान अफीम,' (शान स्टेट्स बर्मा में हैं) २. पश्चिम की ओर से 'मालवी अफीम'। सन् १९२७ की आबकारी रिपोर्ट में 'शान अफीम' को यून्नॉन (चीन का दक्षिण-पश्चिम बड़ा प्रान्त) की अफीम बताया गया है। रिपोर्ट में आगे चलकर लिखा है कि अगले वर्ष समुद्र और रेल द्वारा आने वाली 'मालवी अफीम' और नदी के द्वारा आने वाली 'शान अफ़ीम' में अनुपात से ७:६ की कमी हुई है। सन् १९२५ की रिपोर्ट में इस बात को ठीक निर्णय करने में कठिनाई प्रतीत हुई कि 'शान अफीम' शान स्टेट्स से आती है या यून्नॉन से !

बर्मा सरकार की यह घोषणा है कि गत पन्द्रह वर्षों में अफीम की खपत कम हो गई है। और अफीम-कर की आय भी कम पड़ गई है। सन् १९२७ की रिपोर्ट के अनुसार प्रत्येक १०० व्यक्ति पीछे अफीम की खपत १ सेर का ०·२१ भाग था, जबकि इससे पहले वर्ष की खपत १ सेर का ०·२५ भाग था। दक्षिणी बरमा में कमी का क्रम, १ सेर का ०·३१ भाग और उत्तरी बरमा में १ सेर का ०·०७ भाग था। लीग आफ नेशन्स की अफीम कमेटी के विशेषज्ञों ने प्रत्येक देश की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रति दस हज़ार जनसंख्या के पीछे १२ ग्रेन की आज्ञा देने का निर्णय किया था। साथ ही इस बात की भी हिदायत थी कि डाक्टरी उपयोग में आने वाली अफीम डाक्टरी काम में ही आए। उत्तरी बरमा में डाक्टरी नुस्खों में अफ़ीम नाममात्र को ही होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ४

मलाया

ब्रिटिश राज्य में एशिया के उपनिवेशों में ब्रिटिश मलाया, स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट, (ये सब मलाया प्रायद्वीप के ही भाग नहीं हैं) और Federated & unfederated Malay States को सबसे अधिक अफीम खपाने का कलंक प्राप्त है। इन उपनिवेशों की आयकर का सबसे अधिक भाग अफीम द्वारा प्राप्त होता है। .स्टेट्स सेटिलमेन्ट (Straits Settlement) के एक या दो प्रान्तों में (सिंगापुर को मिलाकर) ५० प्रतिशत का अनुपात है। सन् १९२५ में यह अनुपात तमाम स्टेट्स सेटिलमेन्ट में ३७ प्रतिशत और Federated मलाय स्टेट्स में १४ प्रतिशत था। सन १९२६ में Federated Malay का आबकारी कर (खासकर अफीम या चण्डू+ का ही) फिर बढ़ गया। सरकारी रिपोर्ट ने इसे "Fresh Rocord" लिखा है। वह १२,३६५,००० से बढ़कर १५,८९३,००० हो गया। बाहर से आनेवाला माल सन् १९२१ में ७५००० पौंड से सन् १९२६ में १३१००० पौंड हो गया। इस बीच में चीनियों की जन संख्या में वृद्धि हुई हो यह बात भी विश्वास योग्य नहीं है। सन् १९११ और १९२१ की जनसंख्या की प्रामाणिक गणना के अनुसार स्ट्रेट्स सेटिलमेण्ट में खपत प्रति बड़े चीनी पुरुष पीछे ३१४ ग्राम से घटकर २३१ ग्राम; और फेडरेटेड मलाय स्ट्रेट्स में २९५.

+वहां अफीम को चण्डू कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्राम से घटकर १२८ ग्राम हो गई। इन अनुपातों की कमी भी यही प्रकट करती है कि अफीम की खपत में कोई खास कमी नहीं हुई।

नवम्बर सन् १९२३ में एक 'ब्रिटिश मलाया अफीम कमेटी' जाँच करने के लिये नियुक्त हुई। उसके आधार पर सन् १९२४ में सरकार ने बहुत मोटी रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट से बहुत सी काम की बातें मालूम होती हैं। परन्तु कुछ प्रश्न ऐसे रह गये हैं जिन्हें कमेटी ने छुआ भी नहीं। फिर भी स्ट्रेट्स सेटिलमेन्टस में एक 'अफीम रिवेन्यू रिप्लेस्मेन्ट फंड' सन् १९२५ में बनाया गया जो सब मिलकर ४३ लाख स्ट्रेटस डालर होगया। इस फंड में बाद में कोई रक़म जमा नहीं हुई। इस फंड को दूसरे कामों में खर्च करने के लिये स्ट्रेट्स सेटिलमेंट में आंदोलन चला था, परन्तु कालोनियल आफिस Colonial Office ने उसे दबा दिया। दूसरे इलाक़ों में भी ऐसे फंड खोले गये हैं।

इन फंड की स्थापना से यह प्रकट होता है कि कोलोनियल आफिस और मलाया में इसके प्रतिनिधियों ने इस दृष्टिकोण को मान लिया है कि जल्दी या देर में अफीम आयकर बन्द कर दिया जाय। वे जेनेवा की इस मांग के मानने पर बाधित हुए हैं कि शीघ्र ही अफीम पीना पूर्ण रूप से बन्द करा देना होगा। इस मांग को मलाया निवासी योरोपियन तथा चीनी लोग शायद ही पसन्द करें। उनके विरोध के प्रबल कारण हैं। योरोपियनों की तो यह नाराज़ी होगी कि उस आयकर का श्रोत बिल्कुल बन्द हो जायगा जो सब एशिया की जेब से आता है। चीनी लोग इस बात की शिकायत करते हैं कि सरकार चीनियों से इतना अधिक तो कर वसूल करती है और चीनियों की आश्चर्यजनक दस्त-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ४

मलाया

ब्रिटिश राज्य में एशिया के उपनिवेशों में ब्रिटिश मलाया, स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट, (ये सब मलाया प्रायद्वीप के ही भाग नहीं हैं) और Federated & unfederated Malay States को सबसे अधिक अफीम खपाने का कलंक प्राप्त है। इन उपनिवेशों की आयकर का सबसे अधिक भाग अफीम द्वारा प्राप्त होता है। .स्टेट्स सेटिलमेन्ट (Straits Settlement) के एक या दो प्रान्तों में (सिंगापुर को मिलाकर) ५० प्रतिशत का अनुपात है। सन् १९२५ में यह अनुपात तमाम स्टेट्स सेटिलमेन्ट में ३७ प्रतिशत और Federated मलाय स्टेट्स में १४ प्रतिशत था। सन १९२६ में Federated Malay का आबकारी कर (खासकर अफीम या चण्डू+ का ही) फिर बढ़ गया। सरकारी रिपोर्ट ने इसे "Fresh Rocord" लिखा है। वह १२,३६५,००० से बढ़ कर १५,८९३,००० हो गया। बाहर से आनेवाला माल सन् १९२१ में ७५,००० पौंड से सन् १९२६ में १३१००० पौंड हो गया। इस बीच में चीनियों की जन संख्या में वृद्धि हुई हो यह बात भी विश्वास योग्य नहीं है। सन् १९११ और १९२१ की जनसंख्या की प्रामाणिक गणना के अनुसार स्ट्रेट्स सेटिलमेण्ट में खपत प्रति बड़े चीनी पुरुष पीछे ३१४ ग्राम से घटकर २३१ ग्राम; और फेडरेटेड मलाय स्ट्रेट्स में २९५

+वहां अफीम को चण्डू कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारी की वजह से ही देश में इतनी उन्नति हुई है, फिर भी वह हमारे लिये कुछ नहीं करती और विशेषकर स्कूलों के सम्बन्ध में।

सन् १९२४ के कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में बहुत सी कठिनाइयों को आसानी से सामना करने के उपाय बतलाये हैं। इस देश में अधिक अफीमी लोग खानों और रबड़ के कारखानों में काम करने वाले चीनी मजदूर हैं जो चीन और मलाया के बीच आते जाते रहते हैं। कमेटी ने निम्न सुधारों की सिफारिश की थीः—

१. सरकार अफीम की फुटकर बिक्री का सारा प्रबन्ध अपने हाथ में ले ले; प्राइवेट दुकानदारों को ठेका न दें।

२. अफीम का पेकिंग बदल दिया जाय। छोटे २ पेकैट जो आसानी से खोले और फिर ज्यों के त्यों बन्द किये जा सकते हैं, बन्द कर दिये जांय और उनके बदले मशीन से भरने वाले हवाबन्द (Air Tight) ट्यूबों में अफीम भरी जाय जिन पर सील मोहर भी करदी जाय और जो एक बार से अधिक काम में न आ सकें।

३. सब से छोटा पैकेट जो अब तक ३ हून (=$17\frac{1}{2}$ ग्रेन) का बिकता है, वह बन्द कर दिया जाय और उसकी बजाय २ हून (= $11\frac{2}{3}$ ग्रेन) का कर दिया जाय।

४. अफीम पीने के बाद उसकी कीट* को ढूंढ़ २ कर देखा जाय और एकत्र किया जाय।

५. लाइसेन्स की दुकानों में तत्काल कमी की जाय।

*अफीम पीने के बाद चिलम में अफीम का जो जला हुआ पदार्थ बच रहता है उसे कीट कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६. फुटकर बिक्री की जो सरकारी दुकानें खुलें उनमें नाजिर नियुक्त किये जाँय जो वहां आने वाले प्रत्येक खरीदार का रिकार्ड लिखें।

७. ग्राहकों का रजिस्टर रखने की प्रथा को उन्नत किया जाय।

८. एक स्थायी कमेटी बनाई जाय जो सम्मति दिया करे।

इन योजनाओं पर सन् १९२८ के बाद कार्य आरम्भ हुआ। स्ट्रेटस सेटिलमेन्टस और फेडरेटेड मलाय स्टेटस की खरीज की सब दुकानें सरकार के अधिकार में ले ली गईं। ग्राहकों से अफीम की कीट कीमत देकर खरीदी जाने लगी और यह कीमत पीछे बढ़ा दी गई, जिससे भारत सरकार को बहुत सी कीट प्राप्त हुई और वह सब नष्ट कर डाली गई। फेडरेटेड मलाय स्टेटस में नाजिर के बदले ग्राहकों की लिस्ट रखने का प्रबन्ध हुआ और दुकानों तथा सेलूनों की संख्या घटकर ३६० से १७२ रह गई। स्टेटस सेटिलमेन्ट में यह संख्या घटकर ८५८ से १११ ही रह गई। अब यहाँ सम्मति देने वाली स्थायी कमेटी बनादी गई है।

किन्तु ये सब योजनायें भी अफीम द्वारा नष्ट होने वाले दरिद्र घरों को बर्बाद होने से बचा नहीं सकतीं। सिंगापुर के एक सेलून में पन्द्रह युवक अफीम पी रहे थे, ये केवल आनन्द लेने के लिये ही पीते थे। इनमें से दो तो बिल्कुल ही नष्ट हो चुके थे, एक ने जिसकी उम्र चौंतीस वर्ष की थी; नौ वर्ष से बीमारी के कारण अफीम पीनी शुरू की थी। उसने अपनी मात्रा को यहाँ तक बढ़ाया कि वह प्रतिदिन ८० सेन्ट की अफीम पीता है! वह डेक पर पन्द्रह डालर मासिक कमाता था। उसकी सारी आमदनी भी अफीम का भार नहीं उठा सकती थी, निश्चय ही वह कहीं से चोरी और लूट मार करता होगा और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफीम का पूरा करता होगा। उसके परिवार का विचार करना वृथा है !!

दूसरा व्यक्ति रबर के कारखाने में काम करने वाला एक कुली था जिसकी टाँगों में नासूर हो गया और फिर मलेरिया। धीरे धीरे उसकी तिल्ली भी बढ़ गई, अब उसने अफीम लेनी शुरू की। उसकी नौकरी छूट गई, वह कुरूप, घृणित और कोढ़ी हो गया। पर वह चिकित्सा के लिये अस्पताल नहीं गया, क्योंकि उसे भय था कि वहां भरती होने पर अफीम नहीं मिलेगी।

ये उदाहरण कुछ भी नहीं हैं। वास्तव में अफीम नष्ट और बर्बाद हुए व्यक्ति की तसल्ली है। यह प्रकट सत्य है। और यह भी सत्य है कि अफीम उसकी बर्बादी की पूर्णाहुति है।

सरकार की मादक द्रव्यों को बन्द करने की नीति ऐसे मनुष्यों के बर्बाद जीवन को सुखी नहीं बना सकती। वे सुखी तो तभी बन सकेंगे जब उनके आचरण सुधरें और उन्हें सद्ज्ञान की प्राप्ति हो। मलाया में इसी बात की आवश्यता है।

सन् १९१४ की अफीम रिपोर्ट में एक धारा शिक्षा की है। शिक्षा के द्वारा भी अफीम का प्रचार रोका जा सकता है। स्टेट्स में पैदा होने वाले चीनीयों ने जिनके बच्चे मलाया में शिक्षा पाते हैं, अफीम पीना बिल्कुल ही छोड़ दिया है। यदि हम मूल कारणों को देखें तो इस उपाय से लाभ उठाया जा सकता है। मलाया में चीन से आने वाले परदेशी चीनीयों को यहां पहुंचने पर अफीम की आदत पड़ती है। इसके दो आधार हैं:— पहला यह, कि कुली चीनियों के जीवन की अवस्था उन्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अफीम की ओर ले जाती है। दूसरा यह कि बहुत से संगी साथी हो जाने की वजह से अफीम पीने लगते हैं। दूसरे मूल कारण पर इस रिपोर्ट में विचार नहीं किया गया हैं। पर हम इसे मुख्य कारण समझते हैं। समाज के ढीले बन्धन और संग साथ की स्वतन्त्रता अनायास ही बुराई की ओर ले जाते हैं। मलाया की निवासी जातियों (होकेन्स और टेचिन्स) के व्यक्ति जब एक दूसरे के पास बैठते हैं, दोस्ती करते हैं। तब संग सोहबत बढ़ने लगती है और वे देखादेखी बड़ी जल्दी अधिक पीने लगते हैं। लेकिन कन्टोनीज, क्लेस और हेलाम्स जातियां जब एक दूसरे से मिलते और संग सोहबत में उठते बैठते हैं तो उन्हें अफ़ीम का व्यवहार नहीं मिलता, इसलिये वे इस अभ्यास से बचे रहते हैं। गृहस्थ आदर्श और संग सोहबत के निर्दोष लाभ की उन्हें शिक्षा दी जाय तो वे अवश्य सुधर सकेंगे। ये शिक्षा देने के केन्द्र स्कूल न होकर क्लब हो सकते हैं। जैसाकि भारत में Y. M. C. A. कुछ प्रान्तों में कर रही है। उनको वहां शारीरिक व्यायाम, खेलकूद और मनोरंजन की बातें बताई जा सकती हैं। पर यह सब कुछ शुद्ध अन्तःकरण से होना चाहिये। ब्रिटिश नार्थ बोर्नियो कम्पनी के वार्षिक अधिवेशन के सभापति महोदय ने अपनी वक्तृता में यह स्वीकार किया था कि छोटी आयु वाले चीनी अफीम की लत को छोड़ रहे हैं क्योंकि उन्हें खेल कूद और मनोरंजन पसन्द आ गये हैं। केवल क्लब और खेल कूद ही इसका निराकरण नहीं कर सकते। क्योंकि मलाया में बहुत से योरोपियन बहुत देर तक टेनिस खेलते रहते हैं, फिर भी वे 'पाहित' पार्टियों में पहुंचते हैं जहाँ 'कॉकटेल्स' आदि अन्य मादक द्रव्य पीकर वे स्वास्थ को नष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करते हैं। हमें संग सोहबत में मानसिक सुधार करना होगा। मन और मस्तिष्क को जिस उपाय से विकास और उन्नति प्राप्त हो वे सब प्रचारित किये जांय। वहां पब्लिक हेल्थ एज्यूकेशन कमेटी की ओर से स्कूलों, अड्डों, क्लबों और चीनी सभाओं में अफीम विरोधी साहित्य पढ़ने को बाँटा जाता है, जिनका मन पर अच्छा असर पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ५

जावा

जावा और इसके समीपस्थ डच ईस्ट इन्डीज के टापुओं की भी मलाया जैसी स्थिति है। चीनी, जो यहां अधिक संख्या में आ बसे हैं आम तौर से अफीम पीते हैं। कहीं कहीं जावा निवासी भी अफीम पीते हैं। कहीं कहीं अफीम का प्रचार बिल्कुल बन्द है। अफीमियों के नाम रजिस्टर में दर्ज हैं और इन नामों में नये नाम नहीं लिखे गये हैं। उन शहरी जिलों में जहाँ नये चीनी परदेसी आकर बस जाते हैं, इन नामों की संख्या बढ़ती है और वहाँ कोई भी चीनी कितनी भी अफीम खरीद सकता है।

यद्यपि अफीमबन्दी के प्रत्येक उपाय काम में आते हैं परन्तु चोरी छिपे जो माल आता जाता है इससे बड़ी बाधा पहुंचती है। पिछले महायुद्ध के समय जबकि चीन में अफीम की काश्त होने लगी थी चीन से चलकर चीनी लोग इस प्रान्त के चीनियों के लिये चोरी से अफीम लाये थे। सरकार की बिक्री पर कठोर नियन्त्रण से इस नाजायज़ व्यापार को उत्साह मिला। अब वैसा नियन्त्रण उठा दिया गया है। चीन के सिवा टर्की और परशिया से भी अफीम आती है, पर वे इतने खुले ढंग से लाते थे कि अफ़ीम पकड़ी जाती थी। 'चीनी अफीम' कम मात्रा में आती है पर आती अनेक बार है। इससे वह पकड़ में नहीं आती और आती भी है तो थोड़ी सी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यहां की डच्च सरकार ने अपने प्रान्तों पर सुन्दर रीति से अधिकार कर रक्खा है और आबादी बढ़ जाने पर भी अफीम की खपत कम ही हुई है, बढ़ी नहीं है।

जावा में जो अफीमी रोगी अस्पतालों में आते हैं, उनमें बहुतेरे अफीम छोड़ बैठते हैं। चीनियों की एक सामाजिक सुधार सभा ऐसे लोगों को सम्भालती रहती है। बनडोएन्ग के अस्पताल में अफीम छुड़ाने के परीक्षण किये गये हैं वहाँ अफीम की मात्रा में १० से १५ दिन तक क्रमानुसार कमी करते रहते हैं। वहाँ के एक डाक्टर की राय है कि अफीम का विषयाक्त प्रभाव आँखो से दीखता नहीं है; वह अन्दर ही अन्दर जड़ खोदता है।

जावा में कोका की बहुत पौद होती है, इससे कोकीन बनती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ६

चीन

चीनियों की अफीम पीने के आदत ने सारी दुनियां में हलचल मचा दी थी। अन्त में चींनियों को होश आया और उन्होंने मनों अफीम इकट्ठी करके आग लगा दी। चीन सरकार ने सन् १९०६ में यह घोषणा कर दी कि आगामी दस वर्षों में अफीम बिल्कुल बन्द करदी जायगी। भारत सरकार से एक एग्रीमेन्ट हुआ, जिसमें भारत से जाने वाली अफीम में कमीं कर दी गई। सन् १९११ में फिर एक एग्रीमेन्ट और हुआ जिसमें अफीम जाने में और भी कमी की गई। सन् १९१३ में अफीम को बिल्कुल ही बन्द करने का निश्चय किया गया और १९१४ में बिल्कुल बन्द कर दी गई।

चीन में तो बन्द हो गई, परन्तु चीन के आसपास के देशों जैसे जापान, होंगकोंग तथा स्ट्रेट सेटिलमेन्ट में अफीम का जाना आरम्भ हो गया। चीन में अफीम बन्द हो गई परन्तु कोकीन जाने की स्वतन्त्रता बनी रही। बहुत से अफीमी चीनी कोकीन इंजेक्सन लेने लगे। परिणाम यह हुआ कि कोकीन की खपत बढ़ गई। कोकीन भारत से सीधी भी जाती थी, और कुछ इन पड़ौसी देशों से भी चीन में पहुंचती थी, क्योंकि स्टेट्स सेटिलमेन्ट में अफीम सन् 1914-15 में 600 पेटी, 1915-16 में 2550 पेटी, 1916-17 में 3750 पेटी, 1917-18 में 4789 पेटी, 1918-19 में 4136 पेटी गई। इस अधिक खपत का स्पष्ट अर्थ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है कि अफीम से वहाँ कोकीन बनाई गई और चीन में भेजी गई। हॉंग-कोंग में सन् 1915-16 में 90 पेटी, 1918-19 में 450 पेटी गईं। स्याम में 1917-18 में 850 पेटी, 1918-19 में 1750 पेटी गईं।

भारत सरकार ने यह माल Colonial Government को बेचा था, पर क्या वह इसकी असलियत से अनभिज्ञ थी। यूनाइटेड किंगडम से कोकीन बनकर चीन को आती थी और ब्रिटिश भारत से यूनाइटेड किंगडम को सन् 1913 में 59 Cwts, 1917 में 5170 Cwts अफ़ीम गई !!! निश्चय ही इस सब अफीम की कोकीन बनी और पूर्वी देशों में खपी। जापान में भी 1917-18 में 971 पेटी और दूसरे वर्ष 1918-19 में 1930 पेटी गईं। इस प्रकार चीन को अफीम भेजना बन्द करके सरकार ने पड़ौसी देशों से कैसा लाभप्रद सौदा किया ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ७

भारत में चेष्टा

भारत एक विस्तृत देश है, यहां अफीमबन्दी के लिये सर्वत्र एक ही नीति सफल नहीं हो सकती।

शहरों में अफीम पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है, यदि यहाँ औषध विक्रेताओं (Chemists) को डाक्टरी नुस्खों में अफीम बेचने का लाइसेन्स दिया जाय तो ठीक रहेगा।

आसाम, उड़ीसा, पंजाब, गोदावरी डेल्टा, बरार इन जिलों में अफीम अधिक व्यवहार में लाई जाती है, यहाँ प्रत्येक अफीमी का नाम रजिस्टर में दर्ज किया जाय।

देहाती भारत में चालीस वर्ष की आयु वाले स्त्री पुरुषों को अफीम प्राप्त करने की स्वतन्त्रता हो। मिस्टर एच. एल. जिन्होंने देहातों में अफीम की जाँच की है, कहते हैं कि मलेरिया और शारीरिक दर्दों को रोकने के लिये अफीम या कुनैन देना हानिप्रद है। इनके बदले कोलटार (Coaltar Products) औषध देना अच्छा है।

बच्चों को अफीम देना अवश्य बन्द होना चाहिये। महात्मा गाँधी की राय है कि मादक द्रव्यों से प्राप्त सारा आयकर इन्हीं के बन्द करने के आन्दोलन में ख़र्च डालना चाहिये। ठेकेदारों की प्रथा बन्द कर देनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देसी राज्यों में मालवी अफीम पर भी भारत सरकार का अधिकार होना चाहिये।

जब सरकार अफीम पर सारे नियन्त्र करले तब वह मूल्य में अधिक से अधिक कमी करदे। इससे चोरी छिपे व्यापार बन्द हो जायेंगे।

सितम्बर सन् १९२९ में जेनेवा अफीम कान्फ्रेन्स में सब देशों की सरकारों ने यह प्रस्ताव पास किया था कि अफीम को क्रमशः कम किया जायगा और डाक्टरी मत से सारे संसार को जितनी अफीम चाहिये, उतनी निर्धारित की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ८

अफीम कर

वर्ष	कुल कर	ढोने का तथा अन्य सब खर्च	बचत
	१	२	३
	रु०	रु०	रु०
१८८५-८६	८९४२५१५०	३०५७६७४९	५८८०८४१०
१८८६-८७	८९४२९७६०	२७२९०६३०	६२१३९१३०
१८८७-८८	८५१५४६२०	२४२४५७५०	६०९०८८७०
१८८८-८९	८५६२३०९०	२५९७९०५०	५९६४४१४०
१८८९ ९०	८५८३०५६०	१६०५१०७०	६९७७९४९०
१८९०-९१	७८७९१८२०	२१८०७९७०	५६९८३८५०
१८९१-९२	८०१२४४४०	१८६१८१३०	६१५०६२१०
१८९२-९३	७९१३१८००	१६०२४९६०	६३१०६८४०
१८९३-९४	६६२७५७१०	१८७६६०७०	४७५०९६४०
१८९४-९५	७३२३७५७०	१६१६१०५०	५७०७६५१०
१८९५-९६	७१२३९२२०	२०६८०४१०	५०५४९८१०
१८९६-९७	६४०९२३८०	२४८६५५००	३९२२६८८०
१८९७-९८	५१७९७७२०	२३९००००५	२७८९७७१५
१८९८-९९	५७२५३३०५	२३७२०५१७	३६५३२७८८

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्ष	१	२	३
१८९९-००	६६०२९७३१	२५९०७३१४	४०१२२४१७
१९००-०१	७६५३३६३०	२६७८८१२५	४९७४५५०५
१९०१-०२	७२७८०३३०	२४१३०३५०	४८६४९९८०
१९०२-०३	६७४७६५७०	२४७२७२४५	४२७४९३२५
१९०३-०४	८६०४०६७५	३३३८६१६०	५२६५४५१५
१९०४-०५	९०३२२४८५	२९५०६२७५	६०८१६२१०
१९०५-०६	८२०३१७००	२८३८६६१५	५३६४५०८५
१९०६-०७	८४९०७९२०	२८६९९३८०	५६२०८५४०
१९०७-०८	७८६७४७८६	२५०४१६१०	५३६३३१७६
१९०८-०९	८८२७१८२४	१८५४१३२०	६९७३०५०४
१९०९-१०	८३०२०२४५	१६६५२३२२	६६३६७९२३
१९१०-११	११२८२९४३३	१८६९९८६९	९४१२९५६४
१९११-१२	८९४१९१७०	१०९१७७७६	६८५०१३९४
१९१२-१३	७६८६८८७३	८९९५९२९	६७८७२९४४
१९१३-१४	२४३७३१७८	१५१८६६००	९१८६५७८
१९१४-१५	२३५८३२७४	९८११३३१	१३७७१९४३
१९१५ १६	२८७०२७१२	१७१६४९ १	११५३७७४१
१९१६-१७	४७४०००७३	१३६८५९११	२३८१४१६२
१९१७-१८	४६१८३५३०	१६६३१७३९	२९५५१७९९
१९१८-१९	४९३३६६७०	१९६१८२७३	२९७१८३९७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खपत १०० सेरों में

१ सेर = २ $\frac{२}{३५}$ पौंड

प्रान्त	१९०१–२	१९०६–७	१९११-१२	१९१६-१७	१९१८-१९
मद्रास	३५·६	३८·१	४१·४	३६·५	३७·१
बम्बई + सिन्ध	४०·०	४६·९	५६·३	५७·६	५९·३
बंगाल + बिहार + उड़ीसा	९२·८	८४·९	९६·७	७८·७	७३·८
आसाम	४८·२	७५·७	६०·३	६२·२	६३·०
यू० पी०	६२·३	६८·९	६१·८	...	४६·२
पंजाब	५२·८	५९·९	६३·५	६१·१	५३·४
मध्य प्रान्त + बरार	३०·०	४८·४	५४·३	५२·५	४३·९
बरमा	३९·८	७४·७	५३·१	४७·२	४६·५

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ६

कोकीन

कोकीन दक्षिणी अमेरिका के पीरू प्रदेश में कोका के पेड़ से बनती है। अफीम से भी बनती है। भयानक प्रभाव लाने तथा सुन्न करने में कोकीन सब नशों से बढ़ कर है। इसका प्रभाव आनन्दयुक्त सुस्ती होना है, पर अन्त में मस्तिष्क, शरीर और आत्मा के तेज का इससे नाश होता है। भारत में लम्पट नर-पशु इसे पान में रख कर खाते हैं। इसका प्रचार भारत में १९१४ से बढ़ा है। यद्यपि सरकार की इस पर कड़ी दृष्टि है फिर भी चोरी छिपे लाखों रुपयों की बिकती है।

कोकीन के नशे से क्षण भर एक आनन्द का अनुभव होता है, पर जब नशा उतर जाता है तब उसे मालूम होता है कि वह घोर नरक में गिर गया। उसे भय, भ्रम, भूल, अनिद्रा, मन्दाग्नि, शूल आदि रोग लग जाते हैं। उसकी आयु नष्ट हो जाती है।

पेटेन्ट दवाइयों में बहुधा दूषित द्रव्यों, जैसे अफीम, कोकीन, मद्य आदि का संसर्ग रहता है। सिर दर्द की टिकिया जो अधिकतर काम में लाई जाती है, प्रायः उनमें काफीन और फेनेस्टीन होता है, यदि उनकी मात्रा भूल से अधिक लेली जाय तो बहुधा मृत्यु हो जाती है। अमेरिका के प्रसिद्ध डा. ओलीवरवेनडेल होलास का कहना है, "यदि ये सब दवाइयां समुद्र में फेंक दी जांय तो इससे मनुष्य जाति का उतना ही फायदा हो सकता है जितना कि मछलियों का नुकसान।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीसरा खण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय पांचवा

भांग, चरस, गांजा

प्रकरण १

भांग की पौद

भांग दक्षिणी और मध्यभारत में लाइसेन्स लेकर बोई जाती है। उत्तर में पंजाब से लेकर आसाम तक हिमालय की तलेहटी में जङ्गली भांग बहुत लगी रहती है। इस जंगली भांग पर भी नियन्त्रण रखने की चेष्टा की जा रही है। भाँग के तीन रूप होते हैं; चरस, गांजा और भांग। मादे पौदे का फूल खिलने से पहले ही उसके डोडे में से चरस तैयार होता है। यह पंजाब होकर मध्य एशिया से आता है। गाँजा भी ऐसे ही बनता है, पर यह उतना तेज़ नहीं होता। यह बंगाल के नौगांव में लाइसेन्स लेकर बनाया जाता है और इसके बेचने का सर्वाधिकार 'नौगाँव गांजा कल्टीवेटर्स कॉपरेटिव सोसायटी' के हाथों में है। अहमदाबाद के समीप भी लाइसेन्स लेकर गांजा बनाया जाता है। किन्हीं २ प्रान्तों में जहां चरस पी जाती है, वहां गांजे की मनाई है। भांग हरी २ पत्तियों की बनाई जाती है और यह घोट कर पी जाती है। भाँग अफीम जैसी भयप्रद नहीं होती। चरस और गांजा मतवाला बना देते हैं और पीने वाले की वृत्ति हिंसक हो जाती है। चरस के पीने वाले प्रायः पागल हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बर्मा में भाँग को लोग अधिक नहीं जानते। दक्षिणी भारत में इसे कम व्यवहार करते हैं। सबसे अधिक खपत सिंध में होती है। सन् १९२६-२७ में यू० पी० सरकार ने बहुत अधिक नाजायज चरस पकड़ी थी। इसकी खरीद का मूल्य ६) रुपये से १०) रुपये प्रति सेर है और बेचने का भाव १२०) रुपये प्रतिसेर।

भांग की पौद साल में एक बार होती है। पौद दो प्रकार की होती है नर और मादा। नर पौदा मादा से छोटा होता है और इसमें घन के पत्ते नहीं लगते। पौद में तीन चीजें होती हैं। १. पतली शाखाऐं। २. चिकने बीज (जिनमें से तेल भी निकल सकता है। ३. पसेव (रतूबत जो पत्तियों और फूलों के सिरों पर रहता है।) यह तीसरी चीज़ ही आबकारी की आमदनी है। एक ही पौदे में से तीनों चीजें बनती हैं।

१. गाँजा—मादा पौद के फूलों से गाँजा बनता है।

२. चरस—पसेव की बनती है, जैसे अफीम बनती है। इसमें पौद के मूल अवयव सबसे अधिक होते हैं।

३. भाँग—नर और मादा दोनों पौद की पत्तियों को सुखाकर बनती है।

ये पदार्थ अति सूक्ष्म मात्रा में भूख को बढ़ाने वाले, तथा सूक्ष्म मात्रा में नींद और खूमारी को लाने वाले हैं। खूमारी की अवस्था में मनुष्य सुख का अनुभव करता है। ज्यों २ नशा बढ़ता है, वह स्वप्न देखता, कल्पनाओं में उड़ता और विवेकहीन होकर अनर्गल बकने लगता है। उसका स्नायु मंडल ढीला पड़ जाता है, और वह अनेक रोगों का शिकार बना रहता है। इन वस्तुओं के सेवन करने वाले सिड़ी, दीवाने क्रोधी और आवारागर्द हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इन मादक द्रव्यों से भी सरकार को भारी आमदनी है। सन् १८९३ ई० में एक Hemp drugs commission नियुक्त हुआ था, उसकी बताई हुई योजनाओं पर सरकार अब तक व्यवहार कर रही है।

भांग, चरस, गांजा इन तीन पदार्थों से सरकार को सन् १८६०-६१ में ११ लाख, १८७०-७१ में २२ लाख, १८८० ८१ में तीस लाख, १८९०-९१ बयालीस लाख १९००-०१ में ५९ लाख, १९१०-११ में १०७ और १९१८-१९ में १५९ लाख रुपयों की आय हुई थी। इससे यह प्रकट है कि चालीस वर्ष में ४८ लाख रुपये की आय बढ़ी। अर्थात प्रति वर्ष १.२ लाख। और सन् १९०० के बाद १९१९ तक १०० लाख बढ़ गई। अर्थात् प्रति वर्ष ५.५ लाख। सरकार की भांग नीति शराब नीति से अधिक ठोस है। भारत सरकार के खजाने में सब मिलाकर चार करोड़ रुपया अफीम और इन पदार्थों की मद से प्राप्त होता है।

इन पदार्थों पर भारत में सर्वत्र एक ही टैक्स नहीं है। गांजे पर टैक्स सन् १९१८—१९ में, बङ्गाल में २०) प्रति सेर, मद्रास में १६) सेर, बम्बई और सिंध में १२॥) प्रति सेर, था। भांग पर टैक्स, बङ्गाल में १॥) सेर, मद्रास में ३) सेर, बम्बई में १॥) सेर, और सिन्ध में १) सेर था। चरस पर टैक्स बङ्गाल में ३०) सेर, यू. पी. में १६) और१८) सेर, पंजाब में १८) सेर और आसाम में १२) सेर था। इसी प्रकार अफीम पर बङ्गाल और आसाम में ५०) प्रति सेर तथा सिन्ध में १०) प्रति सेर था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण २

भांग आदि से आय कर

सन्	अफीम	अन्य	योग
१९०१-०२	१०१५७६१०	६१८३८७३	१६३४१४८३
१९०२-०३	१०८१७५२६	६६८५८४६	१७५०३३७२
१९०३-०४	१२६८१६२६	७२३९६८३	१९९२१३०९
१९०४-०५	१२९९३७३३	६८०३०९८	१९७९६८३१
१९०५-०६	१३६५४४३४	८८१३४३५	२२४६७८६९
१९०६-०७	१३९९४५७२	८८१३६८९	२२८०८२६१
१९०७-०८	१४७०६३६४	८८४९५०३	२३५५५८६७
१९०८-०९	१४८४९३४८	९४०६४७४	२४२५५८२२
१९०९-१०	१४८७१११६	९८८३३३४	२४७५५२५०
१९१०-११	१५५५६२०५	१०६९५७८९	२६२५१९९४
१९११-१२	१५७४६७७५	११३८५७४४	२७१३२५१९
१९१२-१३	१७८२४०११	१२१५७१६३	२९९८११७४
१९१३-१४	१९३६६५८७	१३६५११६३	३३०२५७५०
१९१४-१५	१९४९१४७९	१४०२१३२१	३३५२०७९१
१९१५-१६	२०५४५०६५	१४२६६८९४	३४८११९५९
१९१६-१७	२११४६२००	१४८०६०३१	३५९५२२३१
१९१७-१८	२२८०५०३७	१४९२४४४८	३७७२९४८५
१९१८-१९	२४२२५१७०	१५९२१३७९	४०१४६५४९

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टैक्सों की नीति बिल्कुल व्यापारिक है। जिस चीज की अधिक खपत है उस पर टैक्स अधिक है और जिसकी खपत कम है उस पर टैक्स साधारण है। जिस चीज का प्रचार जहां फैलाना होता है उस पर पहले कम टैक्स रखा जाता है। नीचे की तालिका से खपत का अनुमान होगा:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ३

भांग, गांजा, चरस आदि की खपत

(प्रति १०००० जन-संख्या के हिसाब से सेरों में। १ सेर = २$\frac{२}{३५}$ पौंड)

प्रान्त	१९०१-०२	१९११-१२
मद्रास	१०·६	११·७
बम्बई	२०·०	३८·५
बंगाल	३२·९	३५·१
आसाम	३९·०	५२·३
यू० पी०	९३·५	६४·७
पंजाब	६०·८	६०·७
सी० पी० और बरार	२५·४	३६·७
सिन्ध	३३७·८	३६७·३

यू० पी० और पंजाब को छोड़ कर सभी प्रान्तों में खपत बढ़ी है। सिन्ध सबसे बढ़ गया। सिन्ध में भाँग बहुत ही अधिक सेवन की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १९११-१२ से किन्हीं प्रान्तों में यह खपत घट भी गई और किन्हीं में बढ़ भी गई। जैसे मद्रास प्रान्त में (भांग, गाँजा, चरस) की खपत सन् १९११-१२ में ४७४८५ सेर थी। १९१६-१७ में बढ़कर ४७७७० सेर थी। सन् १९१८-१९ में घट कर ४५०५० सेर रह गई पर अगले वर्ष फिर बढ़ कर ४८३४० सेर हो गई। अर्थात् १९११-१२ से ८५५ सेर बढ़ गई। बम्बई में खपत इस प्रकार थी:—

वर्ष	१९१६-१७	१९१७-१८	१९१८-१९	१९१९-२०
खपत	१७८१६९	१५८६३०	१६७७३९	१८६६२९

सन् १९१७—१८ से कम होकर फिर बढ़ती गई। अब १९११—१२ से आगे के आँकड़े देखिये:—

(हज़ार सेरों में)

प्रान्त	1911-12	1916-17	1917-18	1918-19
बंगाल	159	108	101	106
बिहार उड़ीसा	125	93	91	93
आसाम	34	29	23	25
सी.पी. बरार	58	45	45	39
पंजाब	120	...	118	113
मद्रास	47	48	47	45
बम्बई सिन्ध	...	178	158	167

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ३

भांग, गांजा, चरस आदि की खपत

(प्रति १०००० जन-संख्या के हिसाब से सेरों में। १ सेर = २$\frac{२}{३५}$ पौंड)

प्रान्त	१९०१-०२	१९११-१२
मद्रास	१०·६	११·७
बम्बई	२०·०	३८·५
बंगाल	३२·९	३५·१
आसाम	३९·०	५२·३
यू० पी०	९३·५	६४·७
पंजाब	६०·८	६०·७
सी० पी० और बरार	२५·४	३६·७
सिन्ध	३३७·८	३६७·३

यू० पी० और पंजाब को छोड़ कर सभी प्रान्तों में खपत बढ़ी है। सिन्ध सबसे बढ़ गया। सिन्ध में भाँग बहुत ही अधिक सेवन की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सन् १९११-१२ से किन्हीं प्रान्तों में यह खपत घट भी गई और किन्हीं में बढ़ भी गई। जैसे मद्रास प्रान्त में (भांग, गाँजा, चरस) की खपत सन् १९११-१२ में ४७४८५ सेर थी। १९१६-१७ में बढ़कर ४७७७० सेर थी। सन् १९१८-१९ में घट कर ४५०५० सेर रह गई पर अगले वर्ष फिर बढ़ कर ४८३४० सेर हो गई। अर्थात् १९११-१२ से ८५५ सेर बढ़ गई। बम्बई में खपत इस प्रकार थी:—

वर्ष	१९१६-१७	१९१७-१८	१९१८-१९	१९१९-२०
खपत	१७८१६९	१५८६३०	१६७७३९	१८६६२९

सन् १९१७—१८ से कम होकर फिर बढ़ती गई। अब १९११—१२ से आगे के आँकड़े देखिये:—

(हज़ार सेरों में)

प्रान्त	1911-12	1916-17	1917-18	1918-19
बंगाल	159	108	101	106
बिहार उड़ीसा	125	93	91	93
आसाम	34	29	23	25
सी.पी. बरार	58	45	45	39
पंजाब	120	...	118	113
मद्रास	47	48	47	45
बम्बई सिन्ध	...	178	158	167

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण ४

शराब और अफीम, भांग, गांजा, चरस की दुकानों की संख्या

	1900-01	1905-06	1910-11	1915-16	1918-19
भाँग आदि	19928	21865	20014	17316	17152
शराब	83202	91447	71052	55046	52683

इस तालिका से सरकार की नीति की एक झलक प्रकट होती है। दुकानों की संख्या १९०५—०६ में सब से अधिक रही। इसी वर्ष India Excise Committee ने दुकानों में कमी करने की जोरदार सिफारिश की। सरकार ने इस पर तुरन्त अमल किया और दुकानें कम कर दी गईं। १९१०—११ में शराब की दुकानें १९०५—०६ की अपेक्षा ७८% कम हो गईं, और कुल संख्या १२१५० कम हो गईं। भाँग गाँजा चरस की दुकानों में कमी बहुत कम हुई। इस नीति के परिणाम से कार्य नियन्त्रण में आ गया और आयकर में वृद्धि हो गई। सरकार से जब जब इस व्यवसाय को बन्द करने को कहा गया, उसने सदैव यही उत्तर दिया कि शिक्षा पर फिर क्या खर्च हो ? इसका यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभिप्राय है कि सरकार शिक्षा पर ख़र्च करने के लिये इस व्यवसाय को चला रही है, अन्यथा उसे इसके चलाने में कोई प्रलोभन नहीं है। कौन व्यक्ति होगा जो इस शिक्षा को पढ़ना, सीखना अथवा देखना भी पसन्द करेगा जो लाखों करोड़ों भाइयों के जीवन को नष्ट करके उनके स्वास्थ और परिवारों में चिंताओं की ज्वाला को जलाती है। इस भारतवर्ष पर इससे अधिक ग़ैरत और पतन की क्या बात लागू हो सकती है। इन मूर्ख और शराबी आदमियों की जेबों से प्रति वर्ष ५० करोड़ रुपया इन चीज़ों के खरीदने में व्यय होता है और इन ५० करोड़ में से १७ करोड़ रुपया सरकार अपनी जेब में टैक्स अथवा आमदनी के रूप में रख लेती है।

अबसे पहले जितने आन्दोलन मादक द्रव्य निषेध के लिये चले, सरकार ने सभी को बहरे कानों सुना। उसने राजनीति की चालों के चक्र में फंसा कर उन्हें मूर्ख और अनुभवशून्य कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौथा खण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय छठा

तम्बाखू

प्रकरण १

तम्बाखू अमेरिका की देन है। यह सबसे पहले वहीं देखा गया। मेयर ने बनस्पति के भोगोलिक आधार पर यह प्रकट किया है कि चीनियों में इसे पीने की बहुत प्राचीन पद्धति थी। पश्चिमी निवासियों ने इसे चीन से सीखा। परन्तु और भी गहरी छानबीन करने से यही परिणाम निकलता है कि योरोप अथवा एशिया में तम्बाकू पहले नहीं होता था। कोलम्बस ने क्यूबा के टापू में लोगों को मक्का के पत्तों में लपेट कर सूखा तम्बाखू पीते देखा था। डाक्टर चारलेवोक्स अपने इतिहास में लिखते हैं कि अमेरिका के पास किसी टापू में उन्होंने लोगों को एक यन्त्र में रखकर सूखी पत्तियां पीते देखा जिसे वे तम्बाखू कहते थे।

योरोप में सबसे प्रथम स्पेन निवासी गौन ज़ेलो-हरनन्देज़ ने तम्बाखू की पौद शौकिया बोई थी, परन्तु कुछ दिन बाद वहीं के डाक्टर निकोला मनारडेस ने एक दिन इसमें डाक्टरी उपचार के गुणों की प्रशंसा की। परन्तु और भी अनुसन्धान करने पर ज्ञात हुआ कि तम्बाखू डाक्टरी उपचारों के योग्य नहीं है।

तम्बाखू की पौद के लिये गरम आबोहवा की आवश्यकता पड़ती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। फिर भी तम्बाखू भिन्न २ जातियों के लिये भिन्न २ प्रकार की ज़मीन और आबोहवा का होना लाभदायक होता है। 'विरगिनिया तम्बाखू', जो पश्चिमी देशों का प्रसिद्ध तम्बाखू है और जिसकी बढ़िया सिगरटें संसार भर में दुकान दुकान पर बिकती हैं, का पौदा चार से छै फीट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियों की लम्बाई अट्ठारह इंच और चौड़ाई दस इंच तक होती है। पत्ती की शकल अंडाकार होती है और फूल का रंग हल्का गुलाबी होता है। तम्बाकू की कच्ची पौद को कोई नहीं खाता। जब पौद पकने लगती है, तभी उसे तोड़ लेते हैं, पूरा पकने से वह खाने के योग्य नहीं रहता। क्योंकि पूरा पकने की क्रिया में उसके समस्त गुण पत्तियों में से निकल कर बीजों में संग्रहित होने लगते हैं, यदि बीज ही बनाना हो तब तो पौद को पहले तोड़ने की आवश्यकता नहीं। पत्ती जितनी अधिक मोटी और भारी होगी उतनी ही अधिक उसकी क़ीमत होगी और वह उतना ही अधिक नशीला होगा। परशिया के शीराज़ तम्बाखू की बहुत प्रशंसा की जाती है। तम्बाखू की स्थाई रूप से खेती सबसे पहले यूनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) में होनी आरम्भ हुई थी। सन् १६०७ ईस्वी में जेम्सटाऊन नगर में 'विरगिनिया कोलोनी' में तम्बाखू बोया गया। आठ वर्ष बाद उसके बोने में और भी विस्तार किया गया। तेरह वर्ष के बाद सन् १६२० में तम्बाकू व्यापार की महत्वपूर्ण वस्तु बन गई। और इसकी इतनी प्रतिष्ठा हुई कि १०० पौंड (५० सेर) तम्बाकू के बदले एक क्वारी कन्या ब्याह ली जाने लगी। सन् १६२० में ही ऐसे ९० ब्याह रजिस्टर में दर्ज़ किये गये थे। अगले वर्ष सन् १६२१ में यह भाव बढ़ गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् १५० पौंड (७५ सेर) तम्बाकू के बदले एक क्वारी कन्या दी जाने लगी। इस वर्ष ६० विवाह हुये थे। ये विवाह नीच और अर्द्ध-शिक्षित जातियों में हुये थे।

शीघ्र ही धूम्रपान की प्रथा फैलने लगी। अंग्रेजों ने इसे कलापूर्ण ढंग से पीना आरम्भ किया उन्होंने एक नली बनाईं, उसमें तम्बाकू को चूर्ण करके दबा दबाकर भरा और फिर सुलगाकर पिया। दबाकर भरने से तम्बाकू जल्दी नहीं जल जाता, धीरे धीरे कश खिंचता है। और भी अधिक शौक से पीने वालों ने पत्तियों की नसों और गर्द मिट्टी को साफ़ करके चूरे में सुगन्ध डाल कर पिया।

इंगलैण्ड में सबसे पहले महारानी एलीजाबेथ के शासन काल में सर वाल्टर रेले ने तम्बाकू श्रेष्ठ उपहार समझ कर इसे एलिजाबेथ को भेंट किया। रानी ने उसे सादर स्वीकार किया, उन्होंने इसके दो तीन घूट ही पिये थे कि उनके पेट में दर्द होने लगा और कष्ट बढ़ गया। दरबारियों में कानफूसी होने लगी कि सर वाल्टर ने निश्चय ही महारानी को विष पान कराया है, परन्तु वे कुछ ही घंटों के बाद स्वस्थ हो गईं।

जॉनसन की साइक्लोपेडिया में तम्बाखू में अवयवों को इस प्रकार बताया गया है:—

"Ten thousand Parts of green leaves, contain 6 Parts of Nieotine, 1 Part of Nicotianine, 287 of bitter extractive, 175 of Gum, 27·7 of green resin, 26 of albumen, 104·8 of a Substance analagus to gluten, 51 of Malic acid, 12 of Malate of ammonia, 20·6 of

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Potash salts, 40·6 of lime salts, 8·8 of salica, 496·9 of lignine, and 88·7 of Water."

अपेलेटॅन की साइक्लोपेडिया में भी तम्बाखू का यही विभाजन बताया गया है। डाक्टर रिचार्डसन तम्बाखू पीने पर निम्न परिणाम बतलाते हैं:—

१. गीली भाप बनती है।

२. कार्बन् बनता है। कार्बन गले में तथा गले और कलेजे की नालियों में जम जाती है।

३. अमोनिया (ammonia) होता है। जो अधिक काल तक पीते रहने से जिह्वा को फाड़ डालता है, गले को खुश्क करता है जिससे प्यास बढ़ती है और तीव्र धूम्रपान की इच्छा जाग्रत होती है। अमोनिया रक्त को भी दूषित करता है।

४. कारबोनिक एसिड (Carbonic acid) 'कोयले का तेजाब' होता है, जिससे सिर दर्द, अनिद्रा और स्मरण शक्ति का ह्रास होता है।

५. निकोटीन प्रवाहित होती है। निकोटीन एक तीव्र विष है, इसकी एक बून्द खरगोश के मुंह में डालो तो वह तुरन्त मर जायगा। कुत्ते की जीभ पर दो बून्द डालो तो वह भी मर जायगा। निकोटीन को कबूतर की टांग से छुआ दो तो वह चार मिनट के अन्दर मर जायेगा। डाक्टर ब्रोडे ने बिल्ली की जीभ पर एक बूंद डाली तो वह पांच मिनट में उसी क्षण मर गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरी हरी पत्तियों को पीस कर मनुष्य शरीर की त्वचा पर मालिश करें तो विषैला प्रभाव होगा।

और भी सूक्ष्म विष हैं जैसे:— कोलिडीन, प्रुसिक एसिड, कार्बन मोनक्साइड, फरफुरल और एक्रोलीन। कोलिडीन ज़हरीला क्षार है, जिससे स्नायु दुर्बल हो जाते हैं और चक्कर आने लगते हैं। प्रुसिक एसिड ज्ञान तन्तुओं को मलीन कर देता है। सिर में भारीपन रखता और मन में अरुचि पैदा करता है। कार्बन मोनक्साइड दम घोट कर मार डालने वाली गैस है इसका प्रभाव यह होता है कि सांस जल्दी २ चलने लगती है, हृदय की गति तेज़ हो जाती है, रोमांच और ऐंठन होती है। आँखों की पुतलियां फैल जाती हैं, और ठंडा पसीना, ठंडा बदन और बेहोशी पैदा करती है। फुरफुरल मस्तिष्क के ज्ञान तन्तुओं को ढीला कर देने वाला विष है, जिससे बाद में आचार और शुद्ध विचार नष्ट हो जाते हैं। एक्रोलीन एक गैस है, जो मन में चिड़चिड़ाहट पैदा कर देती है।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि इतने विष रहते तम्बाकू पीने वाले दीर्घ काल तक कैसे जीते रहते हैं? बात यह है कि यदि विष की सम्पूर्ण मात्रा शरीर में एक साथ पहुंच जाय तब तो ऐसा होंना सम्भव हैं। परन्तु ४% ही विष रुधिर में प्रवेश कर पाता है शेष वापिस निकल जाता है। यह ४% भी एक साथ ही प्रवेश नहीं करता, धीरे २ करता है। थोड़ा २ करके पहुंचने से शरीर को उसके सहने का अभ्यास हो जाता है। इसलिये वर्षों में वह विष अपनी मात्रा पूरी कर पाता और तब अनेक रोगों को उत्पन्न करके मनुष्य के प्राण समाप्त करता है। डाक्टरों ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रयोग करके देखा है कि तम्बाकू सेवन करने वाला व्यक्ति जीवन के १०—१५ वर्ष अवश्य ही तम्बाखू की भेंट चढ़ायेगा।

इन हानियों से परिचित होकर तम्बाखू का परित्याग किया जाने लगा। रानी एलिज़ाबेथ ने अपने राज्य में तम्बाखू का पूर्ण निषेध करने की आज्ञा प्रचारित कर दी थी। उसके बाद दूसरे शासक जेम्स-प्रथम ने तम्बाखू के प्रतिकूल प्रसिद्ध पुस्तक 'Counterblast to tobacco' लिखी। उन्होंने लिखा कि 'तम्बाखू नेत्रों के लिये घृणास्पद, नाक के लिये दुर्गन्धित, मस्तिष्क के लिये हानिप्रद, फेफड़ों के लिये शत्रु और इसका धुआं जीवन अंधकार का अथाह समुद्र है।' पोप अर्बन अष्टम ने तम्बाखू पीना अपराध करार दे दिया था। टर्की के अमुरथ चतुर्थ ने धूम्रपान करने वाले को मृत्यु दण्ड दिये थे। कुस्तुन्तुनिया में ऐसे व्यक्ति की नाक में नली को आर पार छेद कर बाज़ारों में घुमाते थे। मास्को के ग्रान्ड ड्यूक ने धूम्रपानी को पहले आर्थिक दण्ड और फिर दुबारा मृत्यु दण्ड नियत किया था। फ़ारस के बादशाह ने अपने राज्य में तम्बाखू का आना वर्जित कर दिया था। अबीसीनिया के राजा किंग जॉन ने सूंघने वाले की नाक काटने और खाने तथा पीने वाले की गर्दन उतार लेने की दण्ड व्यवस्था की थी। फिर भी धूम्रपान रुका नहीं। विश्व के मेध के समान यह प्रति पल समस्त संसार में आच्छादित होता रहा। और आज अपने भारत में तीन चार वर्ष के बच्चे सिगरट और हुक्के का कश का आंख मींच कर आनन्द लेते हैं।

भारत में इसका प्रचार अकबर के शासन काल में बढ़ा। अंग्रेजी सभ्यता ने इसे और भी सुलभ कर दिया, क्योंकि हुक्के और चिलम की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झंझट न रही और सिगरट अथवा बीड़ी चाहे जहां चलते फिरते पी सकते हैं। तम्बाकू का व्यवहार इतनी प्रचण्डता से बढ़ा है कि अन्य सारी मादक वस्तुओं की बिक्री इससे बहुत ही पीछे है। गत योरोपीय युद्ध पर हिसाब लगाया गया था कि संसार भर में तम्बाखू की खेती की क़ीमत ६२,५०,००,००० रुपये थी।

भारत में प्रति वर्ष ५० लाख मन तम्बाखू खर्च होता है। जिसका मूल्य लगभग दो अरब रूपये है !!! ७५% व्यक्ति तम्बाखू सेवन करते हैं। बंगाल, मद्रास और बर्मा में इसकी खेती प्रति दिन उन्नति पर है। दस लाख एकड़ ज़मीन पर यह बोया जाता है और ६६ लाख रुपये से अधिक मूल्य का विलायत से आता है। बर्मा और मद्रास में सिगरट के बड़े २ कारखाने हैं। जब्बलपुर और सी. पी. में बीड़ियों के घर २ कारखाने हैं। बम्बई में पत्तों की बीड़ियों का अधिक प्रचार है। राजपूताने में देशी और काबुली दो प्रकार की तम्बाखू होती है, उसमें गुड़ मिला कर भाँति २ के हुक्के, नरेली और चिलमों में लोग पीते हैं। कलकत्ता, बनारस, लखनऊ, दिल्ली आदि शहरों में सुगन्धिक वस्तु मिलाकर सुरती मुश्की, अंबरी आदि नामों से उसकी गोलियां बनाते और सोने के वर्क चढ़ाकर बेचते हैं। अमेरिका और मिश्र से प्रति वर्ष ८० लाख रुपये से अधिक की सिगरटें भारत में आती हैं। लगभग एक करोड़ रुपये का तम्बाखू यहां से विदेशों में जाता है। भारत की ३३ करोड़ जनसंख्या में २ अरब रुपये का तम्बाखू फूंका जाता है। प्रति मनुष्य ६) साल या ।।) महीना पड़ता है। यदि एक मनुष्य एक महीने में एक पेटी दियासलाई भी ख़र्च करे, तो ३।। अरब पेटियां होती हैं, अर्थात् ५।। करोड़ रुपये प्रति वर्ष।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बहुत आदमी प्रति दिन सौ सौ बीड़ियां और ३०–४० चिलम तक पी जाते हैं। यदि प्रति आदमी २५ बीड़ी गिनें और दो पैसा उनका मूल्य समझें तो प्रति वर्ष ११।) रू० होते हैं। यदि वह आदमी ४० वर्ष तक बीड़ियाँ पीता रहा, तो ४५०) रुपये की बीड़ियां और ५०) की दियासलाई इस प्रकार कुल ५००) उसने फूंक डाले। इस रक़म पर सूद दर सूद लगाइये और सोचिये कि यदि कुल भारत में १० करोड़ मनुष्य भी तम्बाखूसेवी हुए तो ५० अरब रुपया तम्बाखू की भेंट जाता है।

भारत में १० लाख बीघे ज़मीन में तम्बाखू बोई जाती है, इतनी ज़मीन में यदि अन्न बोया जाय और दो बार बुआई करने से उसमें से प्रति बीघा २० मन अन्न भी हो, तो २० करोड़ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। प्रति दिन एक सेर के हिसाब से एक एक मनुष्य को ९ मन अन्न एक वर्ष को काफी होता है। इस तरह २२ लाख से अधिक मनुष्यों का पेट भर सकता है।

तम्बाखू एकाध मात्रा लेने में तो दर्द की पीड़ा कम करने वाला है। परन्तु अधिक मात्रा में लेने पर घुमेरी, बेहोशी, नशा, मृगी उन्माद और मृत्यु भी हो जाती है। धूम्रपान का इतना अधिक व्यापक प्रचार होने के कारण यह है कि इसे करके व्यक्ति कुछ देर के लिये चिन्ताओं और भार से मुक्त हो जाता और आराम अनुभव करता है। हमें सच्ची मुक्ति तो उस कार्य के करने पर ही मिल सकती है। हमें अपनी बुद्धि से अपना उत्तरदायित्व भार जो ईश्वर ने हमें मनुष्य शरीर देकर दिया है, प्रतीत करना और उसका निरालस्य भाव से अकृत्रिम रीति से पालन करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमने देखा है कि पक्षियों को पालतू और न उड़ने देने योग्य करने के लिये तम्बाकू खिलाया जाता है ।

एक वृद्ध की मृत्यु हो गई । मरने से एक दिन पहले वह डाक्टर के पास गया था । उसके घर वालों ने लाश को पोस्टमार्टम के लिये सरकारी जांच करने भेजा । वहाँ चार डाक्टरों ने परीक्षा की, उसके कलेजे में तम्बाखू का धुआं और विष ठसा हुआ था, इसी कारण से मृत्यु हुई । वह बचपन में ३—४ वर्ष की आयु से ही तम्बाखू पीने लगा था । वास्तव में हम बहुत छोटे २ बच्चों को आज कल बीड़ी सिगरट पीते देखते है । जो बच्चे अपने बड़ों के अथवा आये गये मित्रों तथा मेहमानों के लिये हुक्का भर कर उनके सामने पेश करते हैं, वे हुक्का चोरी से एक दो कश खींच कर चिलम का स्वाद चख लेते हैं । और फिर बड़े होने पर तो वे भी सबके सामने पीने लगते हैं । उनके अभिभावकों की भी यही धारणा होती है कि हुक्का, उनके घर की शान और दस पांच आदमियों की मंडली में पीने की बड़े बूढ़ों की वंश-परम्परागत देन है । बिरादरी के सरपंचों की सन्तान हुक्का पीना अपना गौरव समझती है । शहरों के लड़के मुंह में सिगरट दबा कर चलना, उसके कश खींच कर धुएं को उड़ाना अपनी प्रतिष्ठा और अमीरी समझते हैं । सिनेमाओं ने छोटे २ बच्चों में कुचेष्टाओं का बहुत प्रचार कर दिया है, जिनमें से सिगरेट पीना भी है । सिनेमा हाल में १०—१२ वर्ष के बच्चे को फिल्म की चेष्टाओं का बखान करते और सिगरट का कश लगाते देखिये तो हमें यही प्रतीत होता है कि भारत की नस्ल की यही भर जवानी है । वह धुएं को इस अभ्यास से छोड़ेगा कि बड़े २

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी उतनी नफ़ासत न सीखे होंगे। बच्चों की यह धारणा हो जाती है कि बिना पान खाये और सिगरट पिये हमें कोई बड़ा और बुद्धिमान नहीं समझेगा। हमने अनेक परिवार ऐसे देखे हैं जो बहुत दरिद्र हैं। जब उनके पास तम्बाखू के लिये पैसा नहीं रहता, वे अपने छोटे बच्चे को लेकर किसी अमीर व्यक्ति के पास जा बैठे। उस व्यक्ति ने बच्चे को चीज़ खाने के लिये एक पैसा दिया, उन्होंने पैसा अंटी में लगाया और बच्चे को लेकर बाज़ार चले। उस पैसे से तम्बाखू की एक गोली खरीदी जाती है !!

एक बार एक साठ वर्ष के मरीज़ ने डाक्टर को बुला भेजा। डाक्टर ने उसकी परीक्षा करके कहा कि मैं तुम्हारा इलाज तब कर सकता हूँ जब तुम तम्बाखू पीना छोड़ दोगे। रोगी ने कहा, 'तम्बाखू छोड़ना असम्भव है।' डाक्टर चले गये। रोगी ने दो दिन तक डाक्टर के पास आदमी भेजा, पर वे नहीं आये, उन्होंने यही कहा कि पहले उससे तम्बाखू छुड़ाओ, नहीं तो वह मर जायगा। पर रोगी तम्बाखू न छोड़ सका। उसने पचीस वर्ष की अवस्था से तम्बाखू सेवन आरम्भ किया था और अभ्यास यहां तक बढ़ गया था कि एक क्षण को भी मुंह खाली नहीं रह सकता था। जीभ के नीचे तम्बाखू की पत्ती दबी ही रहती थी। चौथे दिन जब वह मरने लगा और डाक्टर ने उसे कह दिया कि तुम आज मर जाओगे, अब भी तम्बाखू छोड़ो तो औषध अपना असर करे। उसने लड़खड़ाती ज़ुबान से उत्तर दिया कि डाक्टर को निकाल दो। जब वह ठंडा होने लगा तब उसने चिल्ला चिल्ला कर कहा, मेरी जीभ के नीचे तम्बाखू की पत्ती रख दो। मेरे मुंह में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोना न डालना, गंगा जल न डालना, तम्बाखू की पत्ती डाले जाना।' तम्बाखू खाते खाते ही उसके प्राण निकले !!

एक बार एक प्रोफेसर ने एक विद्यार्थी को सिगरट पीते देख लिया। वे उस विद्यार्थी को बहुत प्यार करते थे, उन्होने उससे कहा, अब कभी सिगरट न पीना। विद्यार्थी न माना और नित्य पीता रहा। प्रोफेसर को इस बात से बहुत दुःख हुआ। उन्होंने उसके पिता के पास पहुंच कर इसकी शिकायत की। पिता ने तनिक भी विस्मित न होकर उत्तर दिया, 'अच्छा तो है, मैं बूढ़ा हो चला। वह अब पीना न सीखेगा, तो मेरे पीछे सभा सोसाइटी और जाति बिरादरी में उठ बैठ कर संग कैसे निभायेगा। प्रोफेसर साहेब, हुक्का ही जाति बिरादरी की नाक है, जिसका हुक्का बन्द, उसे जाति से अलग समझना चाहिये।' प्रोफेसर साहब निराश होकर लौट आये।

दिल्ली के एक क्रोड़पति सेठ के बहुत ही नाजुक और लाड़ले बेटे रात्रि के समय अपने कमरे में गद्दे पर सिगरट पी रहे थे। मलमल का कुरता और बारीक धोती हवा से इधर उधर फहरा रही थी। वे तन्द्रा-वस्था में होकर सिगरट का आनन्द लूट रहे थे कि उन्हें नींद सी आ गई। सिगरट का हाथ उनके सीने पर आ पड़ा। कुरता जरा सा सुलग कर जलने लगा, सीना भी जला। पाँच मिनट में ही सब कुछ हो गया, भाग दौड़ मच गई, नौकर चाकर आये, डाक्टर को फोन किया गया। परन्तु छटे मिनट ही उनकी मृत्यु हो गई। उनका नाजुक दिल हल्का सा घाव नहीं सह सका !!!

बच्चों का प्रबल शत्रु यह धूम्रपान है। यह उनकी शारीरिक और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मानसिक उन्नति को रोकता तथा उनके आचार को दूषित करता है। फ्रांस के सिपाहियों की नस्ल अब छोटी हो गई है, क्योंकि वे पचास वर्ष पहले बहुत धूम्रपान करते थे। टर्की के सैनिक तम्बाखू और अफीम के कारण से ही क़द में छोटे हो गये।

धूम्रपान रोकने से आर्थिक सुधार तो होगा ही, नैतिक सुधार भी होगा। यदि एक परिवार में एक व्यक्ति तम्बाखू के ऊपर एक आना या दो आना प्रति दिन व्यय करता है, तो उतने धन से प्रति मास वह अपने घर के या बच्चों के लिये कोई वस्तु खरीद कर ला सकता है। धूम्रपान का अभ्यास निश्चय ही व्यर्थ और दूसरों के लिये अपनी शान दिखाने के लिये है। इसका गुण कुछ भी नहीं। एक बार एक आफ़ीसर की स्त्री ने बाज़ार से एक वस्त्र खरीद लाने के लिये कहा। आफ़ीसर एक महीने तक भी उसे नहीं खरीद सके, क्योंकि उनके पास रुपये नहीं थे। और वेतन महीने की चार तारीख को मिलता था और उसी दिन उसका सब बंटवारा हो जाता था। वेतन आई, पर खेद है कि वह वस्त्र खरीदने की उसमें गुंजायश न रही। पत्नी ने बिगड़ कर घर का कामधन्धा बन्द कर दिया और कमरे में पड़ी रहतीं। धीरे २ यह छोटी सी लड़ाई सब पर प्रकट हो गई, क्योंकि केवल बीस रुपये ही का तो प्रश्न था। एक मित्र ऑफिस से लौटते समय उनके साथ हो लिये। ऑफिस और कोठी का फासला एक ही फर्लाङ्ग था, इस बीच में पैदल आते २ उन्होंने 'Craven A' की चार सिगरट पी डालीं। मित्र ने कहा 'क्या तुम अपने सिगरट के खर्च का अनुमान कर सकते हो?' उन्होंने आश्चर्य से पूछा, 'क्यों?' 'इसलिये, कि तुम इसे त्याग कर चालीस रुपये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महीने बचा सकते हो। अपनी पत्नी के लिये वैसे दो वस्त्र खरीद कर ला सकते और लड़ाई मिटा सकते हो।' मित्र ने भर्त्सना से उत्तर दिया। ऑफीसर ने उन पर घृणापूर्वक दृष्टि डाली और मित्र को अन्दर आने को बिना कहे ही कोठी में घुस गये।

एक पंसारी को सिगरट पीने की धुन थी। एक डाक्टर ने उसे छोड़ने की सलाह दी। पंसारी ने सिगरट पीना तो छोड़ दिया, किन्तु जितने पैसों की नित्य पीता था, उतने पैसे गुल्लक में डालने लगा। तीस वर्ष के बाद उसने जमीन खोदकर उस गुल्लक को देखा। उसके आश्चर्य की सीमा न रही उसने उस द्रव्य से शहर से बाहर एक मकान बनवा लिया और आजकल वहाँ स्वच्छ हवा में आनन्द से रहता है।

इस आर्थिक लाभ पर हम आंख मींच कर कह सकते हैं कि यह ठीक है। धूम्रपान का रुपया धुएं में उड़ ही तो जाता है जिससे न किसी का पेट पलता है, न वस्त्र बनते हैं, न किसी की रक्षा होती है। उससे दुःख ही दुःख मिलता है। अमेरिका में सन् १८९० में ६००, ०००,००० का तम्बाखू फूंका गया। और २०३,०००,००० का माँस खाया गया।

यह धूम्र पान भोग विलास की भी वस्तु नहीं है। विलास की वस्तु तो वह है जिससे हमें आनन्द प्राप्त हो और नुकसान कुछ भी न हो। हम एक सप्ताह के सिगरटों के पैसे जोड़ कर अपने बच्चे का एक जोड़ा जूता खरीद सकते हैं। उसका कोई वस्त्र बना सकते हैं। बच्चे को सजा कर और उसे सुखी देख कर हमें कितना आनन्द होगा, यही गृहस्थ का विलास है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तम्बाखू का सबसे पहला प्रभाव भूख कम करना है। दूसरा प्रभाव मांस कम करना है। एक किसान ने पचास वर्ष की आयु में हुक्का पीना एक दम छोड़ दिया। पूछने पर उसने गर्व से कहा, 'मैंने अपना जीवन दस वर्ष और बढ़ा लिया है।'

डाक्टरी राय है कि तम्बाखू किसी भी रोग की औषध नहीं। जो दो चार उपचार हैं भी वे सत्य नहीं है। लोग इसे दांतों के दर्द की अक्सीर दवा बतलाते हैं। दांतों का दर्द तम्बाखू दांतों के नीचे दबाने से सुन्न हो जाता है, जड़ से नहीं जाता। बल्कि यह कहिये कि इसी प्रकार उन्हें दस पन्द्रह दिन दातों के नीचे दबाना पड़ा कि वे तम्बाखू के अभ्यस्त हुए। एक बार एक मित्र के घर एक मन्त्री, एक डाक्टर और एक केमिस्ट चाय पीने आये। मित्र ने उनसे तम्बाखू प्रयोग का कारण पूछा। मन्त्री और डाक्टर के उत्तर को छोड़ कर केमिस्ट का उत्तर हमारी बात की पुष्टि करता है, उसने कहा, कि दो वर्ष पहले मेरे होठ गल गये थे तब मैंने तम्बाखू लिया था। उनसे फिर पूछा गया, कि जब होठ अच्छे हो गये तब भी अब तक क्यों लेते हैं ? केमिस्ट ने उत्तर नहीं दिया, वे झुंझला कर उठ कर चल दिये। डाक्टर सौल्ली कहते हैं, कि तम्बाखू नसों को सुन्न कर देता है, जीवन को मूर्छित कर देता है, और निर्बलता को बढ़ाता है। यह वास्तव में कलेजे को धीरे २ जलाता है। उसके पीने वाला साक्षात् सूली पर चढ़ा हुआ अपने दुर्भाग्य को चूमता है।

तम्बाखू का पीना अधिक हानिकारक है या खाना ? अधिकांश में पीने में अधिक हानि है। क्योंकि वह गले की नसों में होकर मस्तिष्क

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और जिगर दोनों दिशाओं में फैलता है। मस्तिष्क में अधिक विष फैलने से 'मस्तिष्क ज्वर' हो जाता है। सरकारी अस्पतालों और पागलखानों में ऐसे केस देखने में आ सकते हैं। विद्यार्थियों को, जिन्हें मित्र संसर्ग से सिगरट पीने का चस्का लग जाता है, शीघ्र ही अपनी स्मरण शक्ति का ह्रास अनुभव होने लगता है, वे पहले की भाँति पाठ याद नहीं कर सकते। फिर भी वे धुआं उड़ाना नहीं छोड़ते। डाक्टर गोर्जस कहते हैं कि "तम्बाखू अध्ययन का बन्द द्वार है।" ड्राइंग के विद्यार्थियों का अथवा अध्याकों का, जो तम्बाखू पीते हैं, काम करते समय हाथ कांपने लगेगा। उनकी ड्राइंग में कंपकपी अवश्य चित्रित होगी। उनकी दृष्टि में भी अन्तर आ जायगा।

तम्बाखू मस्तिष्क को तुरन्त ही मलिन कर देता है। अनिंद्रा, आंखों के आगे तारे से दीखना, दिल का शीघ्र घबड़ा जाना, प्रत्येक कार्य में निरूत्साही होना ये समस्त दोष तम्बाखू की अवश्यम्भावी देन हैं। डाक्टर रिचार्डसन कहते हैं कि 'जो माता पिता तम्बाखू का सेवन करते हैं, उनकी सन्तान अवश्य ही मानसिक और शारीरिक दुर्बलताओं का शिकार होगी।' एक अन्य प्रतिष्ठित चिकित्सक की राय है कि 'मैंने आज तक एक भी ऐसा तम्बाखूसेवी माता पिता नहीं देखा जिसकी सन्तान का स्नायु मण्डल कमज़ोर न हो। उनका मस्तिष्क भी दुर्बल होता है।' फ्रांस और अमेरिका में ऐसे अनेक प्रयोग देखे गये हैं। जो बच्चे जितनी अल्पावस्था में तम्बाखू सेवन करने लगते हैं उतना ही उनका पतन होता है। एक बड़े डाक्टर का यह अनुभव है कि सिगरट पीने से प्रत्येक मनुष्य का ह्रास होता है। ज्यों ज्यों धूम्रपान का अभ्यास संसार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में बढ़ रहा है, हमें निम्न बीमारियों की बढ़ती नज़र आती है: मुख दर्द (अकारण ही मुंह का दुखना), अपच, गठिया का दर्द और मस्तिष्क रोग। छोटे बच्चों पर तम्बाखू का शीघ्र प्रभाव पड़ता है। वास्तव में सिगरटों ने हमारे सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक जीवन में दुर्बलता ला दी है।

प्रसिद्ध फ्रेन्च डाक्टर जी० सेसने ने नौ से पन्द्रह वर्ष की आयु वाले ३८ धूम्रपानी बच्चों का परीक्षण किया। इन बच्चों का रक्त प्रवाह बहुत क्षीण था और उन्हें हृदय रोग हो चुका था। पाचन शक्ति बिगड़ गई थी, और उन्हें अल्कोहल पीने की इच्छा होती थी। पारी का बुखार आने लगा था, रक्त के लाल परिमाणु नष्ट हो गये थे। नाक से खून गिरता था। रात को भरपूर नींद नहीं आती थी और मुंह का स्वाद बिगड़ गया था। डाक्टर ने इन बच्चों से तम्बाखू छुड़ाया और वे ६ महीने के बाद बिल्कुल स्वस्थ हो गये।

युवावस्था में धूम्रपान की सबसे अधिक प्रचुरता होती है। ज्यों २ अवस्था बढ़ती है, नसों में सुस्ती जल्दी २ आती है, और तम्बाखू का सेवन अधिक होता है। हृदय पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, और स्नायु मण्डल ढीला हो जाता है। इच्छाशक्ति नष्ट होती है। इच्छाशक्ति ही सदाचार की कुंजी है, जिसमें इच्छाशक्ति नहीं, उसकी इन्द्रियां वश में नहीं, वह सदाचारी नहीं, संयमी नहीं। इच्छाशक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है, इसी के सहारे जीवन के दुःख सुख कटते हैं। जीवन एक नौका है जो पानी में डूबती और उतराती रहती है, इच्छाशक्ति ही उसका खिवैय्या है यह एक प्रकार का मानुषीय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आशा और शक्ति का संचित सुरक्षित कोष है, यही उसका भाग्य है।

अमेरिका के सरकारी अस्पताल के बड़े सर्जन कहते हैं कि "तम्बाखू दिलेरी को कम करता है, शरीर को कमज़ोर बनाता है और खून को सुखाता है।"

एक बार एक विद्यार्थी ने स्कूल में तम्बाखू खाना सीख लिया। गरमी की छुट्टियां होने पर उसे अपने पिता के साथ दुकान पर शारीरिक परिश्रम का कार्य करना पड़ा। वह जब थक जाता था, तब पिता की नजर बचाकर थोड़ा तम्बाखू खा लेता था और फिर काम में लग जाता था। परिणाम यह हुआ कि वह प्रतिदिन पीला पड़ता गया और बीमार होकर खाट पर पड़ रहा। पिता ने डाक्टर को बुलाना चाहा, पर असली भेद खुल जाने के भय से उसने पिता को बारम्बार डाक्टर लाने से रोका। जब वह मृत्यु के समीप ही आ गया तब डाक्टर ने आकर नब्ज देखी। उसकी शक्ति मर चुकी थी और दिल की चाल बढ़ गई थी। उसी शाम को उसका हार्ट फेल हो गया।

एक युवक महाशय एक कन्या को अपनी शादी के लिए देखने गये। वे सिगरट बहुत पीते थे। कन्या के पास जाते समय उन्होंने अपनी जेबों को खूब झाड़ कर साफ कर लिया था और उनमें सेन्ट लगा लिया था कि कहीं सिगरटों की गन्ध न रह जाय। कन्या सुशिक्षित थी और उसे किसी ने यह बात बता दी थी। उसके सामने जब युवक महाशय पहुंचे तो उसने उनके होठों को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। युवक ने होठों पर तुरन्त उंगली फेरी और रूमाल से पोछ लिया। कन्या ने हंसकर कहा, 'होठों की कलौंस सिगरट पीने के अभ्यास को नहीं छिपा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकती। और वह तुरन्त वहां से चली गई।' युवक महाशय को उस कन्या के न मिलने का कई वर्ष तक खेद रहा, क्योंकि उससे विवाह हो जाने पर वे कलेक्टरी की उम्मेदवारी में आ सकते थे।

एक प्रसिद्ध शराबी व्यक्ति ने शराब और सिगरट बिलकुल छोड़ दी। जब उसके मित्रों ने इस पर आश्चर्य प्रकट किया तो उसने कहा 'कि इसमें आश्चर्य क्या है। मैंने हृदय से जब चाहा तब छोड़ दी। और मेरा विश्वास है कि मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति से सब कुछ कर सकता है। परन्तु एक बात मेरे अनुभव में आई कि शराब तो मुझ से अनायास ही छूट गई किन्तु सिगरट छूटने में कठिनाई हुई। मैं सिगरट को इतना कठिन नहीं समझता था। पर मैंने उस कष्ट को भी अपनी इच्छा शक्ति से सहन किया और वह भी त्याग दी। अब मैं मानों स्वतन्त्र हूँ।'

एक नवयुवक को सारे दिन सिगरट पीने की बुरी लत थी, सिगरट न मिलने पर वह बेहोश होने लगता था। उसकी नव-विवाहिता सुन्दरी ने अपने पति से एक दिन कहा कि 'मैं आपके इस अभ्यास को पसन्द नहीं करती, तुम्हारे पास आने से मुझे चक्कर आने लगते हैं क्या तुम मेरे लिए सिगरट नहीं छोड़ सकते?' युवक को अपनी पत्नी अति प्रिय थी, उसने उत्तर दिया कि 'शायद मैं छोड़ सकूंगा।' उसने उसी समय से सिगरट पीना बन्द कर दिया, पर उसे अत्यन्त कष्ट हुआ, वह बेहोशी में भी अपनी उंगलियों को होठों से लगाकर सिगरट पीने का संकेत करता था, उसकी पत्नी ने द्रवित होकर सिगरट सुलगा कर दे दी। पीते ही होश में आगया। उसने पत्नी से कहा तुम अब मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिगरट न देना, मुझे इतना तो विश्वास है कि मैं मरूंगा नहीं और यों चाहे जितना कष्ट सहने के लिए मैं तैयार हूं। कदाचित तुम्हारे प्रेमवश ही मैं इस लत से स्वतन्त्र हो सकूं। तीन महीने तक वह सिगरट से संघर्ष करता रहा, उसे खांसी उठने लगी, कफ गिरने लगा, स्नायु मण्डल सुन्न हो गया, प्रत्येक समय वेहोशी और आंखों के आगे अंधेरा रहने लगा। उसके आगे संसार के भूत प्रेत सिगरट ले लेकर नाचने और उसे पेश करने लगे। जब उसने सिगरट पीना आरम्भ किया था तब भी उसे इसी प्रकार के उपद्रव सहने पड़े थे। पर उसे सदैव अपनी प्रिय पत्नी का ध्यान रहता था, परोक्ष में भी उसे अपनी पत्नी की मधुर और मुस्कराती मूर्ति सिगरट न पीने का आदेश करती हुई दीख पड़ती थी। उसे कुछ भी नहीं सूझता था, कुछ भी नहीं दीखता था, उसकी कुछ भी अभिलाषा न थी, वह केवल अपनी पत्नी की इच्छा को पूरी करना चाहता था। अन्त में एक दिन उसे प्रातःकाल सोकर उठते ही बहुत शान्ति का अनुभव हुआ। उसने अपनी पाशविक वृत्ति पर विजय पा ली थी। उसका सिगरट पीना सर्वथा के लिये छूट गया। इस घटना से हम प्रत्येक स्त्री के आकर्षण में सुधार की आशा करते हैं।

एक बार एक किसान ने कहा कि मेरे शरीर में तम्बाखू का इतना अधिक असर हो चुका है कि मेरे पास मच्छर और मक्खी नहीं आ सकते। वे मेरी शरीर गन्ध से ही दूर भागते है। और यदि वे मेरे शरीर से चुपट जायें तो मेरे पसीने से मर जायेंगे। डाक्टर लोग तम्बाखू पीना दमे के लिए लाभदायक बताते हैं। परन्तु उससे दमे की जड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं जाती। एक बार मेडिकल बोर्ड के निमन्त्रण पर इङ्गलैंड में तम्बाखू के दोषों पर एक निबन्ध लिखा गया जिस पर पांच सौ पौंड पारितोषिक दिया गया था। इस निबन्ध का कुछ सार इस प्रकार है:—

१. तम्बाखू का प्रयोग अप्राकृतिक है, क्योंकि कोई भी बनचर पशु इसे नहीं चरता।

२. पहले पहल जब मनुष्य इसे पीता है तो वह बीमार हो जाता है यदि वह पहले पहल किसी फल को खाये और चाहे वह फल उसे रुचि. कर न भी हो तब भी वह उसके खाने से बीमार नहीं होगा।

३. यह आनन्ददायक वस्तु नहीं है। आनन्ददायक वस्तु हानि नहीं करती।

४. अकेले इङ्गलैड में १२,०००,००० पौंड वार्षिक मूल्य का तम्बाखू उड़ाया जाता है। और इसके साज सामान सहित, २०,०००,-००० पौंड वार्षिक व्यय होते है।

५. यह गन्दी आदत है।

६. यह दांतों को बिगाड़ देती है।

७. इससे अनेक रोग शरीर में प्रवेश करते हैं। यह शारीरिक विकास को रोक देता है। बचपन में खाने से स्वाद शक्ति जाती रहती है। सूंघने, सुनने, और देखने की शक्ति भी कमजोर पड़ जाती हैं। गले में घाव हो जाते हैं। दिल कमजोर हो जाता है। पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। स्नायुमण्डल छिन्न भिन्न हो जाता है, हाथ कांपने लगते हैं। इच्छा शक्ति नष्ट हो जाती है। मनुष्य संशय और पशोपेश में पड़ा रहता है। मनुष्य ओज और स्मरण शक्ति नष्ट होकर वह पशु के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समान हो जाता है। पेट और होठों के नीचे नासूर हो जाते हैं। धूम्र-पानी के घाव देर में अच्छे होते हैं। यह समय को नष्ट करता है। इससे शराब पीने की इच्छा होती है।

८. इस के कारण मकानों में आग लग जाती है जिसमें जन हानि भी होती है।

९. तम्बाकू दिमाग को अचेत रखता है और मनुष्य लापरवाह हो जाता है।

उपरोक्त विवरण निःसन्देह सत्य है। अमेरिका की प्रसिद्ध Harpers दुकान सिगरट की राख झड़ने के कारण जलकर भस्म हो गई, जिसमें दो लाख पौंड की हानि हुई थी। दूसरा उदाहरण आग लगने का इससे भी भयानक है, इसमें ६ घर, २ जहाज और १०० से अधिक मनुष्य जलकर भस्म हो गये थे।

जब हम तम्बाकू खाते है तब हमें बारबार थूकना पड़ता है।

यह थूक कहां से आया ? मुंह में लार का बहना ही थूक है। हम जब खाना खाते हैं तब यह लार तुरन्त जीभ के नीचे ग्रन्थी में से निकल कर बहने लगती और भोजन के साथ मिलकर रस बनकर पेट में पहुंचती हैं। बिना लार के भोजन नहीं पच सकता। तम्बाकू खाने और थूकने से यह लार कम हो जाती है, इसीसे अपच और भूख न लगने की शिकायत बनी रहती है। तम्बाकू खाकर हम कितना थूक देते हैं, जरा इस पर भी विचार तो करिये। खूब तम्बाकू खाने वाला एक दिन में ३ पिन्ट लार थूकता है। दूसरे डाक्टर बतलाते हैं कि ६ महीने में थूकी हुई लार का वजन मनुष्य के अपने वजन के बराबर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता है। तीसरे डाक्टर कहते हैं कि जो मनुष्य प्रत्येक पाँच मिनट में चाय का चम्मच जितना थूकते हैं, वे अपने शरीर में से पचास वर्ष में ९ टन शक्ति खो देते हैं।

यूनायटेड स्टेट्स अमेरिका में सन १९०० में प्रति वर्ष ९५,-०००,००० पौंड तम्बाखू और १०००,२००,००० सिगरटें खर्च होती थीं।

एक व्यक्ति खूब सिगरटें पीता था और वह सुधारवादियों का मजाक उड़ाकर कहा करता था कि मैं इतनी पीता हूं फिर भी मुझे क्यों नहीं कुछ होता। एक दिन सुना गया कि उसे लकवा मार गया है, पहले उसकी दृष्टि जाती रही, फिर बोलना बन्द हो गया, फिर गर्दन मुड़नी बन्द हो गई, हाथ उठने बन्द हो गये, धीरे २ सभी अंगों का संचालन भी बन्द और वह एक ही सप्ताह में मर गया!!! आंखों के एक बड़े भारी विशेषज्ञ डाक्टर का कहना है कि 'तम्बाखू आंखों का शत्रु है। यह आँखों को ले बैठता है और श्रवण शक्ति को कम कर देता है। यदि वे किसी भी अवस्था में पहुंच कर तम्बाखू त्याग दें तो उनका रोग अच्छा हो जायगा। मिस्टर प्लाइमाऊथ इंगलैंड के प्रसिद्ध वकील थे; उन्होंने लगातार तीस वर्षों तक तम्बाखू खाया भी और पिया भी। उनकी दृष्टि लगभग नष्ट हो चुकी थी और पिछले दस वर्षों से सिर में गूंज बनी रहती थी। उनके मित्रों ने तम्बाखू छोड़ देने की प्रार्थना की। उनके बार बार कहने पर उन्होंने तम्बाखू छोड़ दिया, परिणाम यह हुआ कि ६३ वर्ष की अवस्था में भी वे देखने और सुनने लगे। उनकी शिकायतें मिट गईं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिगरट और बीड़ी के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को अनेक ऐसे रोग लग जाते हैं। एक आफिसर का कहना है कि मेरे अस्पताल में ऐसे अनेक केस आते हैं। उनको आराम होने में साधारण रोगियों की अपेक्षा दूना समय लगता है। एक बार एक सिगरट के कारखाने से पचास मजदूर एक अचानक बीमारी हो जाने के कारण अस्पताल में लाए गये। पता चला कि सिगरट का अन्तिम फिनिश देते समय (जो उन्हें दाँत और जीभ के द्वारा करना पड़ता है) उन सबको एक सा ही अछूत ज्वर हो गया था। जर्मनी में एक कारखाने में काम करने वाले व्यक्ति पीले और कमजोर बने रहते हैं। और उनमें से दस प्रतिशत बूढ़े होते होंगे नहीं तो शेष वृद्धावस्था आरम्भ होने से पहले ही मर जाते हैं। स्त्रियों की आयु तो आधी ही रह जाती है। इन परिणामों से हमें जान लेना चाहिये कि जिस वस्तु के कारखाने में इस प्रकार की तकलीफें होती हैं उस वस्तु में अवश्य दोष है। गठिया और मृगी तम्बाखू के अवश्यम्भावी परिणाम है।

तम्बाखू से आवाज़ खरखरी और भारी हो जाती है। संगीत के प्रेमी गवैय्ये तम्बाखू खाते हैं, न ही पीते हैं। मधुर कण्ठ वाले प्रसिद्ध गवैय्ये तम्बाखू से बचे रहते हैं।

एक आदमी के मुंह में हर समय सिगरट लगी रहती थी। कई वर्ष व्यतीत हो गये परन्तु उसके अभ्यास में कमी नहीं हुई। एक दिन वह सड़क पर चलते २ गिर पड़ा। वह छाती पर हाथ रखे हुए था और चिल्लाता था। लोगों ने देखा कि कपड़ों के नीचे एक बड़ा भारी फोड़ा हो रहा है। उसके विष ने इस समय उसे अचेत और अशक्त बना दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। उसे अस्पताल ले गये पर वह वहां पहुंचते ही मर गया !!

तम्बाखू खाने, पीने और सूंघने का एक ही अर्थ है, हल्का नशा होना। इसी लिये इसका व्यवहार किया जाता है। परन्तु यह प्रत्येक अवस्था में स्नायुमण्डल को निर्बल और सुस्त कर देता है। रक्त का प्रवाह ठीक ठीक नहीं बहता। पसीने निकलने के छिद्र बन्द हो जाते हैं, मल अंतड़ियों में चिपक जाता है। जब शरीर में मल पदार्थ और अशुद्ध पानी रुकने लगेगा तो अवश्य कोई रोग उत्पन्न होगा। बहुत से व्यक्ति भोजन के बाद में तम्बाखू पीते हैं जिससे वे समझते हैं कि भोजन को पचने में सहायता मिलती है। परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। वह नसों को केवल गरमा देता है, जिससे अंतड़िये खुश्क हो जातीं और मल को बाहर फेंकने में अशक्त हो जाती हैं।

एक परिवार में तम्बाखू का बहुत ही प्रचार था, छोटे बड़े सभी तम्बाखू पीते थे। परिणाम यह हुआ कि इस परिवार में सबको दौरे आने लगे। बड़ा लड़का एक दिन घोड़े पर घूमने जा रहा था, हाथ में सिगरट थी कि दौरा आ गया और गिर पड़ा, गिरते ही मर गया। गृहपति जिसकी अवस्था चालीस के लगभग थी, दौरे में ही मरा। स्कूल में पढ़ने वाले लड़कों को भी क्लास में बैठे २ दौरे आ जाते थे। एक बार एक लड़के को दौरा आया, मास्टर ने इसकी जाँच की तो देखा कि मुंह में तम्बाखू भरा हुआ है। उससे बहुत मना किया गया परन्तु तम्बाखू नहीं छोड़ा। भरी जवानी में चौबीस वर्ष का होकर वह भी मर गया।

एक पार्लियामेन्ट के सदस्य बहुत ही प्रतिष्ठित थे, इनकी बहुत धाक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जमी हुई थी, किन्तु चालीस वर्ष की अवस्था तक पहुंचते २ उनका रंग फीका पड़ गया, उनमें न पहले जैसा ओज था, न वाकपटुता, न चुस्ती। वे बन्द कमरे में पड़े पड़े सिगरट फूंका करते थे। डाक्टर ने परीक्षा करके कहा कि तुम सिगरट छोड़ दो तो बच जाओगे। पर उन्होंने कहा, कि मैं सिगरट के बिना ही मर जाऊंगा। अन्त में वे बेहोश और पागल होकर मर गये।

एक और सम्भ्रान्त व्यक्ति सिगरट पीते २ पागल हो गये थे, वे रात को छत पर चढ़कर चिल्लाते, 'परमात्मा मुझे यह क्या हो गया ?' एक दिन उन्हें आवाज़ आई 'तम्बाखू ! तम्बाखू !! तम्बाखू !!!' उस दिन से उन्होंने तम्बाखू छोड़ दिया और वे अच्छे हो गये। एक युवक ने विवाह किया, और विवाह रात्रि से ही बीमार रहने लगा, उसे हृदय रोग मृगी, उन्माद, हिस्टीरिया जैसे दौरे आने लगे। स्त्री ने समझा कि मेरे कारण ही ये रोगी हुए हैं, उसने डरते २ पति से कहा, आप किसी अच्छे डाक्टर को दिखाइये न। पति ने एक मामूली वैद्य से अपनी परीक्षा कराई। उसने रोग को भलीभांति न समझ कर कहा 'मुझे तम्बाखू की गन्ध आती है क्या तुम्हें किसी ने विष दिया है ?' युवक समझ गया। उसने उसी दिन से तम्बाखू पीना छोड़ दिया। और शीघ्र स्वस्थ हो गया।

एक प्रोफेसर साहब को गांव में रात बितानी पड़ी, वे जिस कमरे में सोये उसमें गृहपति ने रात भर हुक्का गुड़गुड़ाया। प्रातः होने पर उसने देखा कि मेहमान उठते ही नहीं हैं। उन्हें बहुत हिलाया डुलाया गया, पर वे न उठे। लोगों ने समझा मर गये। दौड़ धूप मच गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गांव में एक वैद्य रहते थे वे आये, उन्होंने नाड़ी देखी और कहा 'गड़बड़ मत करो, अभी मरे नहीं हैं।' पर वे बेहोशी का कारण न समझ सके। उन्हें कमरे में से निकालकर नीम के पेड़ों की छाया में खुली हवा में रखा गया। थोड़ी देर में ही उनकी मूर्छा जाती रही। उन्हें अपने कण्ठ में कड़वी चीज़ अटकी सी जान पड़ी। उन्होंने कई बार जोर लगाकर खकार थूकी तो काला धुआं निकला। और जीभ पर तम्बाखू का स्वाद मालूम पड़ा। उन्होंने पूछा कि मेरे कमरे में रात को कौन सोया था, गृहपति ने कहा कि मैं ही था, मैं रात में कई बार हुक्का पीने उठा भी था, पर किसी ग़ैर आदमी को अन्दर नहीं पाया। प्रोफेसर साहब खिलखिला कर हस पड़े और बोले—"बस बस, तम्बाखू से मुझे बेहद घृणा है। मैं इसी के धुएं से बेहोश हुआ।"

इसके विषैले धुंए का परिणाम अवश्य ही भयानक है। अब आप कल्पना कीजिये कि यदि कोई बच्चा दस वर्ष की अवस्था से तम्बाकू पीने लगे तो पांच वर्ष बाद उसके कलेजे में कितना विष जमा हो जायगा और उसकी दस वर्ष बाद क्या दशा होगी। वह निश्चय ही पागल और मूढ़ बुद्धि हो जायगा। परीक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि तम्बाखू सेवन करने वालों पर टाइफाइड ज्वर और हैजे का शीघ्र प्रभाव होता है।

एक रियासत के प्रधान मन्त्री टाइफाइड से बीमार हुए और ६ महीने तक भी स्वस्थ न हो सके। डाक्टरों ने कहा कि आप योरोप जाइये और सिगरेट न पीने का प्रण करिये। मन्त्री महोदय योरोप गये परन्तु उन्होंने तम्बाकू पीना न छोड़ा। वे बिना पिये बेचैन होने लगते थे परिणाम यह कि हुआ कि वे वहाँ जाकर और भी अशक्त हो गये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टरों ने समझाया, तम्बाखू की हानि बतलाने के लिये पुस्तकें पढ़ने को दीं पर वे न माने। आखिर डाक्टरों ने उनकी चिकित्सा बन्द कर दी और वे और भी रोगी होकर भारत लौट आये।

तम्बाखू पीने से समय भी कितना व्यर्थ जाता है यह भी सोचिये। दो घन्टे नित्य इस काम में खर्च हों तो एक वर्ष में ६० दिन खर्च हुए। दस वर्ष में डेढ़ वर्ष खर्च हुआ, पचास वर्ष में साढ़े सात वर्ष व्यर्थ गंवाये गये, और आर्थिक व्यय का तो हिसाब और भी अधिक है। अमेरिका में एक व्यक्ति की अभी मृत्यु हुई है जो ७५ सिगरट नित्य पीता था। उसकी मृत्यु का कारण निकोटाइन विष था। मिस्टर सिम्स समस्त दुनिया का हिसाब लगाकर बतलाते हैं कि प्रति वर्ष $ १,०००,०००,००० का तम्बाकू सेवन किया जाता है।

वैज्ञानिक आधार पर यह बात मानी गई है कि पीने और खाने दोनों क्रियाओं से प्यास लगती है। मुंह और गला खुश्क हो जाता है, और पानी पीने से भी प्यास कम नहीं होती। डाक्टर हम्फ्रे ने तम्बाखू का व्यापक प्रचार देख कर कहा था कि "वनमानुष भी इसे खाना पसन्द नहीं करेगा, फिर ये बुद्धिमान आदमी इसे क्यों खाते हैं? यह न तो पोषकतत्व है, न पाचक है, न मानसिक और शारीरिक शक्ति को बढ़ाने वाला है, यह तो हमारा प्रबल शत्रु है जो नसों को काट डालता है, पेट को नष्ट कर डालता है, प्यास को बढ़ाता है।"

जिस भूमि में तम्बाखू की खेती होती है वह शीघ्र ही शक्तिहीन हो जाती है, उसमें उर्वरा शक्ति नहीं रहती। इसीलिये जहां पहले तम्बाखू के खेत लहलहाया करते थे, वे भू भाग अब सूखे बंजर पड़े हैं, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तम्बाखू के विष ने उन्हें सत्यानाश कर डाला है। जो व्यक्ति तम्बाखू खाता और थूकता है वह अपने इर्द गिर्द ६० फीट तक तम्बाखू की गन्ध फैलाता है।

× × × ×

"दारू और भाँग की तरह तम्बाखू भी खराब है। जो शराब को खराब मानता है, वह सिगरट, तम्बाखू कैसे पी सकता है। तम्बाखू पीने वाले इतने ज्ञानशून्य हो जाते हैं कि वे बिना आज्ञा के दूसरों के घरों में तम्बाखू पीते जरा भी नहीं शर्माते।"

—महात्मा गाँधी

"चुरूट, तम्बाखू पीने से बुद्धि नष्ट होकर मनुष्य की अधर्म में प्रवृत्ति हो जाती है। यह एक ऐसा नशा है, जो कई अंशों में शराब से भी बुरा है।"

—टाल्सटाय

"तम्बाखू पीने से हाज़मा सुधरता है, यह विचार बिल्कुल ग़लत है। ऐसे हजारों रोगी आते हैं जिनकी पाचनशक्ति तम्बाखू के व्यसन से बिगड़ गई है।"

—डाक्टर मसी

"तम्बाखू, शराब, चाय आदि नशीली और विषैली चीजों में शरीर को पोषण करने वाला गुण जरा भी नहीं है। कमजोरी और अकाल मृत्यु के सिवा और कोई नतीजा इससे नहीं होता।"

—डाक्टर टी० ए० निकोलस

"तम्बाखू से शरीर के भीतरी भाग बिगड़कर सूज जाते हैं। यह भयंकर विष है इसमें जरा भी सन्देह नहीं।"

—डाक्टर अल्माट

"जिस पुरुष को ५० वर्ष तक जीना हो, वह तम्बाखू पीने के कारण ४० वर्ष ही जियेगा।"

—डाक्टर शॉफ़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पांचवां खण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय सातवां

मांस

प्रकरण १

मांसनिषेध

स्वमांसं परमांसेन, यो वर्धयितुमिच्छति ।
अनभ्यर्च्य पितॄन् देवान्, ततोऽन्यो नास्त्यपुण्यकृत् ॥
(मनु० ५।५२)

जो व्यक्ति केवल दूसरों के मांस से अपने मांस को बढ़ाना चाहता है, उस जैसा पापी और है ही नहीं।

मनु आगे चलकर कहते हैं:—

मां स भक्षयितामुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम् ।
एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥
(मनु० ५।५५)

आज जिसका माँस तुम खाते हो, परलोक में वह तुम्हारा मांस खायेगा। उस समय तुम जीभ रखते हुए भी बोल नहीं सकोगे। मृत्यु के भय से अव्यक्त रुदन करोगे।

वेदों में भी हिंसा की आज्ञा नहीं है:—

मा हिंसीः (यजुः १८।५३) किसी प्राणी की हिंसा मत कर।

कृत्मामपसुव (यजुः ३५।११) हिंसा को दूर कर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मा हिंसीस्तन्वा प्रजाः (यजुः १२।३२) प्रजाओं की शरीर से हिंसा मत कर।

अश्वं मा हिंसीः (यजुः १३।४२) अश्व की हिंसा मत कर।

यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्य मीति वरूणः परोमर्त्तः परः श्वा ॥
(यजुः २२।५)

जो मनुष्य घोड़े को मारना चाहता है उसे परमात्मा रोग देता है वह मरणशील कुत्ते के तुल्य मनुष्य हमसे दूर हो।

गां मा हिंसीं (यजुः १३।४३) गाय को मत मारो।

अन्तकाय गोघातम (यजुः ३०।१८) गाय को मारने वाले को मृत्यु दण्ड दो।

क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति (यजुः ३१।१८)

जो व्यक्ति गाय के मारने वाले के पास गोमांस मांगने जाता है, उसे क्षुधा दण्ड देना चाहिये।

इममूर्णायुं मा हिंसीः (यजुः १३।५०) भेड़ को न मारो।

ओषध्या मूलं मा हिंसिषम् (यजुः १।२३) औषधियों की मूल को न मारो।

अजावी आलभते भूम्ने। अथो पुष्टिर्वै भूमापुष्टि मेवावरून्धे।
(तैत्ति ब्रा० काण्ड ३ प्रपा० ९)

बकरे को न मारो।

मांस के विपक्ष में यह शास्त्रीय व्यवस्था है। वास्तव में मांस भक्षण प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल है इसे हम भोजन में गिन ही नहीं सकते। मौलाना महमूद-उल-हसन ने मांस के विषय में इस प्रकार

CC-0 In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यवस्था दी है, "कि रात्रि में मांस खाने से तुखमा, जो हैजे से कुछ न्यून होता है, हो जाता है; और खिलतें जो वात, पित्त, कफ कहलाती हैं, उनमें दोष आ जाता है। मन काला अर्थात मलिन हो जाता है। आंखों में धुंधलापन पैदा हो जाता है। ज़हन (बुद्धि) कुंद हो जाता है।

मुसल्मानों की धार्मिक पुस्तक अबुलफ़ज़ल तीसरे दफ्तर में लिखा है, "कि अज्ञानी पुरुष अपने मन की मूढ़ता में ग्रसित हुआ अपने छुटकारे का मार्ग नहीं ढूंढता। ईश्वर सबके सृजनहार ने उसके लिये अनेक पदार्थ उत्पन्न कर दिये हैं उनपर सन्तुष्ट न रह कर उसने अपने अन्तःकरण को पशुओं का कबरिस्तान बनाया है, और अपना पेट भरने के लिये कितने ही जीवों को परलोक पहुँचाया है। यदि ईश्वर मेरा शरीर इतना बड़ा बनाता कि यह मांस भक्षण की हानि न समझने वाले सब लोग मेरे ही मांस को खाकर तृप्त हो सकते और किसी अन्य जीव को न मारते तो मैं तेरा बड़ा ही कृतार्थ होता।"

मूक और असहाय जीव जन्तुओं पर निर्दय होना मनुष्य के लिये सर्वाधिक कलंक की बात है। ज्यों ज्यों सभ्यता का विस्तार होता जाता है, मनुष्य की क्रूरता नष्ट होती और सौम्यता बढ़ती जाती है। मनुष्य का स्वाभाविक भोजन फल-फूल और कन्द आदि हैं। अभ्यास से उसने अपनी इन्द्रियों की स्वाभाविक शक्ति को ऐसा बिगाड़ डाला है कि जिस वस्तु को देखकर हमें घृणा होनी चाहिये उसे ही प्रसन्नतापूर्वक मसालों से स्वादिष्ट बना कर खाते हैं। पशुओं का यह नियम नहीं है। जो पशु घास खाते हैं वे मांस को सूंघते भी नहीं और जो मांस खाते हैं वे घास को नहीं छूते। इसी प्रकार फल और कन्द आदि के खाने वाले जीव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन पदार्थों को छोड़ कर घास पात नहीं खाते। प्यास लगने पर भी पशु पानी के सिवा अन्य पेय पदार्थों को नहीं पीता। परन्तु मनुष्य बहुत ही विलक्षण है। वह सब कुछ पेट में समा लेता है।

थलचर पशुओं के तीन भेद हैं। माँस-भक्षी, बनस्पति-भक्षी और फल-भक्षी। बिल्ली, कुत्ता और सिंह आदि हिंस्त्र जीव मांसभक्षी हैं। उनका स्वाभाविक भोजन मांस है। इसलिये इनके दांत लम्बे, नुकीले और दूर दूर होते हैं। इस प्रकार के दाँतों से ये जीव मांस को फाड़ कर निगल जाते हैं। उनके दांतों की रचना से यह स्पष्ट सूचित होता है कि प्रकृति ने उन्हें माँस खाने के लिये वैसे दांत दिये हैं। गाय, बैल, घोड़ा, बकरी आदि जीव वनस्पति भक्षी हैं इसलिये प्रकृति ने उनके दांत ऐसे बनाये हैं जिनमें उनसे वे घास को सहज ही काट सकें। मनुष्य के दांत न तो माँस भक्षी और न वनस्पति भक्षी पशुओं से मिलते हैं। उनकी बनावट ठीक वैसी है जैसी बन्दर आदि फल भक्षी जीवों के दांतों की होती है। अतएव यह निर्विवाद है कि मनुष्य फल भक्षी जीव है। माँसभक्षी जीवों का मेदा छोटा और गोल होता है। उनके शरीर से उनकी अंतड़ियां तीन से लेकर पांच गुना तक अधिक लम्बी होती हैं। वनस्पति भक्षी पशुओं का मेदा बहुत बड़ा होता है वे खाते भी अधिक हैं। उनकी अंतड़ियाँ उनके शरीर से बीस से लेकर २८ गुना तक अधिक लम्बी होती हैं। फल भक्षी जीवों का मेदा चौड़ा होता है, उनकी अंतड़ियां उनके शरीर से दस से बारह गुना तक अधिक लम्बी होती हैं।

जिस वस्तु को उसकी स्वाभाविक दशा में देखकर खाने को मन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करे वही मनुष्य के खाने योग्य है। कच्चा माँस खाने को किसकी इच्छा होती है ? उस पर भिनभिनाती हुई मक्खियाँ और सड़न की बदबू देख कर किसका मुंह उसका स्वाद लेना पसन्द करेगा ? जो वस्तु नेत्रों को भी अप्रिय है, उसे जिह्वा कब स्वीकार कर सकती है !

डाक्टर मिचलेट साहब ने अपनी एक भोजन सम्बन्धी पुस्तक में लिखा है, "जीवन मृत्यु और नित्य की हत्यायें जो केवल क्षणिक जीभ के स्वाद के लिये हम नित्य करते हैं, तथा अन्य तामसिक और कठोर समस्यायें हमारे सन्मुख उपस्थित हैं। हाय, यह कैसी हृदयविदारक और उलटी चाल है। क्या हमें किसी ऐसे लोक की आशा करनी चाहिये, जहां पर ये क्षुद्र और भयंकर अत्याचार न हों।"

अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० शिंटंडेन Ph. D., D. Sc., L. L. D. ने एक प्रयोग किया था। उन्होंने ६ मस्तिष्क से कार्य करने वाले व्यक्ति लिये, जिनमें प्रोफेसर और डाक्टर लोग थे तथा २० शारीरिक कार्य करने वाले लिये, जो फौज में से लिये गये थे और ८ यूनीवर्सिटी से पहलवान लिए गये। हर एक को वही चीज खाने को दी गई जो उचित समझी गई। प्रयोग बिल्कुल वैज्ञानिक ढंग से किया गया था।

यह प्रयोग अक्तूबर सन् १९०३ से प्रारम्भ हुआ और जून १९०४ तक होता रहा। इसमें उन्हें थोड़ा प्राण पोषक तत्व दिया जाता था, जिससे केवल उसमें उनकी आरोग्यता और शक्ति बनी रहे। इस प्रयोग के पूर्व चिकित्सकों का मत था कि प्रत्येक मनुष्य के लिये केवल १२० ग्राम (२ छटांक) प्राण पोषक तत्त्व (प्रोटीड) की आवश्यकता है। जो लोग यह चिल्लाया करते हैं कि मनुष्य के लिये केवल प्राण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पोषक तत्त्व की ही आवश्यकता है वह जितना अधिक मिले, उतना ही अच्छा है, वे भूल करते हैं। प्रो० शिटंडेन ने यह सिद्ध कर दिया कि २० सिपाहियों के लिये ५० ग्राम प्राण पोषक तत्त्व काफी था और ८ पहलवानों के लिये ५५ ग्राम बहुत होता था। प्रोफेसर महोदय ने स्वयं ३६ ग्राम अपने लिये प्रयोग किया, फिर भी उनकी शक्ति बढ़ती गई। प्रयोग में जो सिपाही लिये गये थे, उनकी खुराक पहले ७५ औंस (२। सेर) थी, जिसमें उन्हें २२ औंस कसाई के यहाँ का मांस मिलता था। प्रयोग में माँस बिल्कुल बन्द करके इनकी खुराक केवल ५१ औंस कर दी गई। ९ महीने वे उस खुराक पर रहे। यद्यपि वे लोग पहले भी आरोग्य थे, तथापि नौ महीने तक बिना मांस का भोजन किये वे बहुत ज्यादा ताकतवर तथा अच्छी अवस्था में पाये गये।

इस प्रयोग में डाइनमोमीटर से ज्ञात हुआ कि उनकी शक्ति पहले से ड्योढ़ी हो गई थी और उन्हें कार्य में विशेष उत्साह रहता था। इस प्रयोग के बाद, कहने पर भी उन्होंने मांस नहीं खाया।

इंगलैंड के प्रसिद्ध डाक्टर जे० एफ० क्लार्क की राय है कि जो व्यक्ति माँस को शक्तिवर्द्धक पदार्थ समझ कर खाता है उसे माँस त्याग कर गन्ने का रस पीना चाहिये। क्योंकि मांस से कहीं अधिक गन्ने का सेवन उपयोगी है। सन् १९२४ में भारत में माउण्ट एवरेस्ट पर चढ़ाई करने जो अंग्रेज दल आया था, उसके साथ मेजर हिंगस्टन डाक्टर की हैसियत से गये थे। उन्होंने लन्दन में रॉयल जॉगराफिकल सोसाइटी के सामने भाषण देते हुए दो बातों पर विशेष प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा, 'ज्यों २ हम लोग ऊपर चढ़ते गये, त्यों २ स्वाभाविक-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तया कई व्यक्तियों ने माँस खाने से बिल्कुल अनिच्छा प्रकट की, और सब में मीठा खाने की प्रबल इच्छा जाग्रत हो गई ।'

डाक्टर क्लार्क कहते हैं कि "गौमाँस की चाय और शोरवे की गरमा गरम प्याली को पीकर रोग शय्या पर पड़े २ ही इतने मनुष्य मरे हैं जितने कि नैपोलियन जैसे प्रबल योद्धा के युद्ध स्थलोंमें भी नहीं मरे होंगे। डाक्टरों को चाहिये कि वे रोगियों को मांस तथा मांस से बने दूसरे पदार्थों के व्यवहार से सर्वथा रोकें। गन्ने की खांड पूर्वी देशों में हर प्रकार की थकावट की उत्तम दवा समझी जाती है ।हर एक मजदूर अपनी थकावट दूर करने के लिये गन्ने का रस चूसता है। बड़ी २ तोप खींचने वाले हाथियों की खुराक भी गन्ना ही है। प्रत्येक घुड़सवार कड़ी मंज़िल के बाद अपने घोड़े को गन्ने का गुड़ खिलाता है। गन्ने की खांड एक ऐसी कीमती दवा है, जो न केवल थकावट दूर करके शरीर में चैतन्यता लाती है, बल्कि दिल पर ऐसा अच्छा प्रभाव करती है कि दिल के रोगी की चिकित्सा करने वाला इसके बिना कुछ कर ही नहीं कर सकता ।"

सन् १८७० में जो फ्रान्सीसी सिपाही केवल चाकलेट खाकर सोडान के मैदान में बड़ी बहादुरी से लड़े थे, उनके तजुर्बे से लाभ उठाकर सन् १९१४ के महायुद्ध में जर्मन सिपाहियों को निश्चित रूप से गन्ने की खांड दी जाती थी।

लन्दन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर हालवर्दन M. D., F. R. S., प्रोफेसर ऑफ फिजियोलोजी ने, माँस और वनस्पति के पोषण तत्त्वों को इस प्रकार जांचा है:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वस्तु	जल	पोषक तत्व	चिकनाई	ठोस चीज़	अग्निवर्द्धक	मेदा
गो मांस	७४·६	१९·४	२·९	२४·४	·८	...
मुर्ग़ी मांस	७२·६	१९·९	६·२	२७·४	·६	...
सुअर मांस	७७·८	२२·७	४·१	२९·२	१·२	...
मटर	१४·८	२३·७	१·६	७·५	...	४९·३
गेहूँ	१२·४	२४·८	१·७	३·६	५९·६	...

सन् १८७९ की पार्लियामेंट में इंगलैण्ड के कैदियों के भोजन के प्रबन्ध के बारे में एक रिपोर्ट पेश हुई थी कि एक पैंस के मटर में जितना पोषकतत्व है, उतना नौ पैंस के मांस में है। कुछ दिन पहले तक लोगों की धारणा थी कि कुश्ती लड़ने या कसरत करने वालों को मांसाहार करना परमावश्यक है, इसलिये योरोप, अमेरिका और पश्चिमी देशों के पहलवान अधपके मांस और अन्य उत्तेजक पदार्थों को खाते थे। पर अब उनकी यह धारणा बदल गई है और वे शाकाहारी बनते जारहे हैं। तुर्की सिपाही मांस बहुत कम खाते हैं, इसलिये वे योरोप भर में बली और योद्धा समझे जाते हैं। लालसमुद्र तथा स्वेज नहर के किनारे वाले भी मांस नहीं छूते, वे सब बड़े परिश्रमी और बली होते हैं। स्काटलैंड निवासी भी मांस नहीं खाते, वे भी अधिक बली होते हैं। काबुल के पठान मेवा अधिक खाते हैं, इसीसे पुष्ट हैं। मांसाहारी क्रोधी और भयानक हो जाते हैं, उनमें पैशाचिक और निर्दय भावना स्थिर हो जाती हैं, पर वे बलवान नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होते। शेर अरने भैंसे से मुकाबला नहीं कर सकता। जितना बोझ एक बैल या घोड़ा खींच लेता है उतना दस शेर नहीं खींच सकते। मथुरा के चौबों का मुकाबला कोई मांसाहारी नहीं कर सकता। प्रसिद्ध राममूर्ति ने योरोप के पहलवानों को दाल चावल के बल पर विजय किया था। स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी से उनकी ८६वीं वर्ष गांठ के दिन एक पत्र प्रतिनिधि ने उनसे उनकी आरोग्यता का कारण पूछा तो उन्होंने कहा दि मैं न मांस खाता हूँ, न शराब पीता हूं, न मसाले खाता हूं। मैं सदा शुद्ध वायु सेवन करता हूं।

कुछ लोग कहते हैं कि ठंडे मुल्कों में शरीर में गरमी बनाये रखने के लिये चर्बी खाने की आवश्यता पड़ती है और यह केवल मांस में ही होती है। परन्तु बनस्पती शास्त्र के विद्वानों का मत है कि गूदेदार फलों में भी चर्बी के समान ही गर्मी पैदा करने की शक्ति है। जैसे बादाम, सेव छुहारे, किशमिश, गेहूं, उड़द बाजरा, मटर, घी, दही, दूध, आम, गन्ना गेहूं, चना आदि।

अमेरिका के डाक्डर जानहार्न का मत है कि मांस बड़ी देर में पचता है। इसके पचने के समय कलेजे की धड़कन दो सौ के लगभग बढ़ जाती है। जिससे हृदय रोग हो जाता है, और मेदा कमज़ोर हो जाता है। 'इंडियन मेडीकल जरनल' नामक पत्र में लिखा है कि मांस भक्षकों के मूत्र में तिगुनी 'यूरिक एसिड' अधिक बढ़ जाती है। इसी प्रकार 'यूरिया' भी दुगुनी आने लगती है। ये दोनों पदार्थ विष हैं। उनके गुर्दों को अधिक काम करना पड़ता है, जिससे गठिया, वातरोग, अस्थिरोग और जलोदर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर अलेकज़ेन्डर मार्सडम, M.D.,F.R.C.S., चेयरमैन ऑफ कैंसर अस्पताल लदन, लिखते हैं "कि इंगलैंड में कैंसर के रोगी दिन २ बढ़ते जाते हैं। प्रतिवर्ष ३०,००० मनुष्य इस रोग से मरते हैं। मांसाहार जितनी तेजी से बढ़ रहा है, उससे इस बात का भय है कि भविष्य की सन्तानों में से ढाई करोड़ लोग इसकी भेंट होंगे। जिन देशों में मांस अधिक खाया जाता है, उन देशों में रोग ज्यादा होते हैं और डाक्टरों की अधिक आवश्यकता होती है।

देश	एक वर्ष में एक आदमी पर मांस का खर्च	दस लाख मनुष्यों में डाक्टरों की संख्या
जर्मनी	६४ औंस	३५५
फ्रांस	७७ औंस	३८०
इंगलैंड व वेल्स	११८ औंस	५७८
आस्ट्रेलिया	२७६ औंस	७८०

डाक्टरों ने खोज करके बताया है कि निमोनिया, लकवा, रिंडरपेस्ट शीतला, कंठमाला, क्षय और अदीठ इत्यादि भयंकर और प्राण नाशक रोग प्रायः गाय, बकरी और जल जन्तुओं के मांस खाने से होते हैं। सूअर के मांस में एक प्रकार छोटे कीड़े कद्दूदाने होते हैं, उनके पेट में जाने से अनेक रोग पैदा होते हैं। बकरी के मांस में ट्रिकनास्पिक्टस कीड़ा रहता है जिससे भयंकर रोग ट्रिकनोसिस हो जाता है। पठनी मछली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खाने से कुष्ठ रोग होता है। मांस को देख कर नहीं कह सकते कि यह रोगी पशु का मांस है या स्वस्थ का। कसाई दूकानदार रोगी दुर्बल और सस्ते पशु ही काटते हैं।

मांस में कोई स्वाद नहीं। मांस स्वाभाविक नहीं। मांस में पुष्टि नहीं। मनुष्य मांस को कच्चा और बिना मसाले के खाना पसन्द नहीं करता। पहलेपहल मांस खाने से उल्टी हो जाती है। इस अस्वाभाविक भोजन को मनुष्य इतना अधिक खाता है कि देश की बहुत बड़ी पशु और धन राशि व्यर्थ ही नष्ट हो जाती है। सन् १८७० ई० में जार्ज नेमिल ने लार्ड पादरी होते समय जो भोज दिया था उसका ब्योरा सुनिये:—

मैदा १५० मन, एल शराब ९८५० मन, अन्य शराब २८०८ मन, मसालेदार पीपे की शराब ९॥ मन, बैल ८०, जंगली सांड ६, बछड़े ३०० सूअर ३०० ,भेड़ें १००८, सूअर के बच्चे ३००, हिरन ४००, रजहंस ३०००, मुर्गे ३०००, मुर्गी २०००, मोर १००, चकवा २००, कबूतर ४०००, खरहा ४०००, बकरी के बच्चे २००, तीतर ५००, कठफोड़ा २०००, प्लोभर पक्षी ४००, बिटरण पक्षी २०४, वक १०००, हंस ४०००, कौच १००, बटेर १००, फेज़र पक्षी २००, रीस पक्षी २००, मृग मांस के पकौड़े १५००, ठंडे पकौड़े ४०००, इसके सिवा ११ हज़ार भिन्न २ प्रकार के पकवान और १००० से अधिक मछलियां और कितने ही प्रकार के मुरब्बे विस्कुट आदि की व्यवस्था की गई थी। १ हजार परोसने वाले, ६२ पकाने वाले, और ५१५ प्रबन्धक थे।

भारत में प्रति वर्ष ४० लाख गाय बैलों की हत्या होती है जिनमें दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाख भारतीय मुसल्मानों के काम आते हैं, शेष ३८ लाख की खपत देश के बाहर होती है। इस समय संसार में गौमांस का सबसे बड़ा बाजार भारत है! बम्बई सरकार की रिपोर्टों से पता चलता है कि गत ४ वर्षों में १॥ लाख से अधिक गायें और ३१ हज़ार के लगभग भैंसे काट डाली गई हैं। इसके सिवा १० हज़ार बिना ब्याही गाएँ और जवान बछड़े तथा ५८ लाख बैल काट डाले गये हैं। यह एक सरकारी कसाईघर का हिसाब है। ऐसे ऐसे अठारह कसाईघर हैं। प्रति वर्ष भारत से १६ करोड़ रुपये का तो चमड़ा ही बाहर भेजा जाता है।

भारत में ८० हज़ार गोरे सिपाही हैं जिनका भोजन गौमांस है। प्रत्येक पुरुष १॥ सेर मांस भी प्रतिदिन खाय तो रोजाना ९४६ मन और साल भर में ३ लाख ४५ हजार २९० मन हुआ। इतना कितनी गायों की हत्या से मिलेगा? फिर ७ करोड़ मुसलमान भी हैं। भारत में लगभग १२ सरकारी कसाईखानों के अलावा ३॥ लाख कसाई हैं। समस्त भारत में २० करोड़ मांसाहारी मनुष्य हैं। इनमें से ७ करोड़ मुसलमान और १० लाख अंगरेज़ निकाल दिये जांय तो भी १२॥ करोड़ हिन्दू मांसाहारी लोग बच रहते हैं, जिन्होंने बकरी के माँस को इतना मंहगा कर दिया है कि गरीब मुसलमान लाचार गौमांस खाते हैं। इसके सिवा गत १० वर्षों में २२ लाख जीते पशु काटे जाने के लिये जहाजों में भरकर पानी के रास्ते से, और १६ लाख खुश्की के रास्ते से ईरान तिब्बत आदि को माँस के लिये भेजे गये हैं।

बम्बई के सरकारी कसाईखाने हमने देखे हैं, वहां हजारों गायें लाइन में सीधी बांध दी जाती हैं, उनके आगे खाने को चारा डाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिया जाता है। वे बहुत कसकर बांधी जाती हैं जिससे इधर उधर न हिल सकें और जब सबके मुंह नीचे न्यार में लगे होते हैं, ऊपर से बड़ी भारी छुरी खट से उनकी गर्दन पर गिरती और उनका काम तमाम कर देती है। घास के निवाले दाँतों में भिचे हुए ही रह जाते हैं। इससे भी करुण दृश्य उस समय का है, जब काटने से प्रथम उनका अन्तिम दोहन होता है। उनके थनों में मशीन लगा कर रत्ती २ दूध खींच लेते हैं, इससे पशु को कष्ट होता है, यदि फिर भी दूध बाकी रह जाय तो उसके पुट्ठों पर डंडों की मार पड़ती है, पुट्ठे टूट कर ढीले पड़े कि हड्डियों में से दूध एक २ बूंद छूट पड़ता है। इस प्रकार मारने से पहले उनका दूध भी लेकर सरकारी कसाईघर रुपया कमाते हैं। अन्तिम दोहन का कष्ट कोई भी सहृदय हिन्दू नहीं सह सकता। भारत के माँसाहारी मनुष्यों, तुम राक्षसों से भी अधम हो। मेरी तो स्पष्ट राय है कि सरकार मद्यनिषेध से पहले मांसनिषेध के कार्य को अपने हाथ में ले और इसके लिये कठोर से कठोर दण्ड की व्यवस्था करे। क्योंकि शराबियों की उतनी अधिक संख्या नहीं है जितनी अधिक माँसाहारी मनुष्यों की है।

माँस पर डाक्टरों की राय:—

"मेरा २५ वर्ष से मछली और पक्षियों के माँस त्याग का अनुभव है। मेरे पिता की आयु इससे २० वर्ष बढ़ गई थी। माँस से अधिक फल बहुत लाभ करते हैं।"

—डाक्टर वाल्टर हाडविन M. D.

"जब मैं मांस खाता था तब मुझे जिगर का दर्द रहता था, अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब से मैंने माँस त्याग दिया है, मेरा दर्द मिट गया है।"

—मिस्टर हैनसिन

"एक रोगी की गर्दन पर चार वर्ष से कैंसर थी। मुझे खोज करने पर उसके मांसाहारी होने का हाल मालूम हुआ। उससे माँस छुड़ा दिया गया और वह स्वस्थ है।

—डाक्टर J. H. K. लॉग

"माँसाहार शक्ति प्रदान करने के बदले निर्बलता का शिकार बनाता है और उससे जो नाइट्रोजीनस पदार्थ उत्पन्न होता है वह स्नायु पर विष का काम करता है।"

—डाक्टर सर टी० लोडर ब्रंटन

"माँसाहार की वढ़ती के साथ २ नासूर के दर्द की भी असाधारण वढ़ती पाई जाती है।"

—डाक्टर विलियम रॉबर्ट

"नासूर के दर्द का होना माँस का परिणाम है।"

—डाक्टर सर जेम्ससीयर M. D., F. R. C. P.

"८५% गले की आँतों के दर्द का कारण मांसाहार है।"

—डाक्टर लीओनार्ड विल्यम्स

"डेढ़ सौ वर्ष पहले से अब दांत के दर्द और पायोरिया के केस अधिक बढ़ गये हैं। इसका कारण मांसाहार है।"

—डाक्टर मिस्टर ऑर्थर अन्डरवुड

"१०५००० में से ८९२५ विद्यार्थी दन्त रोगी पाये गये, ये सब माँस के कारण से।"

—डाक्टर मिस्टर थोमस जे० रोगन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छठा खण्ड

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय आठवां

चाय, कोको, क़हवा, कॉफ़ी

प्रकरण १

चाय

सन् १६६४ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने लगभग १ सेर चाय इंगलैंड के तत्कालीन बादशाह चार्ल्स द्वितीय को भेंट की। रानी कैथरीन को यह बहुत पसन्द आई और शीघ्र ही इंगलैंड में इसका प्रचार हो गया।

चाय की जन्मभूमि चीन देश है। भारत में आसाम, नीलगिरी और लंका में चाय की पैदावार होती है। आसाम देश में चाय की सबसे अधिक उपज है। अंग्रेजी शासन और आधुनिक सभ्यता ने भारत में चाय का बहुत अधिक प्रचार किया है। बम्बई में झल्ली ढोने वाला दो पैसे का मज़दूर भी होटल में बैठ कर एक सिंगिल कप ज़रूर पियेगा। प्रचार का सबसे अधिक कारण चाय के बर्तनों का सेट है। चीनी के बढ़िया प्याले और तश्तरियाँ जब ट्रे में सजा कर रूमाल से ढक कर मेज पर चुनी जाती हैं तब कौन ऐसा है जो एक घूंट चाय पीना पसन्द न करे। घर २ में इन चाय के सेटों ने चाय को घुसाया है। करोड़ों रुपयों के सेट हमारे घरों में विद्यमान हैं।

आजकल भारत में चाय कम्पनियों का एक संगठित Tea

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Expansion Board बन गया है जो चाय के प्रचार में लाखों रुपये प्रति वर्ष करता है। गांव गांव, कस्बे २ आप चाय के प्याले मुफ़्त में पी सकते हैं। ये प्रचारक ग्रामोफोन का गाना सुनाते हैं, आपको चाय बनाने की भी विधि समझाते हैं और एक पैसे में एक पैकेट चाय देते हैं। स्टेशनों की दीवारों पर, अखबारों के पृष्ठों पर "चाय भारत का सर्वोत्तम पेय" विज्ञापन लिखा रहता है। क्या किसान, क्या राजा सभी को चाय पीने से स्फूर्ति आती है, गरमी में ठंडक पहुंचाती है, सरदी में गरमी पहुंचाती है, बुखार को रोकती है, बुढ़ापे को दूर भगाती है, इत्यादि अनेक झूठी बातें चाय के प्रचार में हमसे कही जाती हैं। पर सरकार इस प्रचार में कुछ भी बाधा नहीं डालती। इसे व्यापार का प्रश्न समझ कर हाथ में नहीं लिया जाता।

चाय एक प्रकार के वृक्षों की सूखी हुई पत्तियां हैं। इसके पीने से हल्का नशा होता है। इसमें तीन विष होते हैं:—

थीन (Theine)	२%
टेनिन (Tanin)	१५%
वोलेटाइल आयल (Volatile oil)	४%

थीन एक तीव्र क्षार है। ज्ञान तन्तुओं के संगठन पर इसका बहुत ही उत्तेजक और विषैला प्रभाव पड़ता है। चाय पीने में जो एक हल्का आनन्द प्रतीत होता है वह इसी क्षार का प्रभाव है।

टेनिन एक तीव्र कब्ज करने वाला पदार्थ है जिससे पाचन शक्ति बिल्कुल नष्ट हो जाती है। पेट में विकार होते हैं।

वोलेटाइल तैल वह है जिसकी सुगन्ध आती है। इसमें नींद को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नष्ट कर देने की शक्ति है।

चाय उत्तेजना लाती और हल्का नशा भी लाती है। पहला प्रभाव आनन्ददायक होता है। पेट की नसें उत्तेजित हो जाती हैं। मस्तिष्क उत्तेजित होकर हृदय की गति को तेज कर देता है। इससे थोड़ी देर के लिये सम्पूर्ण शरीर फुर्तीला बन जाता है। परन्तु चाय का प्रभाव दूर होते ही कमजोरी और सुस्ती आ घेरती है।

वृद्धावस्था में चाय पीने वालों को, निद्रानाश, कंपन, मस्तिष्क की गड़बड़ और हृदय की धड़कन आदि रोग हो जाते हैं।

कोको, क़हवा, कॉफ़ो

योरोप में इन पदार्थों का अधिक प्रचार है। ये चाय से अधिक शक्तिवान है। और चाय की भाँति ही व्यवहार में आते हैं।

क़हवे में (Coffein) कॉफीन नामक एक विष और अधिक होता है जो ७५ % होता है। यह कड़वा विष है। जो हृदय की गति को सुस्त कर देता है।

कोको में एक क्षार थियोब्रोमाइन होता है, यह हृदय की धड़कन और दिमाग़ी शक्ति पर बुरा प्रभाव डालता है।

× × ×

"यह पदार्थ राष्ट्र को डुबाने के लिये काफी उद्योग कर रहा है। इसने हजारों स्त्री पुरुषों की क्षुधा उड़ा दी है। यह गरीबों का फालतू खर्च है।"

—महात्मा गाँधी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अध्याय नवां

कांग्रेसी सरकारें और मादकनिषेध कार्य

प्रकरण १

कांग्रेस मिनिस्टरी बनते ही प्रान्तीय सरकारों में मादक निषेध कार्य की चर्चा सुनाई देने लगी। कांग्रेस का यह कार्य सन् १९२० से कांग्रेस के कार्यक्रम का एक अंग रहा है और उसके सम्बन्ध में इन बीस वर्षों में कार्यकर्त्ताओं और सहानुभूति रखने वालों ने समय २ पर अनेक कष्ट उठाये हैं। इसलिये अवसर मिलते ही इस कार्य को हाथ में लिया गया। यह कार्य बहुत सहल नहीं था, फिर भी इस गुरूतर भार को बहुत बुद्धिमानी से उठाया गया। जिसके परिणाम स्वरुप अंधेरे और सुषुप्त घरों में वर्षों बाद चिराग जले हैं और भूखी स्त्रियों और बच्चों ने कांग्रेस को दुआएं दी हैं कि आज हमारे आदमी ने शराब के पैसे बचा कर अनाज खरीदा है। कितने ही शराबियों ने अब महाजनों से कर्जा लेना बन्द कर दिया है। हजारों ने अपने मलिन और शराब से दुर्गन्धित वस्त्रों को त्याग कर नवीन वस्त्र पहने हैं, मानों आज वास्तव ही में जीवन का आलोक उदय हुआ है, प्रकाश की किरण उनके घर में नव सन्देश लाई है।

कांग्रेसी सरकारों ने ठेके की सब दुकानों को बन्द कर दिया और बहुत कम ठेके रखे गये। इन ठेकेदारों को सरकारी खजाने में जमानत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का रुपया जमा करके बिक्री का लाइसेन्स प्राप्त करना पड़ता है। प्रत्येक प्रान्त में एक एक 'आबकारी कमीश्नर' नियत किये गये हैं, लाइसेन्स इन्हीं की स्वीकृति से मिलता है। इन दुकानदारों को केवल उन्हीं खरीदारों को बेचना चाहिये जिन्हें सरकार से खरीदने की आज्ञा प्राप्त है। यह आज्ञा प्रत्येक खरीदार को आबकारी कमीश्नर से प्राप्त करनी पड़ती है। वे पहले डाक्टर के पास जाकर मादक वस्तु खाने का सार्टीफिकेट प्राप्त करते हैं, डाक्टर उनकी परीक्षा और जांच करता है कि ये पुराने खाने वाले हैं और ये बिना खाये रह ही नहीं सकते, सब बातों की छानबीन करके वह सार्टीफिकेट देता है। सार्टीफिकेट कोई भी रजिस्टर्ड डाक्टर दे सकता है। इस सार्टीफिकेट पर खाने की मात्रा भी लिखी है। यह सार्टीफिकेट सरकारी फार्म पर भरा जाता है जो बिना फीस आबकारी दफ्तर से मिल सकते हैं। इस सार्टीफिकेट को लेकर आबकारी अफसर के पास जाते हैं तब वे अपने रजिस्टर में उसे दर्ज करके रजिस्टर नम्बर देकर खरीदने और खाने पीने की आज्ञा देते हैं। एक व्यक्ति एक ही मादक वस्तु खरीद सकता है। इन नियमों के विपरीत करने वाला दण्डनीय है। और जो पकड़े गये हैं उन्हें सजा दी गई है।

इसके साथ ही शराबियों और अफीमी लोगों में स्वयंसेवक तथा सरकार के प्रचारकगण जा जाकर मादक वस्तु की हानि बता कर उन्हें सर्वथा त्यागने की प्रार्थना करते हैं। अनेक धार्मिक संस्थाओं विशेषकर स्थानीय आर्यसमाजों ने अपनी सेवाएं अर्पित करके सरकार को पूर्ण सहयोग दिया है। गांव २ में जाकर जल्से करते हैं, सभायें होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैजिक लैन्टर्न से उपदेश देते हैं। जिसका परिणाम बहुत अच्छा रहा है। गाँव के गाँव शराब से सूखे हो गये, भट्टियाँ दफना दी गईं और सर्वत्र नवीन जीवन लहलहाने लगा है।

इस प्रकार का सबसे पहला कदम मद्रास सरकार ने उठाया। प्रीमियर श्री राजगोपालाचार्य की अन्तरात्मा ने इस शुभ कार्य में देर करना सहन नहीं किया और सन् १९३७—३८ के दूसरे भाग में केवल एक जिले में मद्य निषेध आरम्भ किया गया था, इस समय यह तीन जिलों के अन्दर है। १९३८—३९ में मद्य निषेध पूरे वर्ष एक जिले में और ६ महीने दो जिलों में रहा। सरकारी आय पिछले साल की अपेक्षा ३१ लाख घट गई। १९३९—४० में दूसरे भाग में अन्य जिलों में भी यह कार्य आरम्भ किया जायगा। और सरकार को लगभग १॥ करोड़ रुपये की आय हानि हुई।

यू० पी० सरकार ने मद्य निषेध का ठोस कार्य चुपचाप ही किया। एटा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, बिजनौर, जौनपुर, बदायूं जिलों में सफल प्रयोग किये गये।

मैनपुरी में जहां पहले अफीम २२५ सेर खाई जाती थी अप्रेल सन् १९३९ में वह घट कर केवल १ सेर ६ छटांक रह गई। और चरस ५५ सेर से घट कर ४ छटांक ही। एटा में ८८ व्यक्तियों में एक सप्ताह में अफीम केवल २० तोले ४ रत्ती और चरस ६ तोला ५ माशा खाई गई। शराब केवल १ बोतल पी गई। मई सन् १९३९ में ८१ व्यक्तियों में २९ तोले ३ माशा २ रत्ती अफीम खाई गई। मैनपुरी में मद्य निषेध के प्रथम वर्ष में ही देसी शराब ५९३२ गैलन से घटकर केवल ९ गैलन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही रह गई। चरस ४००॥ से केवल ५॥ सेर, भाँग १४१८ सेर से ८॥ सेर, अफीम १५७॥ सेर से केवल २८ सेर रह गई। एटा में एक वर्ष में १२८४ सभायें मद्य निषेध के प्रचार में हुईं। नुमायशें भी की गईं। वहां अफीम १८० सेर से घट कर केवल १०॥ सेर, चरस २२२ सेर से घट कर ३। सेर, भांग १०५९ सेर से घट कर ६ सेर, देशी शराब ४९८६ गैलन से घट कर ६ गैलन, विदेशी शराब ३५·८२ इम्पीरियल गैलन से घट कर ३·५० इम्पीरियल गैलन, ताड़ी १२६·६६ गैलन से घट कर ३४·८० गैलन रह गई। २७० केस पकड़े गये, पकड़ने वालों को १३८०) रुपये इनाम दिये गये।

युक्त प्रान्त में लोगों को शराब के बदले गन्ने का रस पिलाया गया, गाँवों में मेले किये गये जहां पहुँच कर स्वयं मन्त्रीगणों ने व्याख्यान दिये और मद्य की बुराइयों को समझाया।

बम्बई सरकार ने पहली अप्रेल सन् १९३८ से गाँवों में मद्य निषेध का प्रयोग आरम्भ किया। इसके द्वारा देशी शराबें, ताड़ी, विदेशी शराबें, वाइन और बीयर का बेचना बन्द कर दिया गया। गाँवों की सफलता के बाद २१ जुलाई ३८ से अहमदाबाद में मद्य निषेध आरम्भ हुआ। बम्बई सरकार का सबसे बड़ा स्तुत्य कार्य बम्बई जैसे विस्तृत नगर में मद्य निषेध जारी करना हुआ है।

पहली अगस्त १९३९ से बम्बई और इसके उपनगरो में शराब पूरे तौर से बन्द कर दी गई है और वहां केवल ग़ैरएशियावासियों को ही शराब पीने का आज्ञापत्र दिया गया है। इतनी कठोर आज्ञा अन्य किसी सरकार ने प्रचलित नहीं की। यथेष्ट संख्या में स्पेशल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुलिस और स्वयंसेवक भरती किये गये ताकि चोरी से शराब शहर में न आ सके, न बन सके। शहर के अन्दर आने वाले सभी मार्गों पर पुलिस का ज़बरदस्त पहरा है, मद्यनिषेध क्षेत्र में पुलिस की टुकड़ियां चक्कर लगाती हैं। शहर में आने वाली सभी रेलगाड़ियों की अच्छी तरह जांच होती है। चोरी से लाई जाने वाली शराब का पता लगाने के लिये शरीफ़ सी० आई० डी० लगाई गई है जो आज़ादी से मुसाफ़िरों से मिलकर चोरी से लाई जाने वाली शराब पकड़ती है।

बम्बई में नियन्त्रण रखना बहुत ही कठिन कार्य था क्योंकि वहां थलमार्ग के अलावा जलमार्ग भी है। फिर भी मद्यनिषेध को क़ाबू में किया गया। केन्द्रीय सरकार ने बम्बई सरकार को मद्यनिषेध जारी करने के लिये नगर के आस पास समुद्र पर भी अधिकार दे दिया है इसलिये बम्बई सरकार समुद्री मार्ग से शराब न आने देने के उद्देश्य से स्टीम लंच द्वारा निगरानी करवाती है। बम्बई में समुद्री सीमा के तीन मील के अन्दर ज्योंही कोई जहाज़ आया कि मद्यनिषेध पुलिस इस पर चढ़ता है और जहाज़ के शराबख़ाने बन्द कर दिये जाते हैं।

लगभग ५ हज़ार पुलिस के अलावा ८०० स्वयंसेवक स्वेच्छापूर्वक कार्य कर रहे हैं। इन स्वयंसेवकों में छात्र, डाक्टर, वकील और उच्च शिक्षा प्राप्त लोग हैं। होममिनिस्टर के पुत्र भी स्वयंसेवकों में हैं। विभिन्न व्यायाम शालाओं और अन्य स्थानों के २०००० स्वयंसेवकों ने भी अपनी सेवाएं अर्पित कर दी हैं, जिनमें महिला भी हैं।

सरकार ने शराब बेचने वालों के स्टाक को मुहर लगाकर केन्द्रीय गोदामों में रखवा लिया है, क्योंकि दुकानों पर बिक्री के लिये निर्धारित मात्रा से अधिक शराब नहीं रखी जा सकती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकरण २

शराबबंदी के औद्योगिक व आर्थिक पहलू

अधिकांश मिल मालिकों ने यह रिपोर्ट दी थी कि:—

(१) मतवाले मज़दूरों को नियन्त्रण व अनुशासन में रखने की समस्या गम्भीर नहीं रही।

(२) वेतन मिलने के दिन के बाद सब मज़दूरों की काम पर हाजिरी की बहुत पुरानी कठिनता भूतकाल की बात होगई।

(३) पियक्कड़पने की हालत में दुर्घटनाएँ बहुत होती थीं। यद्यपि इसके आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं, तथापि अधिकांश का कहना है कि शराबखानों के खात्मे के साथ इसमें भी बहुत उन्नति हुई है।

(४) अब मज़दूर कुछ ज्यादा ऊँचे, ज्यादा स्थायी और मज़बूत, ज्यादा साफ़ दिमाग़वाले और ज्यादा सावधान व ज्यादा कार्यकुशल होगये हैं।

(५) ग़ैरक़ानूनी शराब के अनेक साधनों के होते हुए भी ज्यादातर मजदूर शराबख़ाने के खात्मे की बदौलत पहले से खुशहाल हैं।

(६) शराबखानों के बन्द होने के परिणामस्वरूप शराबखानों में शराब पीने की इच्छा अब बहुत-कुछ दूध, जिंजर और दूसरे हल्के पेयों की इच्छा में बदल गई है; काफी के व्यापार को भी इससे कुछ लाभ हुआ है। और आइसक्रीम और मुरब्बे का व्यापार भी कॉफी बढ़ा है।

(७) शराब पर खर्च करने का प्रलोभन न रहने के कारण—जोकि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आमोद-प्रमोद की संस्थाओं के रूप में शराबखाने हमेशा पेश करते थे—बहुत-से आदमियों के लिये यह सम्भव हो सका है कि वे मोटर या रेडियो खरीद सकें अथवा मनोविनोद के दूसरे साधनों में भी भाग ले सकें।

८. बचत के आंकड़े बताते हैं कि सेविंग बैंकों में रुपया जमा करने वालों की संख्या बहुत बढ़ गई है। साप्ताहिक या मासिक बीमे की किश्तों में भी बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है और मकान व ऋणदात्री संस्थाओं की पूँजी भी बहुत ज्यादा बढ़ गई है।

९. मज़दूर अपने घर में ज्यादा दिलचस्पी लेने लगा है; उसके रहन-सहन का स्टैंडर्ड ऊँचा होगया है। शराबख़ानों के कारण उसकी क्रयशक्ति के उपयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत होगया था।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में औद्योगिक स्थितियों की जांच के लिये ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि-मण्डल ने लिखा था कि शराबबंदी का आर्थिक प्रभाव बहुत पड़ा है। बहुत-सा रुपया मजदूर बचाकर रखने लगे हैं और काम में उनकी हाजिरी की नियमितता बढ़ गई है। नेशनल ब्यूरो आफ इकानामिक रिसर्च ने १९२७ में जो आंकड़े प्रकाशित किये थे, उनके अनुसार राष्ट्रीय सम्पत्ति में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। १९१३ के डालर को स्टैण्डर्ड मानकर (१९१३ की कीमतों के आधार पर) १९१८ के युद्ध वर्ष में अमेरिकनों की कुल राष्ट्रीय आय ३५,५०,००,००,००० डालर थी और १९२६ में ५२,९०,००,००,००० डालर, अर्थात् ४९ फीसदी ज्यादा थी। १९०९ से १९१८ तक आमदमी में जो वृद्धि हुई थी, उसकी बनिस्बत यह १७,४०,००,००,००० डालरों की वृद्धि दुगुनी से भी ज्यादा है। और यदि प्रति व्यक्ति के हिसाब से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखें, तो आमदनी की यह वृद्धि पहले से ४ गुना ज्यादा है।"

मिल-मालिकों, बीमा एजेंटों तथा दूसरे लोगों से जब व्यक्तिशः पूछा गया, कि क्या वे शराबबन्दी के हक़ में है या खिलाफ़ तो, प्रायः सभी ने यह राय दी कि शराबखानों के बन्द हो जाने का यह परिणाम हुआ है कि वेतनभोगी मज़दूर दूसरी चीज़ें खरीदने में बहुत दिलचस्पी लेने लगे हैं। एक डुलुथ कम्पनी ने यह राय ज़ाहिर की है कि शराबबन्दी सबके लिए बरदान है। इसने हमारे मजदूरों के रहन-सहन का स्टैण्डर्ड ऊँचा कर दिया है, उन्हें ज्यादा स्थिर कर दिया है और इसके कारण उन्हें व उनके परिवारों को आराम-आसायश की ऐसी-ऐसी चीजें अब मिलने लगी हैं, जिनके ले सकने की सम्भावना भी वे शराबबन्दी के अमल में आने से पहले न करते थे।

शराबखानों के खात्मे का असर और भी बहुत-सी चीजों पर पड़ा है। शराबबन्दी के समर्थकों की बीसियों बार की गई इस घोषणा के समर्थन का एक प्रमाण यह है कि लोगों पर अब किश्तों में रुपया चुकाने के लिये विश्वास किया जाने लगा है। शराबबन्दी अपने बाह्य रूप में न राजनीतिक प्रश्न है,न नैतिक और न यह समाजशास्त्रकी समस्या है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की इतनी अधिक पैदावार का मुख्य श्रेय इसी शराबबन्दी को है। इसी तरह बचत में भी बहुत वृद्धि हुई है, मोटर गाड़ियों की खपत भी बढ़ गई है। घर बनाने, घर खरीदने तथा दूसरे बहुत-से आर्थिक कारोबार, जिनके कारण संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की संसार में सबसे ऊँची स्थिति हो गई है, शराबबन्दी के परिणाम दीखते हैं। एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नई और बहुत क्रयशक्ति उन औसत अमेरिका नागरिकों से प्राप्त होती है जो इस देश के आधार हैं। यह क्रयशक्ति कुछ हद तक इसलिये भी बढ़ी है, क्योंकि अब देश में शराब खरीद-फरोख्त की वस्तु नहीं रह गई; क्योंकि शराबखाने बन्द हो गये हैं; क्योंकि औसत अमेरिकन के लिये उस कीमत या उस मेहनत के मुकाबले ये कुछ भी नहीं है, जो उसे प्राप्त करने के लिये लगानी पड़ती है; क्योंकि शराब उन खतरों के मुकाबले में भी नहीं ठहरती, जो उसे पीने पर उठाने पड़ते हैं। इसलिये व्यक्ति, उसके परिवार और साधारण व्यापार सबको उन वेतनों और बचतों का लाभ प्राप्त होता है, जो इससे पहले अनुत्पादक शराब के दूकानदार के पास चले जाते थे। शराबबन्दी से शराब का बिलकुल पीना बन्द हुआ और न बिलकुल पीना बन्द हो सकेगा। शराबबन्दी ने जो कुछ किया है, वह यह कि इसने देश और उसकी जनता को आर्थिक उत्साहन व स्थिरता में सहायता दी है। इन्हीं दोनों के कारण ही हमारा देश संसार-भर में सबसे अधिक सम्पन्न, सबसे अधिक पैदावार करने वाला और सबसे अधिक शक्तिशाली बनता है।

यदि इस सबसे अच्छे काम को कुछ उचक्कों व गैरकानूनी शराब का छिप-छिप कर व्यापार करने वाले व्यापारियों ने कानून तोड़ कर नष्ट कर दिया, तो इससे यह परिणाम नहीं निकालना चाहिये कि जब कानून पर अमल होता था और लोग उसकी इज्जत करते थे, तब भी इसके अच्छे परिणाम नहीं निकलते थे और इनका लाभ नहीं होता था। हम यह आशा कर सकते हैं कि भारतवर्ष में ऐ[illegible] उचक्के चोरों से कोई विशेष भय नहीं है।

॥ समाप्त ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

H 17

C 28 H

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

This book was taken from the library on the date last stamped. A fine of one anna will be charged for each day the book is kept overdue

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

A book borrowed must be returned within one month of its issue. It may be reissued for fifteen days, if not requisitioned by another member. Members residing outside Srinagar may return books within forty days of their issue.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE